तुनि
नग



षटऋतु काव्यसंग्रह ॥

बसन्तऋतुके कवित्त व सवैया १ ॥

कवित्त ॥ फूलेहैं रसाल नवपल्लव बिशाल बनजूही औ पलाश मल्ली आदि बहुको गनै। कूजत बिहँग पिक कोकिलादि एक सङ्ग गुंजत मलिन्द बन बीथिकानि मैं घनै। बहत समीर मन्द शीतल सुरभि धीर रहत न योग युत मुनिगनके मनै। रारे ब्रजरंग ऐसेसमै रहो सङ्ग नतु दहन अनङ्ग सिसु गोपिकानके तनै १ सुमन अनंत फूले बिपिन लसन्त पौन सौरभ बहत भौंर गुंजै रसमन्त है। सुतरु फलन्त कूक कोकिल कलन्त तजै ध्यान मुनि सन्त जहां केलिकोअगंतहै। सबै रसवन्त औ वियोगिनिको गन्त जहँ रतिही को तंत तोख सुकवि भनन्तहै। बेधे रतिकन्त पायतरुणी यकन्त अब जाहु कित कन्तऋतु भूपति बसन्तहै २ सङ्गकी सहेली रहीपूजत अकेली शिवातीर यमुनाके बीर चमक चर्हैहै। हैंतो आई भागतडरत हियरातें घरै तेरे शोच

करी मोहिं शोचित सवाई है। बंचिहै वियोगी
जानि सरदार ऐसी कराठते कलित कूक कोकिल
ढाई है। बिपिन समाजमें दराजसी अवाज होति आजु
महाराज ऋतुराज की अवाई है ३ सुखद समीर सीर
ह्वखी ह्वै चलन लागी घटिचली रैन कछु शिशिर हि-
मंतकी। फूलैलागे फूल फेरि बौरैं बन आम लागे को-
किला कुहूकैलागीं मातीमदमन्तकी। हरीचन्द काम
की दुहाईसों फिरन लागी आवैं लागी सगासगा सुधि
प्यारे कन्तकी। जानीपरै आजु बिरहीन की सिरानी
अब आयो चाहैं रातैं फेर दुःखद बसन्तकी ४ बन बन
आगिसी लगाइकै पलाशफूले सरसों गुलाब गुल्लाला
कचनारो हाय। आइगयो शिरपैंचढ़ाय मैनबाणनिज
बिरहिन दौरि दौरि प्राण न सम्हारोहाय। हरीचन्द
कोइलैं कुहूकी फेर बनबन बाजै लागयोजग फेरिकाम
को नगारो हाय। दूरप्राण प्यारो काको लीजिये स-
हारो अबआयो फेरिशिरपै बसन्त बज्रमारो हाय ५॥
सवैया॥ सखि आयो बसन्तऋतून को कन्त चहूंदिशि
फूलिरही सरसों। बर शीतलमंद सुगंध समीरसतावन
हारभयो गरसों। अब सुन्दर सांवरो नन्दकिशोर कहै
हरिचन्द गयो घरसों। परसों को बिताय दियो बर-
सों तरसों कब पांय पिया परसों ६॥ कवित्त॥ आयो
परवाना पात डार छांह तम्बू तानि कोकिलादिवान
बीर तीर पतनावैं चुनि। छड़ीदार कैलिया पहार
देति आठों याम बायूफूल सेजिया सजेजिया बिछू

तुनि। झराडालालसेमर सुगन्ध हरिकारा वर बाजत नगारा जो मलिन्दगणगावै धुनि। शब्द दराज भारि- वाकरजू पक्षिनके दक्षिणाके देशऋतुराज आज आवै सुनि ७ बिरही दुखारी कामकीन्हो अधिकारी चञ्च- रीकगण जारिदेश कियेहै देवारीसों। पेड़पत्तझारी कल कौंलि बोली भारी शुभ सौरभ पसारीछीन छायो फूलवारी सों। भनत दिवाकरजू छाकेभये कोकिल बसन्ती सारी युवती शरीरपैन्है प्यारी सों। फरैलागे बिटप बेलाके फूल फूलैलागे व्यापै लगे सबमें बसन्त बायुदारी सों ८ पुनि शरशालकु मरिन्दन लपटिकर दक्षिणासे आइ शुभलागत शरीरमें। मन्दमन्द चालसे मरालके लजात तात्त बपुह्वै पवित्रतानहाये गङ्गनीरमें। सुखद सुहावन सुहावन मुनीश मन नारी सों नवोढा गतिचले अति धीरमें। भनत दिवाकर सुधासों निशि सनी प्रात जानी क्या बहार है बसन्तके समीर में ९॥

सवैया॥ आज सुभायनहीं गई बाग बिलोकि प्रसूनकि पांतिरही पगि। ताहिसमै तहँआयेगोपाल तिन्हैं लखि औरो गयो हियरो ठगि। पै द्विजदेव न जानि परयोधौं कहांत्यहिकालपरे अँशुवा जगि। तूजोकहै सखिलोनो स्वरूप सो मों अँखियान में लोनी गई लगि १० फूलनदे अबै टेसू कदम्बन अम्बन बौरन छावन देरी। री मधुमत्त मधूकन पुंजन कुंजन शोर मचावन देरी। क्योंसहिहै सुकुमारि किशोरि अरी कलकोकिल गा- वन देरी। आवतही बनिहै घर कन्तहि बैरी बसन्तहि

आवन देरी ११ नीलबसन्त उठे अकुलाय सुने कल कोकिलकी किलकारी।भाँवरैंसीभरैंसाँवरे साँवरे होत निछावर ते सहचारी । देव दुहूं को दुहूं दुरिकै रँग है पठई अँगअंग उजारी । केसरियाखुलै नन्दकिशोर किशोरी कि केसर की रँगी सारी १२ मदमाती रसाल कि डारनपै चढ़ी आनँद सों यों बिराजतीहैं । कुल जानिकि कानि करैं न कछू मन हाथ परायहि मारती हैं । कोऊ कैसी करै डिज कहै नहिं नेको दया उर धारती हैं। अरी कौलिया कूकि करेजनकी किरचै किरचै कियेडारतीहैं१३ झौरिसे कौने लिये बनबाग ये कौनेजु आंबनकी हरिआई। कोयल काहे कराहति है बन कौने चहूं दिशि धूरि उड़ाई । कैसी नरेशबयारि बहै यह कौन धौं कौनेसों माहुरनाई । हाय न कोऊ तलाश करै ये पलाशन कौने दवारि लगाई १४ आयोबसन्त दहन्त सखीघर आये न कन्त न पाये सँदेशन । शंभु कहैं पथिकाये सबै अरु कोऊ बिदेशी रहे न बिदेशन । चन्द्रमुखी दृगते अँशुवा ढुरिआनि पड़े कुचयाही अँदेशन। मानोमयंक सरोजन में मुकताहल लैलै चढ़ावैं महेशन १५ ॥ कवित्त ॥ जब ते हमारे प्राणप्यारे हैं पधारे उत धीर नहिं धारे जात पीरहियमेंजगैं । शीतलसमीर भयोतीर कालिन्दी के तीर बीरबलबीर बिन नीर दृगते डगैं । केशरी समान जब बिरह परै हैं भान योग ज्ञान ये गयन्दयूथ तबहीं भगैं । बोली कोकिलान कोकरैं हैं प्रलङ्हल हमैं ऊधो

ये कदम्बन के फल गोली से लगें १६ औरै भांति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर औरै डौर झौरन में बौरन के ह्वै गये। कहैं पदमाकर सो औरै भांति गलियान छलिया छबीले छल औरै छबि छ्वैगये। औरै भांति बिहग समाज में अवाजह्वोत ऐसे ऋतुराज के न आज दिनह्वैगये। औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग औरै तन औरै मन औरै बन ह्वैगये १७ पात बिनकीन्हे ऐसी भांतिगणबेलिन के परत न चीन्हेजे ये लरजत लुंजहैं। कहैंपदमाकर बिसासीया बसन्तकेसो ऐसेउतपात गात गोपिनके भुंजहैं। ऊधोयह माधोसों सँदेशो कहिदीजो भले हरिसों हमारे ह्यां न फूले बन कुंज हैं। किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनकि डारनपै डोलत अँगारन के पुंजहैं १८॥ सवैया॥ बूझतुहो कहावाकी दशा भुवनेश जु बात वृथा बहिजायगी। सांची कहेपतिया-हुनहोंनहिं कांची कछू हमसों कहिजायगी। आश नहीं बचिबेकी अबै पर प्यारोजऊरहते रहिजायगी। बीस बिसेबन फूले पलाशन देखि अँगारन सों दहिजायगी १९ कोकिल कूकि कलोलकरैं कलकोइल कूजै नि-कुंजन में। कीर उदोत कपोतके गोत छके सदसोंरव गुञ्जनमें। किंशुककेतकिकुन्दजुही बिकसो भुवनेशजु पुंजन में। काहे न ऐसी समै अलितोहिं सोहातअहै रसभुंजन में २०॥ कवित्त॥ कालित कमण्डल कमल कलिकाके करि किंशुक कुसुमबर अम्बर सुहायोहै। ठौर ठौर भैंरनकी श्रेणीजप माल मौर सजे हैं रसाल

जटाजूटसों बढ़ायोहै। शिष्यन के शीतकीर कोकिल कपोतसंग पढ़ै हैं उमंगचहुं ओरशोर छायोहै। कन्त बनमाली को पठायो लालीसों लसन्त आलीरी बस-न्तधनि सन्त बनिआयोहै २१ गानकोकिलान के सु-बाँसुरीकि तानमनोसजैं बनमाल फूलजालये अनन्त हैं। सोहत समद अलि कोकनद पै झपात मुख पै प्रभात जनु लोचन लसन्त हैं। उड़त परागपट पीत फहरात सोईहियो हहरात बिरहिनिको तुरन्त हैं। आयोरी बसन्त श्यामाकन्त को बनाय बेष देखो बिलसन्त यह कैसो छबिवन्तहैं २२ ललितलता के नवपल्लव पताके सजैं बजैं कोकिलान के सुकलगानकेनिशान। ठौरठौर मौरन पै भौंरभोर झोरकरैं दौर दौर गावत नकीबन की तौरगान। फूलनकी सैन मैन सैनसीकरैहैं चैन शी-तल सुगन्धमन्द मारुतचलतबान। सजिके समाजसाज बिरही बिकल काज सहो ब्रजराजऋतुराज आज हरैं प्रान २३ जामैं पंचसुर धुनि सुखमा बिराजि रही देई सुबिनोदमैं सुबास सदागतिहै। कुन्दनकिकला चहुंओर झलामलै होति मनो उमापति की उदोत ज्योति अति है। माधव सेवै रसाल बिकसे बिशाल बेला ठौर ठौर जामैं शुकवाणी हुलसतिहै। किधौं सुखराशीहै बसन्त ऋतु दीनदयाल किधौं अबिनाशी पुरीकाशी बिलसति है २४ सबकुल यूथ मिलि बन्धु जीव सोहतहैं कसरमैं अम्बरसुखगजनबासहै। करैं अलिगान फिरैं भौंरी मुद भरी सङ्ग चहुंओरआवत गुलाबकी सुबासहै। सजैंअति

मुक्त द्युति झालरति काननमें कुन्दन की कला फैलि रही आसपासहै। मौरहैरसालरटैं शाखाद्विज दीनद्याल ह्याइके समाजधौं बसन्त को प्रकासहै २५ सोहैशुक बाणी चहुँओर मंजु कानन में षटपदी धुनिप्रात बेला बिलसन्तहैं। केतकिअशोकपरसेवत सुधीरद्विज बोलत रसाल सुमनस बिकसन्तहैं। तरुणीके देखनको नैनन नचावैं जित माधवो सुरतियुत बात बिकसन्त हैं। उपजैं बिशाल रुचिदेखतहीं दीनद्याल किधौं सन्तसभा किधौं शोभित बसन्तहैं २६ ॥ सवैया ॥ नागरसेहैं खड़ेतरु कोऊलिये कर पल्लवमें फलफूलन। पाँवड़े साजिरहेहैं कोऊ कोउ बीथिन बीच पराग दुकूलन। फूल झरैं द्विजदेवके ऊपर काननमाहँ कलिन्दजाकूलन। आगममें ऋतुराजके आज सबैबिधिखोये सबैनिजशूलन२७ कवित ॥ औरै भांति कोकिल चकोर ठौर ठौर बोलैं औरैभांति शबद पपीहनके ह्वैगये। औरै भांति पल्लव लिये हैं वृन्द वृन्द तरु औरै छबि पुंज कुंज कुंजन उनै गये। औरैभांति शीतल सुगन्ध मन्दडोलैपौन द्विजदेव देखत न ऐसेफलह्वैगये। औरैरीति औरैरङ्ग औरै साज औरै संग औरै बन औरै छन औरै मन ह्वैगये २८ ॥ सवैया ॥ देखतही बन फूले पलाश बिलोकतही कछु भौंर कि भीरन। बावरीसी मति मेरीभईलखि बावरी कंजखिले घटे नीरन। भाजिगयो कढि ज्ञानहियेते न जानि परयो कब छोड़िकेधीरन। कन्धन कोनके लोचन होयँ पराग सने हरसात समीरन २९ ॥ कवित ॥

फेरि वैसे सुरभि समीर सरसान लागे फेरि वैसे बेलि मधुभारन उनैगई । फेरि वैसे चहँकि चकोर चहूं ओर बोले फेरि वैसे कोलिया कि कूकन चहूंभई । द्विजदेव फेरि वैसे गुनी भौंर भीरैं फेरि वैसेही समय आयो आनँद सुधामई । फेरि वैसे अंगन उमंग अधिकाने फेरि फेरि वैसे कछूक मति मेरी भोरी ह्वै गई ३० फेरि वैसे बेलिमन्द डोलन चहूंघा लगीं फेरि वैसे फूलनपै मन्दझरि लागीहौन । फेरि वैसी भूमिभई बासित सुवासन सों फेरिवैसे पूरितपरागन भयेहैं पौन । द्विज-देव फेरिवैसे सोहे तरु पुंज कुञ्जकुञ्जनमें फेरिवैसे मोर ह्वै गयेहैं मौन । फेरि वैसे पलटि गईहैं गृहवापिकाऊ फेरिवैसे पलटि गये हैं चारों ओर भौन ३१ फेरिबन बौरेमन बौरेसे करनलागे फेरिमन्द सुरभि समीरहवै कितन्तगो । फेरिधीर नाशन पलाशनमें लागी आगि बहुरि बिरहिजूह डरपि इकन्त गो । द्विजदेव देखि इन भाइन धराते फेरि जानिये कहांधौं भाजि सोहि-मन्त अन्तगो । फेरिउर अन्तर ते डगरि गयोई ज्ञान फेरि बन बागनमें बगरि बसन्तगो ३२ ॥ सवैया ॥ फूले निकुंजघने द्रुम मंजुल भृङ्ग लतानन तान कहे । अतिशी-तल मन्द सुगन्धघने चहुँ तीक्षणातीर समीरबहे । धुनि कोकिल कीर कपोतनके भरकानन कानन जातसहे । उरशालत शूलसमूह प्रताप बसन्तमें कन्तबसन्तरहे ३३ नित हेरत बाट थकीं अँखियां दुहूं पावक से अँशुवान बहे । दिनके गिनते घिस छोर गये जियरा अब धीर

अधीरगहे। कहियोइतनोई सँदेशो भटू बिछुरेभलकैतब काहकहे। अब पाहन सों हियरोके प्रताप बसन्त में कन्त बसन्तरहे ३४ ॥ कवित्त ॥ डोलेहैं तमालपत्र पांवड़े अवाई सुनि गावतहैं गुणीजनइतउतछाहके। फूलिउठे कुन्दये मलिंद वेग चाय उठे कूकिउठीं कोकिला कलापोचित्तचाहके। प्यारेआमबौरिउठे पक्षीगण दौरि उठे चांदनी चँदोवा जबलागे नरनाहके। गिलमैं गुलाबनकि गद्दीचारु चम्पनकि बाग बीच डेरे हैं बसन्त बादशाहके ३५ तालनपै तालपै तमालनपै आलन पै लालमाल बालपै रसाल सरसोपरै। पढ़ै कबिरामचंद्र कुन्दकन्द बंदनपै चन्दनपै चन्दपै मलिन्द दरसो परै। केकी केलकेसर करंज केतकी पै कंज कारकूल कोकिल कदम्ब परसोपरै। रंगरंग रागनपै संगही परागन पै वृन्दावन बागन बसन्त बरसोपरै ३६ सुमन समुद्रहू ते शीशमोर फन्दहूते चारुमुख चन्दते अनन्द दरसो परै। पीतपट बसनहूते कुंदसे दसनहू ते मन्द बिहसन हूते रससरसोपरै। मन्द रचितानहूते बंशीसुर गानहूते सैनपैन बानते पराग परसो परै । भूषण विशालहूते लाल गुंजमालहूते पीर बनमालते बसन्त बरसोपरै ३७ पीरीतन सारीशीशपरते उतारिडारी जबते बसन्तऋतु आगम जनाईहै। पीरेपीरे भूषण करनलागे पीर तन बिना पीव प्यारे पियराई उरछाई है। ऋतु पियराई सभा इंद्र मन भाई सखि हमैं पियराई दुखदाई होन आईहै। जोई पियराई तनहूक होत मेरी आली सोई

सौति मालिन पियर फूल लाई है ३८ आयो है बसंत बौरे बागन बसीहै धूम बेलि पगपुंज अरु पीरो दरशानहैं। गुंजिरहे भौंर ठौर ठौर फूले फूलनमें फवत समीरमें सुगन्ध सरसानहैं। नन्दराम देखौतो पपीहरा पुकारतहै पीउपीउ प्यारीके पियूष अधरानहैं। कैसे लाल चलिबे कि चरचा चलावतहौ ऐसे समै ऐसे बैन बानके समानहैं ३९ लोकन सवाँरो तौ सवाँरो ना बिगारोकछु लोकन सवाँरि नरनारिनसवाँरतो। कीन्हो नरनारि तौन प्रेमको प्रचारदेतो प्रेमको प्रचारो तौन मैनको प्रचारतो। मैनको प्रचारो तो प्रचारोनासँयोग देतो कीन्हो जो सँयोग तो बियोगना बिचारतो। नंदराम कीन्हो जो बियोग बिधना तो भूलि बौरेबन बागन बसन्तना बगारतो ४० आसनमें आसन अकाशमें अवासनमें आलिनमें आलिनकि आलिनमें दौरिगो। कहैं नन्दराम त्यों बिहंगनमें बागनमें वनमें बिनोदनमें बौरनमेंबौरिगो। क्षितिमें छबीलनमें क्षपामें क्षपाकर में छत्तनमें छातिनमें छैकि छलछोरिगो। देखुरीबसंत में बतावतहै कन्त में नसारी सरसन्त में अँगारन बिथोरिगो ४१ फेरि वैसे कुंजनमें गुंजरन लागेभौंर फेरि वैसे कौलिया कुबोलनररैलगी। फेरिवैसे पातनपै पूरिगो परागपीत फेरित्यों पलाशनमें आगिसी बरैलगी। फेरि वैसे पपिहा पुकारैं लगे नन्दराम फेरि वैसे धाम धाम सौरभ भरैलगी। फेरिवैसे उधमी बसन्त बिशबासी आयो फेरि वैसे डारन में डाकसी परैलगी ४२

आयो री बसंत कूकि कोलिया पुकारै लगीं हमसी गरीबिनी को गात गारि डारैंगी। मन्द मन्द मारुत सुगन्ध सरसान लगीं ज्वाल को जगाइके जहर जारि डारैंगी। नंदराम बागन में फूलैलगीं बेली बन करिके अधीरिनी सुधीर टारि डारैंगी। येरीतआवीर तौदेखादे मोहिं मोहन को आखिर कदम्बन की डारैं मारि डारैंगी ४३ ज़ालिम जुलुम दार जाहिर जहान जौन डगर डगर बिष बगर बगारिगो। कहैं नन्दराम ब्रजगाम कोगरीबिनिन रावरे की चेरिन पै बेरिनको मारिगो। ऊधोजी हवालकहिदीजो नंदलालजूसों गोकुलकीगैल गैल गजबगुजारिगो। फूलैंनापलाश येपलाशके बसंत बाज काढ़िकै करेजा डारडारनपै डारिगो ४४॥ सवैया॥ लागे अनारन पांडर डारन देखत देव महा डर माचैं। मानुरी झौरन अम्बके बौरन भौंरनके गन मन्मथसोंबांचैं। लागिउठैं बिरहागिनकी कचनारन बीच अनारन आंचैं। सांचहु चारबिचार कहैं पिकी नाचेबनैंगीबसंत किपांचैं ४५ ॥ कबित्त॥ देशबिन भूपति दिनेशबिनपंकज फणीशबिनमणिओर शशिबिन यामिनी। दीपबिनगेह औसुगेह बिन सम्पति औदेह बिन देहघनमेह बिनदामिनी। कबितासुछंदबिन मालती मलिंदबिन सर अरबिन्दबिन होतछबि छामिनी। दास भगवंत बिन संत अतिव्याकुल बसंतबिनलतिका सुकंतबिनकामिनी४६ कूकि उठीं कोकिलान गुंजि उठी भौंर भीर डोलि उठे सौरभ समीर सरसावने। फूलि उठीं लतिकाहू लौंगन

किलोनी लोनी फूलि उठीं डारियां कदम्ब सुख पावने । चहँकि चकोर उठे कीरकरि शोरउठे टेरिउठीं सारिका बिनोद उपजावने । चटकि गुलावउठे लटकि सरोज पुंज खटकि मराल ऋतुराज सुनि आवने ४७

सवैया ॥ पीयविदेश गये जबते तबते सखिकेतो उपाय करंती । चांदनी औरन कोरकरै ससि मन्दिर भाषै कथा गुणावन्ती । नीर तड़ागनको निकरायकै हैबिन कीरति रूपछिपावन्ती । डौंडीफिरी ब्रजमें चहुंघा जनि कोई रँगै अब चीर बसन्ती ४८ शोभितहै सखिमन्दिर में बहुधा चित्र शुभ्रतहां दरशांती । शोधिसनी पर्यंक पै प्यारी लसै कुच कंचुकी आप धरंती । ताहीसमय परमेश भनै पति आयो लखे बिहँसी गुणावन्ती । व्यंग्य सन्यो तिनबैनठन्यो घनश्याम बन्यो तुमबाग़ बसंती४९ जोहित तोहिं पठायोंहुती कहतीनहिं आली बड़ीगुणावन्ती । नैन लजौहे सोढीलेपरे बँद कंचुकी आननकी दरशान्ती । भाषै प्रमेश तिहारी खुलीं अलकैं चहुंघा सुचियां लटकन्ती । आप गंभीर तु हे मतिधीर दियो किन बीर सुचीर बसन्ती ५० रैन कि चैन बितायो कहूं किबिना गुनमाल लसै यहपंती । नींदभरे दरशात दुऔ दृग देखत राजिरही असलान्ती । जावक अंजन रेखदियो बिश्वनाथ कहै बैतिया गुणावन्ती । सांची बताओ कृपाओनमोसन पायोकहां यहसारी बसंती५१

कबित्त ॥ योगलागे चलन वियोगसों वियोग लागे लोग लागे सेवक संयोग सुख साजते । गन्धलागेसौरभी द्वि-

रेफ होन अंधलागे तरुके प्रबंधलागे फूलनकी छाजते। रौनलागे बिहग सुपौन मैान गौनलागे होनलागे नाच राग रंगऊ समाजतें। संतलागे कांपन अनंत काम.तन्त लागे अंतलागे शिसिर बसंत लाग आजते ५२ बरन २ तरु फूले उपवन बन सोई चतुरंग संगदल सजियतु है। बंदीजिमि बोलत बिरदबीर कोकिलहै गुंजत मधुप गान गुण गहियतुहै। आवै आसपास पुहुपनकीसुबास सोई सौंधेके सुगंधमांझ सनेरहियतुहै। शोभाकोसमाज सेनापति सुखसाज आज आवत बसंत ऋतुराज कहि· यतुहै५३ मलैगिरिमारुतके मिसि बिरहाकुलनि दिशि दिशि व्यालनको विषबगरायोरी। तापर किशोरतैसो पंचम न बलराग कोककी कलान भीनो कोकिलन गायोरी। कोनसुनि मोचैमान लोचैकोन मिलनको शोचैकोन श्यासदेखि नेहसरसायोरी। आमनके मौर लागे अंकुरन मौरलागे भौंरलागे भ्रमन बसंत अब आ- योरी ५४ अवनिते अंबरते द्रुमनि दिगंबरते अपर अडं बरते सखि सरसोपरैं। कोकिलकी कूकनते हियनकी हूकनते अतन भभूकनते तनतरसोपरैं। कहत किशोर कंज पुंजनते कुंजनते मंजुअलि गुंजनते देखुदरसो परै। बसनते बासनते सुमनसुवासनते बेहरतेबनते बसंतबरसो परै ५५ कोकिला कलापी कूजें यमुनाके नीरतीरबीर ऋतुराजको समाज दरस्योपरैं। भनत किशोर जोरअ- वनि कदंबनिते मंजुमंजरीनते सुगंध सरस्योपरैं। काम व्यथामेटनको सुखद समेटनको भेटनको पीतमको।प्राण

तरस्योपरें। अवनिते अंबरते द्रुमनिदिगम्बरते बेंहरते बनते बसंत बरस्योपरें ५६ कूलनमें केलिमें कछारनमें कुंजनमें क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है। कहै पदमाकर परागनमें पौनहूमें पातनमें पिकन पलाशन पगंतहै। द्वारमें दिशानमें दुनीमें देशादेशनमें देख्यो दीप दीपनमें दीपति दिगंत है। बीथिनमें ब्रजमें नबेलिन में बेलिनमें बननमें बागनमें बगर्यो बसंतहै ५७ तरुपत भ्झारनमें किशलित डारनमें रमित पहारनमें द्युतिमें दिगंत है। त्रिबिध समीरनमें यमुनाके तीरनमें उदित अबीरन में भ्झलाभ्झलकंतहै। छायरह्योगुंजनमें अलिपुंज कुञ्जनमें गानमें गोपाल ऐसो रूपदरशंतहै। फूलमें दुकूलमें तडागनमें बागनमें डगरमें बगरमें बगरो बसंतहै ५८ देशा में दिशानमें लतान द्रुमबेलिनमें कुञ्जनमें कञ्जन में रङ्ग दरसानोहै। पल्लवमें पौनमें परागहूमें किशलयमें कुसुम कलीन अलिगुंज सरसानोहै। हारनमें क्यारनमें फूल कचनारन में भ्झारन पहारनमें मोद सरसानोहै। बिरिञ्छ अनन्तनमें लतिकानतन्तन में दशादिशा अन्तन बसन्त बरसानोहै ५९ अवनि अकाश अंबुअनिल अनलआभा औरै भांतिभईजो मनोज महिमन्त की। करजनिमान या दिशान ह्वै गईहै मन्द मति ह्वै गईहै सब जान जग जंतकी। कहत किशोर जोर जरनकुयोगिनको भोगिन को भावनि वियोगिन के अन्तकी। लहलहो उमगते लखि लसिरही तैसी लहलही लौंदन में लहरि बसंत की ६० आयो ऋतुराज फूले सुमन समाजभयो अमल

अकाश बहै पवन हरैंहरैं। लपटे लतानसों तमालनके जालमौंरे अमित रसालते बिशाल मनकों हरैं। कहत किशोर किल कोकिला चकोर नहीं गनैं सांझ भोर चारोंओर शोरको करैं। आनँद मगन कैसी लगन लगाये देव मंदिरन कुञ्जकुञ्ज अलिपुञ्ज गुञ्जरैं ६१ मेरे मेरे मौर तरुमञ्जरीन मौलि आली गंध गुणमयी मंद मारुत झकोरेलेत। नवल किशोरी लोनीकंपयुतलतिकान लपटि लपटि रस आनँद अथोरेलेत। गरलकि गाँठसे गठेसे गठे शिरकटे फिरत अमान मानगढ़ हठि छोरेलेत। कामकैसे चारऋतुराजकैसेसहचर चाँचरि करत चंचरीक चितचोरेलेत ६२ मंजुमलयाचलके पौन के प्रसंगनते लाल लाख पल्लव लतान लहकैलगे। फूलै लगे कमल गुलाब आबवारेघन शंकरपरागसू अकाश अहकैलगे। बोलैलगीं कोकिल भनन्त भौंर डोलैलगे चोपसों अमोलै मकरंद चहकैलगे। नेकौना अटक चढ्यो कामको कटक चारु चारोंओर चटक सुगन्ध महकैलगे ६३ गौनहदहोन लागे सुखद सुभौनलागे पौन लागे बिषद बियोगिन के हियरान। सुभग सवादिले सुभोजन लगनलागे जगन मनोजलागे योगिन केजियरान। कहतगुलाब बनफूलनपलाश लागेसकल बिलासन को समयो सुनियरान। दिन अधिकान लागे ऋतुपतियान लागे भान लागे तपन सुपान लागे पियरान ६४ मलय गुलाबीहाथ सुमन पियालेआले चटकगुलाब चाखचाखत बिचारोसो। कहै हरिकेश

मोद चारोंओर छायो जोर मधुर अलापैं राग ताल कूकभारोसो। मुनिमन बसन लथोरे नेहडोरे बलि हे-रिझकझोरे करै कोरेवियप्यारोसो। सुरभी कलार कुंज सदन सुछाकयो बाँको मन्दमन्द आवत मरुतमत वारोसो ६५ बागनमें चारु चटकाहट गुलाबनकिताल देततालिया तुलनतुकतन्तकी। गुंजत मलिंदवृन्द तान सी उपजपुंज कलरवगान कोकिलान किलकन्तकी। गोकुल अनेक फूल फूलेहैं रंगेदुकूल झूमैंआमबौरहाव भाव रसवन्तकी। लहरैं तरुन तरु छहरैं सुगन्ध मन्द नाचतनटीसी आवै बेहरि बसन्तकी ६६ मलयजगिरि तरु कोघातेकढीहै चढ़ी मंजु मकरन्द पुंज पानिपअ-पारसी। अलि बियबूड़ी बलिकहति कहाहै जापै सौरभ की लहरि धरीहै खरधारसी। कहत किशोर चारों ओर न बियमवेय प्रबल प्रचण्ड पेंयि झरपन झारसी। रहत न रोंकी बहैचाहति बियोगिनपै बे-हरिबसन्तकी तिरीछी तरवारिसी ६७ सुरहीके भार सूधे शबद सुकीरन के मन्दिरन त्यागिकरैं अनत कहूं न गौन। द्विजदेव त्योहीं मधु भारन अपारन सों देखु झुकि झुमि रहे मोगरेमरुवदौन। खोलि इन नैननि निहारोंतोनिहारौं कहा सुखमा अभूत आयरही प्रति भौन भौन। चाँदनी के भारन देखात उनयो सो चन्द गन्धहीके भारनबहत मन्दमन्दपौन ६८ द्रुमडार पलना बिछौना नवपल्लवके कुसुम झँगूला तेई तन सुखसारी दै। पवन झुलावैं केकीकीर बतरावैं मिलि कोकिल

हिलक झुलरावैं करतारीदै। झरत परागते उतारयो करैंराईलोन कुन्दकली नायिकालतान पुचकारीदै। मदन महीपजू को बालक बसन्त ताहि प्रातही जगावत गुलाब चुटकारीदै ६९ मल्यो उर आनँद अपार मैनसोवताहि पायसुधि सौरभसमीरन मिलनकी। नेह के झकोरन हिलाय उर दीन्हो सखि सुखमा लवङ्ग लतिकान के हिलनकी। स्वपन भयोधौं कैधौं साँचो करतार ईस समुझत रीति लखि अङ्ग शिथिलनकी। खिलिगयेलोचन हमारेएकबारहुनि आहट गुलाबनके आँखिल खिलनकी ७० चहँकि चकोर उठे शोरकरि भौंर उठे बोलि ठौरठौर उठे कोकिल सुहावने। खिलि उठीं एकैबार कलिका अपारहिलि हिलि उठे मारुत सुगन्ध सरसावने। पलक न लागी अनुरागी इन नैनन पै पलटिगये धौं कबै तरु मन भावने। उमगि अनन्द अँसुवान लौं चहूँघा लगे फूलि फूलि सुमन मलिन्द बरसावने ७१ हीरेहीरे डोलतीं सुगंधसनी डारनते औरै औरै फूलनपै दुगुन फबीहै फाब। चौंथते चकोरनसों भूलेभये भौंरनसों चारोंओर चम्पनपै चौगुनी चढ़ीहै आब। द्विज देवकीसों द्युति देखत भुलानो चित्त दशगुनो दीपति सों गहब गुल्छेगुलाब। सौगुनेसमीरहै सहसगुने तीरभये लाखगुनो चांदनी करोरिगुनो माहताब ७२ गुंजरनलागीं भौंरभीरकेलि कुञ्जनमें क्वैलिया के मुखते कुहूकनि कढ़ैलगी। द्विजदेव तैसीकछूगहब गुलाबनते चहँकि चहूँघा चटकाहट बढ़ैलगी। लागेसर-

सावन मनोजनिज ओजरति बिरही सतावन की बतियाँ गढ़ैलगी । होनलागी प्रीति रीति बहुरि नईसी नवनेह उनईसी मतिमोदसों मढ़ैलगी ७३ पाँखुरीलै साजी सेज सेवतीकी बेलिन चमेलिनहूँ सरसबितान छबिछाईहै । फैल्यो चहूँ ओरन गुलाबनको गंधधूर धुंधुरित सौरभी समीर सुखदाई है । चारौं ओर कोकिल चकोर मोर शोरनसौं ओर क्षिति छोरन अनंद अधिकाईहै । आज ऋतुराजके समागमके काजहोत धामधाम बेलिन के आनँद बधाईहै ७४ गुंजरनलागे भौंर ठौर ठौर कुञ्जनमें लाग्यो बेलि पुंजन दवासो कामज्वरको । बोलन लगेहैं पिक चातक चकोरमोर बँधिगयो सरस सनाको एक सुरको । काम बनबानिक बिलोकि इहि भाँति दीह दुरिदुरिजात दुख कौनके न उरको । बंद भयो चाहत सुरेशको समाज आज मंदभयो चाहत अनंद सुरपुर को ७५ कुंजलागे लसन प्रसन बिकसन लागे रसन सुगन्ध मकरंद की झरीन के । भौंरन के पुञ्ज मंजु गुञ्जरन लागे बन जालमलागे धरन रसाल मञ्जरीन के । छाई छबि शेषर वसन्त की अवाई ब्रज लागो मोद बढ़न बिनोद की भरीनके । रंगलागेचढ़न उमंगऊबढ़नलागे संगलागे कढ़न सुहाये सुंदरीनके ७६ गांवनो धमारिको सुलागत सुखद महा धावनो सुमारुत को आनँद अनंत को । चावनो बढ़ावनो भो आलिन को गान धुनि हिय हुलसावनो भो कोकिल भनंतको । मरिगादेव भनतकलेश को परावनो भो अङ्ग उमगावनो भो देखे पदकन्तको ।

छावनो गुलाल के सुहावनो लगत आली भावनो लगत मोहिं आवनो बसन्त को ७७ बौर मौर किंशुक सुकुङ्कुन कलित सौर भूषरा सुफूलके परागपट भायो है। ठाकुर पताके पत्तालाल कञ्ज सिंहासन कुञ्ज भेद पालकी गयंदरथ छायोहै। पौनहै सुदौर बने बिरिछ बराती तौर भौंर चोपकादि बोल बाजने बनायो है। जोहनसे मोहन बहारबनरीहै संग सोहन बसन्त बँदरा सो बनिआयोहै ७८ पीरोफूल चम्पक को शोभियत कर्नफूल तैसोहि दुकूल अतिसरस सुहायो है। लहँगा है पीरो कुचकंचुकी सुहात पीरी पीरिहीशरीरमानो केसरि लगायो है। मोतिनकीमाल गर सोहै बनमाल पीरी पीरोपोखराज नगजटित जरायोहै। कञ्चन की भूमि तामें धरै पग झूमिझूमि देखो ब्रजचन्दजू बसन्त बनिआयोहै ७९ नैन अरबिन्द मकरन्द रस भरे सोहैं भूषरा बिबिध फूल बन छबिछाईहै। कोकिल बचन बरअधर सुपल्लव से कुन्दकली दन्त द्युतिदीपति सुहाईहै। चम्पक सुमन गात सौरभ हँसन बात फौज भौंर भीर सङ्ग सखी समुदाईहै। प्यारे ब्रजराजजूसों उमगि अनङ्ग प्यारी खेलन बसन्त को बसन्त बनिआईहै८० सरस सुधारी राजमन्दिर में फुलवारी भौंर करैं शोर गान कोकिल बिराबके। सेनापति सुखद समीरहै सुगन्ध मन्द हरत सुरत श्रमशीकर सुभावके। प्यारो अनकूल कहूं करत करनफूल कहूं शीशफूल पांवड़ेऊ मृदुपावके। चैतमें बिभात साथप्यारी अलसात लाल

ज्ञात मुसुकात फूल चुनत गुलाबके ८१ रङ्ग रङ्ग फूली बेलि बिटप अनेक सङ्ग देवकी नँदन कहै शोभायों अनन्तकी । त्रिविध समीर डोलैं बोलैं पिक प्यारे बोल पुञ्ज अलि गुञ्ज गति मोहै मैन मन्तकी । सखिन समेत साजे जेवर जराऊ सबै बसन बसन्ती शोभा भारी प्यारी कन्तकी । वेशबङ्गलामें वेश सुनत बसन्त राग बागवन वनके बिलोकत बसन्तकी ८२ बिर्याह बगास्योचहै बात मलयाचलकी गिली उगिलीहै वरब्यालन के जालकी । बाड़वको सङ्गी बिधुभयो है कुढङ्गी याते क्यों न करै चहूंओर चांदनी जवाल की । कहै शिवकवि फूले कुटिल पलाशकूर जानै कहा बात काहू दीन प्रतिपालकी । प्यारी बिन देखिये बसन्त में अचम्भो एक शालतहिये है मृदु मञ्जरी रसालकी ८३ फूलैंगे अनार कचनार नहसुतआम फूलैंगे सिरिस औ पनसफूल झूलैंगो । फूलैंगी सुपांड़र औ मालती अमिलतास सेमर पलाश फूलि आगिरूप तूलैंगो । फूलैंगे कनैर माधवी चमेली रघुनाथ फूलैंगे गुलाब जिन्हैं देखि चेत भूलैंगो ।बिरहको बिरवालगायो जौनकन्त सखी आवत बसन्त कहो वहो अब फूलैंगो ८४ भूले भूले भौंरभाँवरैं भरैंगे चहूं फूलि फूलि किंशुकजकेसे रहिजायहैं । द्विजदेवकी सों वह कूजनि बिसारि कूर कोकिल कलङ्की ठौरठौर पछितायहैं । आवत बसन्त केन ऐहैं जोपै श्याम तोपै बावरी बलाय सों हमारेहू उपायहैं । पीहैं पहिलेहीते हलाहल मँगाय या कला-

निधिकी एकोकला चलन न पायहैं ८५ बिकसी बसन्तिका सुगन्ध भरी शिवकवि औरैढङ्ग भये वन कुञ्ज की थलीनके । कोकिल के कल कल कल नहिं देत पल चारोंओरशोर सखि सुनिये अलीनके । ऐसीसमै मानप्रानपतिसों न कीजियेरी मेटिबेको मान माननीकी अवलीनके । देखो रतिराज काज ऋतुराज कारीगर गुरुजबनाये हैं गुलाब की कलीन के ८६ कोकिलन खोजिन को सङ्गलै अनेकफिरैं चारोंओर प्यारी बिरही जनके खोजको । यातेहैं। कहति चलुप्यारे सुखदानपास तजिकै अयान दूरकैरीमान सौजको । महादेव भनत रसालन के बौरनके भौंरन ये सोहत धरे हैं महाओज को । दायक ब्यथारी ऋतुनायक लिये हैं बर घायक परमदीवे शायक मनोजको ८७ बोलै लगीं कोयलैं औ कोकिला कलोलैलगीं डोलि डोलि सुखद समीर लाग्यो परसै । फूले द्रुम पुञ्जन पै गुञ्जन मधुपलागे मंजुफूल वृन्दलागे मकरन्द बरसै । शेखर धमारिन की धूमसी मचन लागी मैन लाग्यो नचन नवेली नेहसरसैं । कन्त बिन कैसे अन्तधीरज धरैंगी आली मानगढ़ अन्तक बसन्तलागोदरसै ८८तारे जहाँ सुभट नगारे पिकनादतहाँ पैदलचकोर कोरबाँधे बंद वेशकी । गुञ्जरत भौंर पुञ्ज कुञ्जरत मोर जहाँ पौन झकझोर घोर घमक हमेशकी । भनत कबीन्द्रसरफौज है बसन्तआली मिलेतन्त कन्तसो मनोजमान वेशकी । मानवारीगढ़ी पै गुमानढाइबेको वढ़ी चढ़ीहै सवारी

या निशाकर नरेशकी ८९ मदमतवारे भारे भौंरगाज गुञ्जरत मुनिजन देखि गीतगावत उमाहके। कोकिल नकीब बोल करत कलोल आगे पौनहरकारे आली छूटे चित्तचाहके। मोहन सुकविजीति शिशिर तगीर कीन्हे वशकरि लीन्हे देशरहेना निबाहके। यहजिय ज्ञान मान करना गुमान आली डेरापरे बागन बसन्त बादशाहके ९० बोलि कै मलिन्दछन्द करखा सुनावैं शोर दुन्दुभी धुकार बोलैं कोकिला अगाहके। बन्दी-जन बिरद पपीहा बोलैं बार बार खोलैं खुशबोई तरु सुमन अबाहके। चटकैं गुलाब चहुंओर ते चटाचटके मानो जंगजीति बाढ़िदागत सिपाहके। परीहै पुकार बिरहीनिन के द्वारद्वार डेरेपरे बागन बसन्त बादशाह के ९१ शूरसहकार शीशबौरनके तोरकरे मोरन की बागी बेशबाजे रतिनाह की। परिभृत बन्दीजन बेहद बिरदबोलैं झंझापौन ढाढ़ीलखि बाढ़ीपोर दाहकी। कहै प्रहलाद कवि किंशुक त्रिशूल फूल शूलउपजावैं कहागति है निबाहकी। बिरही बचैंगेकैसे चाहकरि अन्तहेत चढ़ी फौज प्रबल बसन्त बादशाहकी ९२ कूकि कूकि कोकिल कठिन आंच फूंकेलगे दरपभ-भकेलगे दमकन दाहके। डोलि डोलि त्रिबिध समीर बीर तीखे तीर भोरेलगे साहस सिखाये नेह नाहके। कविसरदार लागे कढ़न बिसासी बौर तोर लागे च-ढ़न चहूंघा चितचाहके। रोज रोज बढ़न सरोजन के शोशभौंर ओजलागे पढ़न मनोज बादशाहके ९३

आयो ऋतुराज महाराज महिमण्डलमें तेहिकी दपट आगे शिशिर हिमन्त को। दुन्दुभी धुकार डफतालहू को भुनकार मेरेजान घंटाहै मदन मय मन्तको। कवि हरिजन कहै प्यारी परबीन सुनो याको तौ बचाव है मिलन एक कन्त को। पूरण प्रताप दिन प्रभुता बढ़त आवै कोकिला पढ़त आवै बिरद बसन्तको ९४ बल्लीको वितान मल्लीदल को बिछौना मञ्जु महलनि-कुञ्जहै प्रमोद बन राजको। भारीदरबार भस्यो भौंरन को भीर बैठ्यो मदन दिवान इतमाम कामकाज को। पण्डित प्रवीण तजि मानती अमानगढ़ हाजिर हुजूर धुनिकोकिल अवाजको। चोपदार चातक बिरदवृढ़ि बोलैं दर दौलत दराज महराज ऋतुराजको ९५ लसत कुटजबन चम्पक पलाश बन फूलीं सबशाखा जेहरति जनचित्तहैं। श्वेत पीतलाल फूल जालहैं बिशाल तहाँ आछे अलि अछर जे काजरके मित्तहैं। सेनापति मा-धव महीना भरि नेमकरि बैठे डिज कोकिल करत घोषनित्तहैं। कागदरँगीनमें प्रवीनह्वै बसन्तलिखेमानो कामचक्रवै के विक्रम कबित्त हैं ९६ फूल फरमान छाप छपद दुहाई बास नूतन गजसाज टेसू तम्बूदै प-रोरीहै। केकी कारकून पिकबानी चिठिआई जमा बिरह बढ़ाई छबि रैयत मरोरी है। शीतल बयारि बाद मापिरूप लीनेहैरी उपज हमारे हरि ध्यान जो धरोरीहै। आयोहै बसन्त ब्रजलायो है लिखाय शेष जोन्हको जलेबदार कामको करोरीहै ९७ बैठ्यो वन

बीथिन बनाय दरबार नवपल्लव गिलिम औ गुलाबन की गद्दीहै। कीन्हे कीर कोकिल नवीन नवसिंदापात्त भारिदैमिसिल दफतर कुलरद्दीहै। बिरह पुरापै निज अमल लिखाय लायो हरे हरे चातुरी सों चाँपत चौहद्दीहै। कीन्हे मतलन्त निज सन्त औ असन्तन पै काम क्षितिकन्तको बसन्त मुतसद्दी है ९८ माघसुदी पञ्चमी के द्यौस जे अबालखेलैं लाल भये धारिकै गुलाल बरबेशको। कहैंकमनीयकबि जोरिहकै जुगुति ऐसी मशादेव बिमल बिलोकि बुधिदेश को। आगि में अधम भुंजैं तिनकोतेहायभनि कीबेफिरियाद महा पायकै कलेशको। प्रबल पलाशगनै अमित असन्त जानि खोजि रहे बिरही बसन्त बसुधेशको ९९ बौरैंगे रसाल बनबागन बिशाल सुनि कोयल कुहुकि दिन रैनि क्यों अतीतैंगो। ह्वै हैं जो प्रफुल्ल मल्ली मालती मतल्ली बल्ली अवली अलीन काकलीन कल गीतैंगो। पण्डित प्रवीण बिनपीतमबहैंगो पौन कौन रतिरङ्गमें अनङ्ग जङ्गजीतैंगो। बीतिगयो कैस्यो करि शिशिर हेमन्त आली कन्त बिनकैसे या बसन्तऋतु बीतैंगो१००घन नव बीथिन ते घर घर घेरिरहे लाल पीरे लागत न जानि परैं कारेसे। गावत समाज करे आवत न बाज राजकरो ये निलज छकेछाकमतवारेसे। गोकुल बसन्तमें बियोगिनके जारिबेको होरीसी हिये में हरषित निरधारेसे। भीजे मकरन्द सो पराग लपटाने देखो मधुकरडोलत फिरत फगुहारेसे १ मधुकर

मात बनबेलिन के जाल पर कोकिल रसाल पर कुहुक असन्द की। मन्द पौन शीतल सुवास भई बागन बिलास मई कालिदास रास मकरन्दकी। देखिये सयान बैशाख में पयान करैं कान्ह को दयान होत गोपिनकेद्वन्दकी। कैसे देखिजोहैं चढ़िचाँदनी महल पर सुधाकीचहल बसुधाकी चारु चन्दकी २ आवति चली है यह बिषम बयारि देखु दबे दबे पायँन किवाँरनिलरजिदे। कैलिया कलंकिनिको दैरी समुझाय मधुमासी मधुपालिन कुचालिन तरजि दे। आज ब्रजरानी के बियोग को दिवस तातें हरे हरे कीर बकवादिनहरजिदे। पीपी कै पुकारिबे को खोलैंज्यों नजीहन पपीहनके जीहन त्यों बावरी बरजिदे ३ फूल लाई फललाई नीके नीके दललाई बौरलाई बनितासु आइधन गावैंना। हरलाल दोऊ करजोर कहैं तोसे बीर पीर औरहूकी जानि हियो तरसावैंना। नेहसरसावैंतू न रंगबरसावैं मोसों पंचशर पावककी चाँचर सचावैंना॥ चोवाचारुचन्दन अतरदरशावैं जनि कंत बिनसालिनि बसन्त मोहिं भावैंना ४ घसोघसो चंदन उसीरसीर नीरे धरो नीरलावो शीतल समीरलागैंगरमैं। घोरो घनसाररी गुलाबजल धारन सों लावोदल नीके नवनीके नये नरमैं। देउरी किवाँरैं कोऊ निकरो न डारैं सुनो आवत बसंतयों पुकारैं घर घर मैं। भूलसी गईहैं सुधि देखिफूली धूरिधारा हूलसीमचीहै बिरहीन के नगर में ५ मलय समीर पोरकारिले अ-

धीरमोहिं नेसुक सुसीरनीरधीर न उधारिले । कहै हरिकेशचन्दभ्फारिले घरीकतूहूं साँचो बिषकंद चारुचांदनी पसारिले । अबहीं मिलत मोहिं नन्द के दुलारे प्यारे तौलौं तू उतार कारीकोकिलकहारिले । गारिले गरब गरबीले तू अनंगकिन मेरे इनअंगन अनंगबान भ्फारिले ६ साँभ्फहीसों दरपरदान देहीं दुरिरही एक जियशंकाया कलानिधि कसाईकी । कन्तकीकहानी सुनि श्रवण सिहानीरैनि रंचकबिहानी याबसन्तअंत घाईकी । कलकोननेको आली पलकोलगनपाई दरिकितगई नींद नैननमें आईकी । कुहूंकह्यो कोयल कुमतिमेंउघारेदृग जागिके जो देखौं ज्वालजरत जुन्हाई की ७ प्यारे के बियोग आली उठी आगि वृन्दाबन जरतींसहेट कुंजें सुन्दरी महाँमहाँ । बौरे कचनारआंचउठति पलाशनते कुसुमकरील डीठिपरत जहाँजहाँ । मंशाराम तिन्हें भेंटि आवत समीर बीर तयोजात तनतालीलागति तहाँतहाँ । मृग अधमारे बिललातहैं भँवरकारे कोयलहू कोपलै पुकारती कहाँकहाँ ८ आबदुरकाय दे गुलाब खस केवड़ाको चन्दन चमेलीबेली माधवी निवारीमें । जुहीसोनजुही जाहि चम्पक कदम्बमिली सेवती समेत एला मालती निकारीमें । रघुनाथ इनको बिलोकिबो न भावै हमें कन्त बिनआयो है बसन्त फूलवारी में । भागिचलो भीतर अनारकचनारनते आगि उठो आवति गुलालाको कियारीमें ९ कुञ्जकुञ्ज प्रतिगुञ्जरत देखुअलिपुंज कूकैं कूर कोलिया

कहाँलौं धीर धरिबो। त्रिबिध समीर आनि तीरसो लगतहिये उमगौ गँभीरपीर कैसे दिन भरिबो। कहै शिव कबिहाय प्रगट्यो बसंतसमै बिनबनमाली आली भोजरूरमरिबो। सेमर अपारन में किंशुक की डारन में भयो कचनारन अँगारन को फरिबो १० पातबिन कीन्हे ऐसी भांतिगनबेलिनके परत न चीन्हे जे वे लरजत लुञ्जहैं। कहैपदमाकर बिसासी या बसन्तके सु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुञ्जहैं। ऊधो यह सूधो सों सँदेशो कहिदीजो भले हरिसों हमारो ह्यां न फूले बन कुञ्जहैं। किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनकी डारन पै डोलत अँगारनके पुञ्जहैं ११ मंजु मल्लिकान के मधुर मकरन्द हेत रिन्द ये मलिन्द जित तित ते पिलैलगे। जोहिजोहि चांदनी मनाये बिन मोहि मोहि माननी समूह प्राणपतिन मिलैलगे। कहै शिवकबि क्यों बसन्त बिनकन्त बीतै त्रिबिध समीर डोलिदाहन दिलैलगे। किंशुक के जाललाल लाल बन बीथिनमें फूलन के मिस आली आगि उगिलैलगे १२ लाललाल केशूफूलिरहे हैं विशालसंग श्यामरङ्ग भेटूमानो मसि में मिलायेहैं। तहाँ मधुकाज आय बैठे मधुकर पुञ्ज मलय पवन उपबन बनधायेहैं। सेनापति माधव महीना में पलाशतरु देखि देखि भाव कबिताके मन आयेहैं। आधे अन सुलगि सुलगि रहे आधे मानो बिरही दहन कामक्वैलापरचायेहैं १३ कन्त बिनबासर बसन्त लागे अन्तकसे तीर ऐसे त्रिबिध समीर लागे लहकन। सा-

नधरे साँग से चँदन घनसार लागे खेदलागे खरे मृग मेदलागे महकन। फाँसीसे फुलेललागे गांसी से गुलाब अरुगाजअरगजा लागे चोवालागे चहकन। अंग अंग आगि ऐसे केसरिके नीरलागे चीरलागे बरन अबीर लागे दहकन १४ वेईदल फूलजिन्हैं बाढ़त बिलोकिफूल शूल समते भये समूल छबि सारीसे। सेवक बखानैं तेई ठौर ठौर भौरतहैं भौंरन के तौर और ह्वै गये महारीसे। शीतल समीर सोईपीरको करतहाय धाय धाय परत पराग रागधारी से। जायन कहन्त कोई कोजै कौन तन्तराम कन्त बिन ह्वै गयो बसन्त अन्तकारीसे १५ किंशुक समान के निशान फहरानलागे बन्दीजन भीर भारी भौंरह्न गलाकरैं। पञ्चशर साथ हाथ लीन्हे है नबीनशर शीतल सुगन्ध मन्द मारुत चलाकरैं। बगरि उठे हैंरी बिलोकि बैरी चहूं ओर हूहैं करिधावैं भटकूहे कोकिलाकरैं। हाय बिन कन्त को सहाय करै मेरी अब आवत बसन्त बिरहीन पै हलाकरैं १६ बिटप लताकढ़ी है चाप दापसी बढ़ीहै सेसर चढ़ीहै अली अवली सुधारिके। सुमनसुमन जाने वेई शरसेंचिताने महा बिषसाने जेपराग रहेभरिके। अहट बिचार्‌यो चटकाहट कलोनपार्‌यो मार्‌यो यह चाहत मोब्रारक अकरिके। जैहैं जरि मैन आजु जौहरके ताहींपर पावक शिखा पलाश पल्लव पकरिके १७ फूलनलसन्त सतो अनल अनन्तराजैं बाढ़्यो काम तन्त सो बसन्त की बहारमें। धूंधुर परागन धुवांकी

धुधुकार हेरि हारनमेंहै नहीं अगारन अगारमें। दहर दहर बन देखिके कहरत्यागि लागियापहर दुख सागर के पारमें। साग्रन सों मैन के बिनाशन को देह करु आग्रन को सेवक पलाशनकी डारमें १८ हारन में फूलको बिदारन बिदारनते धारन कस्यो न दुख धारन को पारपै। कोकिला कि कूकनि अचूकनि शरशा खाय टूकन भयो पै गयो हूकन की ढारपै। सालकरि सालन रसालन के सालनकी कीन्हो मौर मालन उतालन सुतारपै। साग्रन सों मैन के बिनाशन को देहकरु आग्रन को सेवक पलाशनकी डारपै १९ मदनमहीपको समन्त बलवन्तदर्शि बिदिशनि बी-रालै बसन्त उठिधायेहैं। करतनवारन अवारन प्रताप जाको शङ्कर बखानैयों अजब गुनगायेहैं। फिरत दो-हाई भौंर भौंरन के ब्याजकूर ललकारैं कोकिलकी कूकनि गनाये हैं। फूले ये पलाश केन फूल काढ़ि काढ़ि मानो नेजेमें बियोगी के करेजे लटकाये हैं २० ज्वैरहे सुजान तिन्हैं जात परदेश कोन ह्वै रहे ते भौंर मिसकीरति बिहीनके। फूल मिसमानो डार पानिपर पेखिरहे आनँद अतूलहोय सोभउमहीनके। कहैमणि-देवखरे देखिके पलाशनको जानिके भलाशन बिलो-कि बलहीन के। बाढ़िके सुतेजवान बधिक बसन्त बली मानो दीन काढ़िके करेजे बिरहीनके २१ ठौर ठौर चाँचर चुहुलमचो चंगनकी अंगनकी ओर दशा ओरैरूप छायोहै! आनँद उरन अति अमित अखराड

छायो नागर मिलन दिन दाव दरशायोहै । लाज औ रुखाई तिय सङ्ग लै विवेकपति भाज्यो ब्रजमेंते मार बाननदबायोहै । प्रौढ़ी प्रीत जागन नवल नेह लागन को फागन सनेहिन के भागन ते आयोहै २२ आई बरसानेते अकेली कोऊ यशुदा पै ग्वालन भिजोइ डारी खेलबीज ह्वैगयो । छनपुर भानते दुलारी चली कीरतिकी धम मचपरी भारी गारी घोष ह्वैगयो । नागरि चमंकिरही चपलासी चहुंओर घेरे घनश्याम शब्द होहोलोक ह्वै गयो । घरुलाल तरुलाल केकी शुकपिकलाल घुमड़्यो गुलाल ब्रजलालमयी ह्वैगयो २३ लोल वियलोचन अलोल झलकत छबि छलकत श्रुति मणि किरणि कपोलमें । दीपति ललाटतेछुटत बिघटत पट नटत किशोर भृकुटी तट कलोलमें। आज- नंदलालसों सुनवलकिशोरीहोरी खेलतलसत बिहँसत बरबोलमें । रंग झर झेलत पछेलत अलीनमुख मीड़त गुलाल मिलिजात फिरि गोलमें २४ अँचराउरोजनते खुलिखुलि जात प्यारी फेंके पिचकारी भारी लागी रंगबरसात । कहतबनै न कछु देखतही आवैबनि मैन कामिनीसी दामिनीसी द्युति दरसात । कुच उचको- हैं लचको हैं मध्य देश बेश बेणी छबि आनन अनप छबिसरसात । छायजात आनँद लजायजात गोरीसुनि चोरकरि कान्ह पै अलीकी ओट आइजात २५ खेलि- बे को फागु देवदारासी उतरिआई दीरघ दृगन देखि लगत न पलकैं । उरते दुकूल दरशत भुज मूलबरउन्नत

उरोज हारहीरन के झलकैं। बेणी कबि भूपर धरत मन्द मन्द पावँ आननके ऊपर अनूप छबि छलकैं। लाललाल रंगभरी मदन तरंग भरी बालभरी आनँद गुलाल भरी अलकैं २६ नन्द के कुमारकी अपार पिचकारिनकी धीरन पै धारते सँभारन सँभारिगई। गाय गाय धाय के धमारि यों मचाई धूम ताहु धीर बारिन सों धीरतान धारिगई। मणिदेव भनत गवाँरी कहि गारीदैके ग्वालिनिको काल्हि जो गुमानै निज गारिगई। बीर की सों बीर बलबीर पै अबीर सोई भीरमें अभीर की अभीरि आजु मारिगई २७ होरी आजचोरी की कहोंरी कहा मोरीदई लाड़िली पठाई भुजगहन सहेलीको। भोरे भाय भावतो गहाय गयो जानि बूझि आयगयो संग में मचाय रंग रेलीको। ललिता लचायोलंक बाहँ दै बिशाखा गरे डारि हिय हार हरि आनँद चमेलीको। प्यारी लै गुलाल नन्द-लालमुख मीड़ै जौलौंतौलौं छैलछ्वैगयो कपोलअल-बेली को २८ होरी के दिवस कहूं गोरी राधिका को देखिकान्ह जियमांझ योंबिचार्‍यो बुद्धिबीछेते। आजु बिनरँगे केहूं छाड़िहौं न लाड़िलीको घातनमें लागयो फिरै आनँद के ईछेते। कहै चिरजीवो त्योंहीं लाल पिचकारी लैके लपक्यो प्रिया पै प्रिया भागी तकि तीछेते। खोढ़नी सरकि चोटी पीठयों लखात मानो इन्दु भाजयोजात औ फणिन्द पर्‍योपीछेते २९ मचि रही फागु और सबसबही पै घालैं रंग औ गुलाललाल

ख्याल अवलोकौं मैं । मोपै तुही ठाकुर लगाये घात घूमैंघेरि देखौं अब जात कितै इतउत रोकौं मैं । गहि लेहौं गाफिलकै सरण मैं छबीले छैल छंदिकै छलौजू निज नैनन की नोकौंमैं । ओटैं ह्वै करत पिचकारिन की चोटैं कहा सौंहैं आव साँवरे सराहौं तब तोकौं मैं ३० बावरे न होउ सुनौ साँवरे बिहारी तुम सरणमाहिं रावरे गरूर को निकारैंगी । राधामहरानी जब ऐहै उमगानी तब रावरी सुबानी बर बचन बिसारैंगी । सरणादेव भनत बखानकी चलाँकी तासु रावरे सखा-न की न भीरकोंबिचारैंगी । खरेहै। गुलालकै किलाल मैं तयारपर देखतही लाल तुम्हैं लालकरिडारैंगी ३१ धूंधरि उमंग सों मचायहैं। अबीरनकी संगलिये मदन तरंग भरी गोरीमैं । रस बरसाय दरसाय हाय भाय तिन्हैं गाफिल करौं तो वृषभान की किशोरी मैं । सहिकै अपार पिचकारिन की धारसोहैं गरक करों-गी हनुमान रंग रोरीमैं । खेलन को होरी चहै मोते अरु भोरीपर ओरी आज छैल को गहैंगी बरजोरी मैं ३२ लालकी ललकि लखि दौरि दुरिजातहुती छु-वन न देत छबितन द्युतिजालकी । जालकी दरीचोते निहारि सुरिजातिहुती भांतिहुतो मन्दिरमें द्युति सों मसालकी । सालकीन सुधिताको आजु सरणादेव कहै ह्वै गई बसनवारी मदन महाल की । हालकी सुनेरी चितचोरी करि दौरी वृषभान की किशोरी भोरी भरिकै गुलालकी३३ डरोना अहीरनते अगर अबीर-

नते चारिजनी चारु चारओरनते धावैरी। एकहाथ आड़ोपिचकारीकी अगारी मार एकहाथ ओट राखि आंखिन बचाओरी। कबि सरदार आयो बड़ खिल-वारीताहि खेलको सवाद रंगरंगन बताओरी। कीर-तिकुमारी कह्यो हेरिके कुमारी कोउ हेरी गुनवारी बनवारी बांधि लाओरी ३४ सुनत निदेश सो अशेश बनितासुभेश चली एकएकगहेगरबअकरिके। कबरी समेटिबांधीसबरी सुभगसुचि लहंगो जबरकस्यो लंक मैं जकरिके। गिरिधरदास हाथ फूलकी छरीलैधाई छबिसों अतूल होरी होरी शोर करिकै। चपला सी चमकि चहूंघासों चपलचारु चंदमुखी लीन्हें ब्रजचं-दको पकरिकै ३५ आज ब्रजराज ब्रजबधुन समाज सङ्ग लाजतजि खेलैंफाग गोकुल नगरमैं। उड़त गुलाल क्षिति अंबर भयोहेलाल छिरकैं गुलाल छूटें पिचकैं डगरमैं। गहीआय अचकै अकेली हरिहाथधीर गोपी भाजि दुरीभौन भीतर बगरमैं। अतर अबीर तर बतर शरीर कीन्हे सतर उरोजभीने चन्दन अगरमैं ३६ रंग भरी कंचुकी उरोजनपै तंगीकसी लागीभली भाईसी भुजान कखियनमैं। कहै पदमाकर जवाहिरसे अंग अंग ईंगुरसे रंगकी तरंग नखियनमैं। फागकी उमंग अनुरागकी तरंगवैसी तैसी छबि प्यारीकी बिलोकी सखियनमैं। केसरिकपोलनमैं मुखमैं तमोलभरी भाल मैं गुलाल नन्दलाल अंखियनमैं ३७ एकै संग हाल नन्दलाल औ गुलाल दोऊ दृगन गयो जो भरि आनँद

मढ़ैनहीं। धोयधोयहारी पदमाकर तिहारीसौंह अब तौ उपाय एकौ चित्त में चढ़ै नहीं। कहा करौं कहां जाउँ कासोंकहौं कौनसुनै कोऊतो निकारो तातेदरद बढ़ै नहीं। एरी मेरी बीरजैसे तैसे इन आंखिनते कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ै नहीं ३८ खेलोमिलिहोरी घोरो केसरि कमोरी फेंकोभरिभरि भोरी लाजजिय में बिचारौना। डारौ बहुरंग संग चंगऊ बजावो गावो सबहिरिझावो सरसावोभांकधारौना। जोरिकरकहति निहोरि हरिचन्द प्यारे मेरी बिनती है एक ताहि तुम टारौना। नैनहैं चकोर मुखचन्द सों परैगी ओट याते इन आंखिन गुलाल लाल डारौना३९ आईफाग खेलिके सकेलि सुख सांवरेसों सुन्दरि सुघर सोसनेह सरसावैहै। केसरिके रंगभीनी चूनरी सुरङ्गरङ्ग अङ्गन अनंगकी तरंग दरसावैहै। राजत अनोखो आधोबदन गुलाल मढ्यो कहत किशोरसो अनूप छबि छावैहै। अमल अभंग अछो उतसह सानो मानो अरुण घटाते शशि निकसत आवैहै ४० आईखेलिहोरी कहूंनवल किशोरी भोरी बोरीगई रंगन सुगन्धन झकोरैहै। कहै पदमाकर एकंत चलि चौकीचढ़ि हारनके बारनके बन्द फन्द छोरैहै। घांघरेकी घूमनिको उरून दुबीचै पारि आंगोछ उतारि सुकुमारि मुख मोरैहै। दन्तन अधर दाबि दंदरिभईसी चाप चौवर पचौवरकेचूनरि निचोरैहै ४१ बाग के बगर अनुराग भरी खेलि फाग आई अलबेली मन मोहनी गोपाल की। कालिदास

खलितललोहीं छवि छलकति नथमुकतानकी कपोलन कि भालकी। राजकरो इन्दु अरबिन्दसों न काजआज देखिवे को शोभा याके बदन रसालकी। बरुनी पलक पर भृकुटी तिलकपर घूमरी अलकपर झलक गुलाल की ४३ फागु खेलि श्याम संग सदन सिधारी प्यारी राजैद्युति दामिनीसी भामिनी भरी अनंग। कबिराव राना बैठि रतन सिंहासन पै दर्पभरी दर्पनलै भूषन संभारै अङ्ग। चंदमुख चन्दन ते चन्दकी कलासी खासी कंचनकी झारिनमें जलभरि लाईगंग। कोमल कपोलनते धोवती गुलाललाली त्योंत्यों होतिआली अति गहव गुलाबीरंग ४४ सांझहीते खेलत रसिक रसभरी फाग भस्यो अनुराग रागगावैं रीझिपगिपगि। केसरि गुलाल सोलबढ़िरह्यो रघुनाथ रूप की ठगोरी डारि गोरीडारी ठगिठगि। भोंड़रके किनकायों लाल के बदनपर निरखि जुन्हाई बीच ऐसे लसैं जगिजगि। मानोफूल्यो वारिज विलोकि कलानिधि आली किरनो चलाय ते लुनायरहीं लगिलगि ४५ छाई छवि हीरनकी रविज्योति जीरनकी सुखमा गंभीरन की चिलकारी अलकैं। अबला अहीरनकी पोथी दधि क्षीरनकी सोनेसे शरीरनकी गारीदेत बलकैं। पिचकारी नीरनकी मारैं समतीरनकी देहदान चीरन की साँगिबेको ललकैं। सोहैं करिबीरनकी उड़त अबीरन कीलाली मुख बीरनकी बीरनकी झलकं ४६ मारकी सरोर बेशुमारसों फिरैंनसहैं मारकुंकुमानकी उरोजन

पै गोरीरी। लालरंग ह्वैगयो किलाल कालिन्दी को सब्बडारैं बहुलाल पै गुलालनकी झोरी री। मणिदेव भनत करोरैं करि भावबाल घोरैं रंग दौरैं चहुं ओरैं रंग बोरी री। आनँद समाजकी है जामैं सुधि लाज कीन आजकी अनूप ब्रजराजकी सुहोरी री ४७ खेलतहैं होरी हरिराधे आजवृन्दावन ऐसीजुरी भीर अंग अंगसोंछिलतहै। लालको मयंकमुख मंगलसो दरसात जबवाके करके गुलालसों मिलतहै। घूंघुटउघारत करत बारबार चोट बालमुख श्याम चोर ऐसे सकिलत है। मानो प्रभुआगे राहु बैर निज लेनकाज चंदगुनहीं को लै गिलत उगिलतहै ४८ मोतीकल गङ्गनीलसारी कालिंदीको संग डरयोलालरंग रूपभारतोको भरिगो। सेवक भनतके हिये को अनुराग जागि उमँगि अदाग आज ऊपर उघरिगो। ललकिललाने मूठि बादलाकी मारी तापै सनखउरोज पर ऐसो अनुसरिगो। मानो भानु पूरकला आपनीको शूरमानि ह्वैके चन्दचूरचंद चूरपैं बगरिगो ४९ किरणासि कढिआई अंगना उघारेगात कबिपजनेस छैलक्षितिपै छहरिगो। उझकि झपाक मुख फेरि प्यारेरुख ओर हेरि हरि हरषहि मंचलपै अरिगो। आधोमुख मलतअबीरते मुकेससाथ नखरेख चिह्नित उरोजन पै झरिगो। मानो अर्द्धचन्द्र को प्रकाश अर्द्धचन्द्रिकापै ह्वैके चन्द्रचूर चन्द्रचूरपैं बगरिगो ५० फरस जरीको नगजटित घटितमणि मंडित बितानब्रज भारीभोर भरिगो। कबिपजनेस कीट

कुण्डलकिशोर मुखमण्डल कूपरधूर धंधर धुधरिगो। गोरीके गुलालभर्यो कुंकुमा यों लाग्यो जाग्यो बि-थुरि उरोजपै अदाते सो बगरिगो। फेरितम मण्डल ब्रह्मण्डते उमण्डमानो अरुण उदोत हेमगिरिपै बग-रिगो ५१ उमही किशोरी वृषभानकी हरषहोरी सोहैं सङ्ग गोरी बोरी केसरि मईमई। पिचकी जराव जरी भरी लालरंगनते मोहनके मुखदई छबि सों छईछई। कृष्णलाल ग्वालपै गुलालकी चलाईमूठितातेनभलाली भइ चञ्चला नईनई। बादलाके चूर परिपूर ह्वै लसत मानो रविचन्द जीतिकरिडार्यो है रई रई ५२ आजु ब्रजराज ब्रजमण्डल में खेलैं फागु रोरिन की झोरिन ठगोरिनपै डारिदेत। गेंदगुच्छ कुंकुमहजारी पिचकारी भरि भारीदम कलनि बिहारी परिचारि देत। कोऊ तहाँ भूल कोऊ मानत मनोज फूल कोऊ प्रीति मूल कहि सेवक सँवारिदेत। हालनको भेदन गुलालन की मूठि जौनबालनपै कबहूं मसालनपै डारि देत ५३ खे-लत सुफाग महाराज ब्रजराज आज नाचैं बार अङ्गना सभामें छल छूटिछूटि। सेवक बखानै सुरसकल समाके मचे महतमनोजके मजाकी मौज लूटिलूटि। घूमिघूमि तालसों उझकि झुकि झुमिझुमि हाव भाव भूमिलौं बतावैं तान जूटिजूटि। पूतरीसी पातरी नगीसीपन्नगी सी नरी किन्नरीसी किन्नरीपरीसी परैं टूटि टूटि ५४

सवैया॥ चीरसुरंगी सजे तनमें कर केसरिलै रघुबीर पै मेलती। दुल्लह चारु बनो अति सुन्दर देखिकै शोभा

नहीं पलफेरती। घूंघुट ओट गुलालकि चोट बचायके लालनपै रंगमेलती। धनिवै बनिता मनिता जगमें सांझ कंतके संग बसन्तजे खेलती ५५ ॥ कबित्त ॥ फूलेतेपलाश है मशाल जगमगात मनों मन्दिर सोहातगीत कोकिलन न गायोहै। बिबिध बरनके बनाये है बराती सब तन मन मोह्यो मधुआनँद बरसायो है। उड़त गुलाल नभ बादर भयोहै लाल अबिराकी धूंधुरसों मराडप यों छायोहै। देखुरी सखी आजु गोरी दुलहिनि ब्याहिबेको धरिमौर बनरा बसन्त बनिआयोहै ५६ ॥ सवैया ॥ आली सुनौ बनमाली बियोग पलाशके पुञ्जनको सुखभागो। पात सुखायगिरे महिआनि लतानिमें श्यामताको रंग रागो। धीरधरे टहरात न माधव मैनको जालिम जोर है जागो। भामिनी भौन में भागिचलौ फिरि आगि उठैगी धुआं उठैलागो ५७ ज्यांत्यों रह्यो अबलौ जिय तौ अब आयो बसन्त कछू न बिसैहै। शीतलमन्द सुगन्धितबीर समीरनपीर गंभीर उठैहै। क्योंकरि प्राण रहैं तनमें जब कोकिला कूकिके कूक सुनैहै। औरन तेरो फबैगोकछू अलिसंग कुहूके तुहू कढ़िजैहै ५८ शोधे समीरनको सरदार मलिन्दन को मनसा फलदायक। किंशुकजालनको कलपद्रुम मानिनीबालनहूंको मनायक। कन्त अनन्त अनन्तकलीनको दीनन के मनको सुखदायक। साँचोमनोभवराजकोसाजसो आवतआज इतै ऋतुनायक ५९ बायुबहारि बहारिरहे क्षितिबीथी सुगन्ध न जात सिंचाई। त्यों मदमाते मलिन्दसबै जय

की करखानि रहे कछुगाई। मंगलपाठ पढ़ैं द्विजदेव सबै बिधिसों सुखमा उपजाई। साजिरहे सबसाजघने बनमें ऋतुराजको जानि अवाई ६० बौरे रसालन की चढ़ि डारन कूकत कैलिया मौनगहैना। ठाकुर पुंजन कुञ्जन गुंजत भौरनकोचै चुपैबो चहैना। शीतल मन्द सुगन्धित बीर समीर लगे तन धीर रहैना। व्याकुल कीन्हो बसंत बनायकै जायकै कन्तसों कोऊ कहैना ६१ को बचिहै यहिबैरी बसन्त सों आवत योबन आगि लगावत। बौरतही करिडारत बौरीभरे बिषबौरी रसाल कहावत। होत करेजनकी किरचै कबि देवजू कोकिल बैन सुनावत। बीर कि सों बल बीर बिना उड़ि जायँगे प्राण अबीर उड़ावत ६२ ए ब्रजचन्द चलो किन वा ब्रज लूकै बसन्त कि ऊकनलागीं। त्यों पदमाकर पेखो पलाशन पावक सी मनैां फूकन लागीं। वै ब्रजबारी बिचारीबधू बनबारी हियेलौं हूकनलागीं। कारी कुरूप कसाइनै पै सुकुहू कुहू कैलिया कूकन लागीं ६३ लखे सुखदानि पखानन जानि मयूरन देति भगाय भगाय। मनै कैदियो पियरे पहिराव को गावँ में एग्रादे लगाय लगाय। भुलावतीं वाके हिये ते हरीहि कथान में दास पगाय पगाय। कहा कहिये यहु पापी पपीहा व्यथा तन देत जगाय जगाय ६४ कबित ॥ बेलीरसरेली अलबेली नवलानसंग मुदितमनोज तरु तरुन बिहारेहैं। मंजु२ सुमन रसाल मंजरीनन पै पुंज२ गुंजत मलिन्द मतवारेहैं। मौनगति कौन दीन

पियबिन अंगहीन अधिक अधीनहीन बिकल निहा-
रेहैं। राखत न चेत बिरहीननके चित्तचैत चैत चन्द
चांदनी अचेत करि डारेहैं ६५ ॥ सवैया ॥ संगसखी के
गई अलबेली महासुख सोवन बाग बिहारन। बाढ़े
बियोग बिलासगये सब देखतही वेपलाश किडारन।
जानि बसंत औ कंत बिदेश सखीलगी बावरीसी ह्वै
पुकारन। च्वैचलिहैं चुरियां चलिआवरी आंगुरियां
जनिलाउ छंगारन ६६ बैरी बसंतके आवतही बनबीच
दवागिनि सोपजरैंगी। योगिनिसी बनिहैं बनमाल
बियोगिनि कैसेकै धीरधरैंगी। गुंजनवै अलिपुंजनकी
सुनि कुंजन कोलिया कूककरैंगी। शूलसेफूले पलाश-
नकी डरियां डरपावनी दीठि परैंगी ६७ जबते ऋतु-
राज समाज रच्यो तबते अवली अलिकी चहकी।
सरसायकैधार रसालकी डारिन कोकिल कूकै फिरै
बहकी। रसिया बनफूले पलाशकरील गुलाबकिबास
महामहकी। बिरही जनके दिलदागिबेको यहआगि
दशों दिशिते दहकी ६८ देकहि मीर भिकारनको
इहिबाग न कोयल आवनपावै। मूंदिझरोखन मंदिर
के मलयानिल आयन छावनपावै। आयेबिनारघुनाथ
बसंतको सेबो न कोऊ सुनावन पावै। प्यारीके। चाहै।
जिआयोधमारिती गांवमेंकोऊ न गावन पावै६९ धुंधु-
रसी बनधूमसी गावनगावन तानलगे नर बौरी। बौरी
लता बनिताभई बौरी सुऔधि अध्यायरही अबथोरी।
बेलीबसंतके आवतहीं बिनकन्त अनन्तसहै दवकोरी।

औरीघरै हरिआयेन जो पहिलेहैं जरौं जरिहै फिरि
होरी ७० बीर अबीर अभीरनको दुखभाखे बनै नबनै
बिनभाखै। त्यों पदमाकर मोहनमीत के पाये सँदेशन
आठयें पाखै। आयेन आपन पातीलिखी मनकीमन-
हीं में रहीं अभिलाखै। सीतके अन्तबसन्त लग्यो अब
कौनके आगे बसंतलै राखै ७१ ॥ कबित्त ॥ कुञ्ज कुञ्ज
परतमाह गुंजरत पुंज अलिकूकैं कोकिलानये कहां-
लौं दिनभरिबो। त्रिविध समीर हिये तीसरे लगन
लागे उमँग्यो गँभीरपीर धीरकैसे धरिबो। कहैशिव-
नाथ आनि प्रगटेउ बसन्तऋतु बिन बनमाली आली
मोजरूर मरिबो। सेंबर अपारनमें किंशुककोडारनसे
भयो कचनारनमें अँगारनको फरिबो ७२ आवछिर-
कायदे गुलाब कुंद केवड़ाको सेवती समीत बेला मा-
लती पियारीमें। जूहोसोन जूहीजाय चम्पक कदम्ब
अम्ब चम्पा औ चमेली गुलचांदनी नेवारीमें। शिव-
नाथबातको बिलोकिबो न भावैमोहिं पीवबिनआयो
है बसंत फुलवारी में। भागिचलु भीतर अनार कच-
नारौंलग आगेउठी प्यारी गुल्लालाकी कियारीमें ७३
सवैया ॥ तोहिं बसन्तके आवतही मिलिहैं इतनी कहि
राखी हितू जे। सो अब बूझतिहैं तुमसों कछु बूझे
ते मेरे उदास न हूजे। काहे ते आये नहीं रघुनाथ ये
आइकै औधके बासरपूजे। देखु मधुब्रत गुंजे चहूंदिशि
कोयल बोली कपोतऊ कूंजे ७४ जानतिही न बसन्त
को आगम बैठिहि ध्यानधरे निजुपीको। एतेमेंकानन

ओरसों आइ कै कानन में पस्यो बोल पिकी को। है रघुनाथ कहाकहिये कहि आयो हा आयो गरो भरि-तीको। लोचन वारिजसों अंशुवाको अथाह बह्योपर-वाह नदीको। ७५ बैठी बिसूरतिही पिय आगम रतिमें कोयल को सुनिबानी। जागिउठी बिरहागि महा ल-खि मैं रघुनाथकी सौंह सकानी। चन्दनलाइ मिलाइ कपूरनि सांभरि सींच्यो गुलाब के पानी। कौन कहै बतियां निशिकीन तियाकीतऊ छतियासियरानी ७६ काज महा ऋतुराज बलीके यहै बनिआवत है लखते-ही। जातकह्यो न कहाकहिये रघुनाथकहै रसना इक एही। सालरसाल तमालहि आदि दै जेतिक वृक्षलता बनजेही। नौदलकीबेको कीन्हो बिचारतौके पतझार दियो पहिलेही ७७॥ कवित्त॥ आयोहै बसन्त कन्तबास कियो अंत लाग्यो मैन शरतन्त सुधि नेकौ नहीं अंग की। गावत धमारै ते अधिक उपचारै आइ कोकिल पुकारै सनो नैन भटजंगकी। होलीके जरतधीर कैस्यो न धरत बनै ताही में परत है व्यथा को सनो संगकी। और नहिं चार सब थाकी कै कमाल बालतीन तेहि काल गति पंजर पतंगकी ७८॥ सवैया॥ फूटन कों पल कोप नई बिधि तूटत डारभरी मदझौरन। त्यों नवनीत सुगन्धनपौंन चलै मिलि बायु सुठौरहीठौरन। कुन्दक-मोद कदम्ब कलीपर अम्बन तंबुदियेकरि भौंरन। कन्त बिना अब बीरबसन्तमें कौनउपायबचै किहितौरन ७९ बासर बीतिगयोबिधिके समरैंनिवसन्तकीहै नियराई

मेरुसो श्रृंग उतंग रहो अब सो सम जानिपरै जियराई। नीर उसीर सों सीरी समीरसों सो बिरहागि नहींसिय राई। चन्द चढ़ो उदयाचलपै सुख चन्दपै आनिचढ़ी पियराई ८०॥ कवित्त॥ आयेरावरे हौ तजिसहज स्वभाव जिन्हैं कहेनहीं जात कछुतिनके जेहालाहैं। द्विजवल्लदेव तो बिलोक्यो तुम्हैं धीति नहीं नेकहू गनेज जिन प्रीत भीत पालाहैं। बिदित बसन्त तासों तन्त को बतायेदेत किंशुक कदम्ब कचनार कुंतजालाहैं। आजनन्दलालाकरलीन्हे मृगछालाहाला चम्पेकीसीमाला कुंभिलानी चारुबालाहैं ८१॥ सवैया॥ कोकिलकेगरा कूकैलगे तिमिकोलनकी कलिका बिकसन्ती। फूलि उठीलतिका बलदेवजू लोपैलगी चलिलाज लसन्ती। कैसे रहैगो सुधीरजू को दल मैन अनी घनी घेरी गसन्ती। बेधै लगे हियरो बिरहीनको बौरेवनै बनबाग बसन्ती ८२ गुंजत भौंर बिराग भरेबन बोलत चातक औपिक गाइके। फूले हैं टेसू कुसुम्भ जहाँ तहँ दौरत काम कमान चढ़ाइ के। डोलत बायुसुगन्ध समारख लागै हिये मलया गिरिलाइके। मेरे मनाये न मानैं बबाकिसीं ऐहै वसन्त लैजैहै मनाइके ८३ अम्ब बसन्त में बौरहिंगे अरु कामिनि चन्दन चीररंगैहैं। डोलैंगे पवन सुगन्ध समारख कुंजलता सों लता लपटैहैं। योगी यती तपसी औ सती इनको बिरहानल आनि सतैहैं। ताहि छिना सखिप्राण तजौं जोपैकन्त बसन्तके अन्तनऐहैं ८४॥ कवित्त॥ फूले गुल्लालागुलाव कलियान

लागेताते मदन करत अतिसरसाई है। पवन के चले द्रुमपातझरिजात आली तामें मधुपुरीमें मित्रहू सुधिपाईहै। सुन्दर सुबास तन उत्तम अवासपाय कुबिजा को रंगरूपनीको बनिआई है। ऊधोजी जिपर अँदेशोहै सँदेशो यहै कह्यो कूरकन्त सों बसन्त ऋतुआई है ८५ आंबनके बौरनकी ओपी शिरटोपीधरे कुरती पलाशनकीललित सोहायोहै। तरलतमालनकी किर्चै तुपक तीर रजक पराग सों अधिक छबि छायो है। गोली से भवँर भीर बोली भाँति भाँतिनकी फूलीकलियान में सुरीलही जमायोहै। बीर बिरहिन के करेजरेज करिबेको आजुतौ बसन्त यो उजीर बनिआयो है८६॥सवैया॥आयो बसन्त भयोतनतन्त चल्यो दलकाम मतंगसेहूलैं। चातक बासकियो बनपास पलासकी डारैं अँगारसीफूलैं। सेंबर फूलि अकाशलगे मनो झब्बा रँगे मखतूलकिझूलैं। कौनसहै बिनकन्त सखीयेबसंत के तन्त के अन्तकी शूलैं ८७ फूलिरहे बन बागदशो दिशि कोकिल कुञ्जनों कुञ्ज घनेरहै। बोलैंमधुव्रत कुञ्जनमेंअरु डोलतपौन सुगन्ध सनेरहै। कबिचन्दजू चैतकी चांदनीचारुमें दम्पति को चितनित्तचुनेरहै। राधाकृष्णा जो रावरी राज्य में बारहू मास बसन्त बनेरहै ८८ फूले पलास बिलासथली बहु केशवदास प्रकासन थोरे। शेष अशेष मुखानलकी जनु ज्वाल बिशालचली दिबिबोरे। किंशुक श्री शुक तुण्डनकी रुचि राचे रसातल में चित चोरे। चंचन चापि चहूं

दिशि डोलत चारु चकोर अँगारनभोरे ८९ ॥ कवित्त ॥
शीतल समीर सुभ गंगा के तरंग युत अम्बर बिहीन
बपु बासुकी लसंतहै। सेवत मधुपगण गजमुख परभृत
बोलधुनि होत सुखी सन्तऔ असन्तहै। अमलअदल
रूप मंजरी सुपदरजरंजित अशोक दुख देख तनसन्त
है। याकेराज दिशि दिशि फूलेहैं सुमनसब शिवको
समाज कैधों केशव बसन्त है ९० और को सुखदभयो
हमको दुखद तूहै अदभुत गतितेरीकहीनपरतिहै। और
नको पोखै तोखै बास मकरन्दनसों राखै हमहीं को
अरेमोहींसों अरतिहै। प्रफुलित रसाल तापै होत जात
कासोंकहैां मेरे अँगअंगमें बिकलता करतिहै। मानत न
साखियाते भयो बैशाख सबकोऊ नाम तेरा बैशाख-
ही धरत है ९१ नैनलाल कुसुम पलाश से रहे हैं फल
मालगरे मानो बनझालरि सों लाई हैं। भवँर गुञ्जार
हरिनाम कोउचारतिमि कोकिलासों कुहंकि बियोग
राग गाई है। हरीचन्द तजि पत झार घर बार सबै
बौरी बनि दौरी चारुपौन ऐसी धाई है। तेरे बिछुरे
ते प्राणकन्त केहिमन्त अन्त तेरी प्रेमयोगिनी बसंत
बनिआईहै९२पीरोतन पर्योफूलो सरसों सरससाईमन
मुरझानो पतझार मानो लाईहै। सोरी श्वासत्रिबिध
समीर सी बहतिसदा अँखियां बरसि मधुझारसी ल-
गाईहै। हरीचन्द फूलभन मौनके मसूसनसों ताहीसों
रसाल बाल बदिके बौराईहै। तेरे बिछुरेते प्राणकंत
के हिमन्त अन्त तेरी प्रेम योगिनी बसन्त बनिआई

है ९३ ब्रज में बसन्त राग बागमें बसन्त बन बेलिन बसन्त सरसन्त आमें बौरमें। भनत दिवाकर समीर नीर तीर तीर बनिता बसन्त करदीन्हे और तौर में। ठौरठौर कोकिलको बोल अनमोल भयो बगरो बसन्त है मलिन्दन के भौर में। और और लौरलौर घरघर जहँ तहँ कियोहै बसन्त सलसन्त सब दौरमें ९४ चंचरीक चंचल ह्वै गुञ्जत निकुञ्ज जहां चहुं चारुचमकै चमेली फूलि फूलिकै। तहां एक दीनद्याल सांवरो लख्यो रसाल आवत मतंग चाल चलो भूलि भूलि कै। मन्दमुसकानि बीचयेरी चितखींचि लियो नाहिं ठहरात जात गात भूलि भूलि कै। ईछन ह्वै तीछन निरीछन की कोरबांकी उठैं बरजोर मेरेहिये हूलि हूलिकै ९५ आई है बहार बनबेलिन नबेलिन में बहुधा चमेलिन में भौंर भीर छाईहै। छाईहै छपाकर मरीचिका दरीचिन में तिनहू लखत कै अतन ताप ताईहै। ताईहै सकल सुधि बुधि यशवन्त मेरी जब ते पियरि प्राण प्यारी बिसराई है। राई है न नेककहूं नवमें कलेवरमें कहियो हो कन्त सों बसन्त ऋतुआई है ९६॥ सवैया॥ पीर है दूरि पपीहा बकै मतजैये वहां जहां सौतिको तीरहै। तीरहै वैरि न बोलौ यहां खरोरन गुञ्जत भौंरकी भीर है। भीरहै धीरज राखिबेको प्रहलाद बसन्त सनोज की वीरहै। बीरहैकोऊनहीं यहि गांवमें बूझत कोउ न काहू की पीरहै९७॥ कवित्त॥ फूलि रही माधुरी रसालता साधुरी पलाशन धुरा धुरी

अनेक रंग घेरेहैं। शीतल सुगन्ध मन्द दक्षिणाके पौन मान मोचन नरिन्द हरि न क्षिणाक नेरे हैं। प्रफुल्लित कुंजै बैगुलाब अलि गुंजै तेहि जोहन को मोहन परत पायँ मेरेहैं। हेरे क्यों न बन तन लाये कहा ऐसी रहो तनहूं में अनगान ठनगनतेरे हैं ९८ डह डही मोरी मंजु डार सहकारकी पै चहचही चुहिल चुहूंकित अलीन की। लहलही लोनी लतालपटी तमालनपै कह कही तापै कोकिला की काकलीनकी। तह तही करिरस खानके मिलन हेत वह वही बानि तजि मानसमलीन की। महमही मन्द मन्द मारुत मिलनतैसी गहगही खिलनि गुलाबकी कलीनकी ९९ रोग सों असाधिन की औषधी को जानै सब रसन को क्रिया में प्रवीण मन भायो है। मेटत अजीरण को भूखनि बढ़ाइ देत नारिन के शोधिबेको भेद जानि भायो है। कलीना खिलत यहै पुरिया खुलति लाली भोगिन को देत सेखी सुख सों सोहायो है। रिझवार मोहनके आगे गुण प्रगटत आजु बनिदेखुरी बसन्तबैद आयोहै२०० फूलन के दोनें रचि साकलि सुमन सचि सान्यो म-करन्द चोकनोलै घृतसोतुहै। मेहामुनि ऋतुराज काम-देव बांचतहै खगहोसि सोहाकार द्विजन के गोतु है। मदन गोपाल देवताकिपूजा कीजियतु सखीसुखबारी प्यारी तेज को उदोतु है। मधु कुराड माँझलाल टसु ये अंगिनि झरैं आजु वृन्दावनमें अनूठो होम होतु है १॥ सवैया॥ नील बसन्त उठे अकुलाय सुने कल को-

किल की किलकारी । भावरैसी भरैं साँवरे साँवरेहोत निछावरि ते सहचारी । देवटूहू को टूहू दुरिकै रँगदै पठई अँग अंग उज्यारी । केसरियाखुलें नन्द किशोर किशोरी कि केसरिकी रँगीसारी २ साजिबरातचले दशरत्थ प्रभामिथिलेशकी पौरिलसन्ती । हेमकेखम्भ जड़े मणि आदिक औ मुक्तानकी चौकपुरन्ती । गावतकोकिल बैनसखी परमेश भनैंसगरी गुणवन्ती । श्रीरघुबीरकेब्याहसमैंसित श्यामशरीरमें चीरबसन्ती ३भ्रमै भूले मलिन्दन देखिनितै तनभूलिरहैं छिनभामिनियाँ । द्विजदेव जू डोले लतान चितै हिये धीर धरैं किमि कामिनियाँ । हरि हाय बिदेशमें जाय बसे तजि ऐसे समय गजगामिनियाँ । मन बौरै न क्यों सजनी अबतौ बनबौरी बिसासिनि आबिनियाँ४आह कै काँपिकराहि उठीदृग आँशुन मोचि सकोच घरी द्वै । लैकर कागद कोरो लला लिखिबे कहँ बैठी बियोग कथाख्वै । ऐसे में आनि कहूँ द्विज देव बसन्त बयारि कढ़ी तितहीह्वै । बातकी बातमें बौरीतिया अरु पीतह्वै पाती परी करसेच्वै ५ ये जबते उत नन्द लला तबते निजहाल न पूंछत कोई । तान तरंग तजी तुरतैं बलदेव मिले पर आनँद होई । पाइ बसन्तन संत रहे मनका विधिसे निजभाव बिगोई । माल बिशाल दियो हित लाल भये बिरहाल यहीलय सोई ६ ॥
कबित्त ॥ आवत बसन्तबेलि बागनमें फूलींसब पदुम पलाशे अलिवृन्द मनभायेहै । आनँद अरम्भकरि पक्षी

बन बोलतहैं त्रिविध समीर से सोहायो सुखपायोहै। तानन सुमन्धपद्धि बांसुरी बजाई हरि सुनि धुनि जैसे जोस तैसे उठिधायोहै। झपटि झरोखे बीच झांकी बलदेव कहै व्रजकी कुमारी श्रीविहारी लखि पायो है ७ उदित प्रकाश आसपास देशदेशनमें द्विजबलदेव बात दयोतकी बतायेदेत। लहरैं समीरैं लोनी लतिका लवंगनकी लपटी लतान तरुणाई तरु तायेदेत। आवत तमासे ऋतुराजके समासे खासे परन पलाशनके पावक बसाये देत। जाहिरभो युवती जमातिके जसूसी लखि जूटे जोर जुलमी मनोज को जगाये देत ८ हूजे लाजबाज गाज काजहै कहांको साज आज ऋतुराज लै समाजताज धै सचेत। द्विज बलदेव बनबागतौ निहारो नेक बौरे करि डारैं डारैं डाकसी अधीर हेत। ह्वै हैं काह फेरि वैसे फरसफबे हैं फैलि फहरैं पताके फौज फेरो झख केतखेत। चौगुन चढ़ावचाव चहकि चकोर उठे ठौरठौर कैलिया कुहूकेकरि हूके देत ९ सेवती निवारसेत हीरन के हार जूही यूथ औ अनार मोती बिद्रुम लसन्तभो। पन्ना पोखराज पच चम्पक समाजफाव माणिक गुलाबनील इन्दीबर गन्तसो। माधवी न सूनो गऊ मेदकल मनो दूनो औध बाटिका बजार पूनो बिलसन्तभो। यतन जलूस जोर रतन रसाल रंग अतन अनन्दहेत जौंहरी बसन्त भो १० फूले कचनार सहकार औ अपारबन शीतल सुगन्धमन्द मारुत कपायोरी। चन्दनके गार और सुमन सुगन्धसार हार

मुक्तान के बितान तनतायोरी। क्षेमकरण चंचरीक गुंजैं औ कुंजैंपिक आछे सेज असन बसन सोंन भायोरी। आयो मधुमास मोहि करै उपहाँस मधु मधुपुरमैं माधव बसन्तहू न आयोरी ११ चहकि चकोर उठे शोरकरि भैांरउठे बोलि ठौर ठौर उठे कोकिल सुहावने। खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार हिलि हिलिउठे मारुत सुगन्ध सरसावने। पलक न लागी अनुरागी इननैननपै लपटिगये धैां कबै तरुमनभावने। उमँगिअनंद आँशुवानलैा चहूघालागे फूलिफूलि सुमन मलिन्द बरसावने १२ होनलागे शोर चहूं ओर प्रति कुञ्जनमें त्योंहीं पुञ्ज पुञ्जन पराग नभछायगो। फूल फल साजनको आयसु विपिनमांहिं शीतलसुगन्धमंद पैान पहुंचायगो। द्विजदेव भूलभूले फिरत मलिन्दन की सुखमा बिलोकि हियेसुख सरसायगो। आयेहुते आगेते हरैालनके लोगइत आवत हमारे उत ऋतुपति आयगो १३ पल्लव पोल पालकी नगारे कूक कोयल की सुमनसिपाही सैन्य साजिकै सिधायो है। मधुबन नकीव बोलै बोलै वायु चोपदार तोपदार तरुवर तयारीकरि तायोहै। क्षेमकरण चाँदनी चमकी चाव देताहै लेताहैअँकोरनाहिं हरवल शशिआयोहै। बैरी या बसन्त बरजोरी ब्रजराजबिन मदनमहीप मत मारै उठिधायो है १४ गावो किन कोकिल बजावो किन बेणु २ नाचो किन भ्रमरि लतागण बने ठने। फेंकि फेंकिमारो किन निजकर पल्लवसों ललित लवंगफूल

पानन घने घने। फूलमाल वारौ किन सौरभ सँवारौ किन येहो परिचारक समीर सुखसों सने। मौर धरि बैठो किन चतुर रसाल आजु आवत बसन्त ऋतुराज तुम्हैं देखने १९ शीतल सुगन्ध मन्द वायुके सनाकबहै नभ मलहीनदेखि मन सकुचातहै। बनबिचशालग्राम किंशुक चमाकेअहै अलि भन्न भन्न भन्न धुनि गरजात है। कोयलेनवीन बहुहूसन झनाकेसहै झन्ननसोंनीर हीर शुभ सरसातहै। चित्तनपै सुखहित आनँदतमाके रहै वाहवाहवाह ऐसी ऋतुपति जातहै २० छलकत छबि फूलनमें गलकत मकरन्दआली ललकत ललामी रबिभौंर सों लजायेहै। लहकत समीर त्रिबिध बहकत कोकिला बैन चहकत चिरैया सब आनँद बढ़ायेहै। ठनकत चौरसी अरु झनकत नूपुर धुनि धधकत मृदङ्ग ताल रङ्गसों लजायेहै। हरषत सुरेश मन झझकत महेश जू को गमकत नगारे सो बसन्तऋतु आयेहै २१ ॥ सवैया ॥ आये बसन्त अनन्दित भे मकरन्दित ह्वैके पसाराकरैं। अरु बौरेरसालपै कोयलबैठिके धीर धरैं न पुकाराकरैं। पतिहीनतिया जे हतीं घरमें तिन को बिरहानल जाराकरैं। पियप्यारेहमारे मिलेसजनी वे पपीहापरे झखमाराकरैं २२ मोतिनचौकपुराइ घनो गनी गायनैवार बधून बोलाइहै। रङ्गबिरङ्गकेलै लै कुसुम्भ उमङ्गसें मालिनि सों गुँधवाइहै। दै अवधेश द्विजेशन को धन कञ्चन के घट दीप धराइहै। साजिके साज समाज भलीविधि आजु ललाके बसन्त

बधाइहै। २३ कल गुञ्जत कुञ्जन पुञ्ज मलिन्द पियै मकरन्द अनन्द भरे । द्रुमबौरत कौलिया कूकैकूरैं बहै सौरभ सीरीसमीर हरे । वहितन्त बसन्त को भावैनहीं गुरुदीन जऊलसै कन्तगरे । निशिबासर नींद औ भूख हरी मुखपीरो परी दल पेरपरे २४ ॥ कबित ॥ कूकि उठीं कोकिलान गुञ्जिउठीं भौंर भीर डोलिउठे सौरभ समीर सरसावने । फूलि उठीं लतिका लवंगनकी लोनी लोनी भूलिउठीं डालियां कदम्ब सुखपावने । चहकि चकोर उठे कीरकरि शोरउठे टेरि उठीसारिका बिनोद उपजावने । चटकि गुलाबउठे लटकिसरोज पुञ्ज खटकि मराल ऋतुराज सुनिआवने २५॥ सवैया ॥ प्रथमैं बिकसे बनबैरी बसन्त के बातनते सुरभाईहुती । द्विजदेवजताहूपै देहसबै बिरहानल ज्वालजराईहुती । यह सांवरे रावरेनेहसों अंगन प्यारी नजो सरसाईहुती। तोपै दीपशिखासीनई दुलही अवलोकिबे को न बुभाईहुती २६ चाहि है चित्त चकोर दवाग्नुति आपनो होयपरोसिनै लैहै । ये दृग अंबुज से अकुलाइ कलाबिधु बंधु कि हाइ अचैहै । ऐसी कसासमीमें द्विजदेव अली अलिके गनगाइ सुनैहै । ह्वै है सो कौन दशातनकी जोपै भौन बसन्तलौं कन्त न ऐहै २७बागनिवासिन ह्वै के परागलै ज्यों ज्यों बहै यह बैहरि झूकन । त्योंत्यों परी परचराडमहा परसेशउठै बिरहागिनि भूकन । कन्त बिदेश बसन्तसमै हियरा हहरान लग्यो अब हूकन। नेहभरो सिगरो तन जारिकै कैला

किये यह कौलिया कूकन २८ फूले अनारन पेहिलु डारन देखतदेव महा उरमाचैं। माधुरी भौरन आंबके बौरन भौरनके गनमन्त्रसे सांचैं। लागिरही बिरहीजन के कचनारन बीच अचानक साचैं। सांचेहु कारै पुकारैं पुखी कहिनाचे बनैगी बसन्त की पांचै २९ ॥ कबित ॥ आयो ऋतुराज आज देखत बनैरीआली छायो महा मोद सो प्रमोद बनभूमि भूमि। नाचत मयूर मद उन्मद मयूरन को मधुर मनोज सुख चाखैं मुख चूमि चूमि। पण्डित प्रबीन मधुलम्पट मधुप पुञ्ज कुञ्जनमें मञ्जरी को लेत रस धूमि धूमि। हेली पैान प्रेरित नवेलोसी द्रुमन बेलिफैली फूल दोलनिमें झूलि रही झूमि झूमि ३० बल्लीको बितान मल्ली दल को बिछौना मंजु महल निकुञ्जहै प्रमोद बनराजको। भारी दरबार भिरी भैांरनकी भीर बैठी मदन दिवान इतिमाम काम काज को। पण्डित प्रवीन तजि मानिनी गुमान गढ़ हाजिर हुजूर सुनि कोकिल अवाज को। चोपदार चातक बिरद बढ़ि बोलै दर दौलत दराज महराज ऋतुराजको ३१ चन्दन चमेली चाप चौसर चढ़ाय चारु मधुमदनारेसारे न्यारेरसकारेहै। सुगति समीर मदस्वेद मकरंद बुन्द बसन पराग सो सुगन्ध गन्धधारेहै। बारन बिहीन सुनि मंजुल मलिन्द धुनि बलदेवकैसे पिकवारेलाजहारेहै। फूलमालवारे रति बल्लरी पसारेदेखो कन्तमतवारेकी बसन्तधूमधारेहै। ३२ फूलीमंजु मालतीनपै मलिन्द वृन्द बर सुरभित-

पेस्यो मन्दमधुर बहैसमीर । ललित लवंगनकी बल्लरी तमाल जाल लतिका कदम्बनकी देखे दूरिहोतपीर । बौंडी गुञ्ज पुञ्ज अति झौंडी झुकि झावयोबन केकी कुलकलित कपोत पिकबोलै कीर । भरे प्रेम प्रयासा प्रयामगारे भुज धरे दोऊ हरेहरे डोलतहैं तरणिा तनजा तीर ३३ चरचत चांदनी चयन चैन चुवो परै चैांधा सोलग्योहै चारोंओर चित्तचेतना । गुञ्जत मधुपवृन्द कुञ्जन में ठौरठौर शोर सुनिसुनिरह्योपरत निकेतना । शाम सुने कूकन करेजो कसकत आली कोकिल को कोऊ मुख मूँदि अब लेतना । अंतकरेडारत बसन्तहि बनाय हायकन्तहि बिदेशते बोलाय कोऊलेतना ३४ बरवै ॥ पात पात करि ढूंढ्यो सबबनबीनि । घटहि हुते मोबालम पस्योनचीनि । बालमसुरति बिसरिगैकहत संदेश । सकहु पथिक न बहुरा कस वहदेश ।बालम की सुधिआवत यहगति मोरि । निकसि निकसिजिय पयसत ज्यों चकडोरि । पातपात करलूटिसि बिपिन समाज । राजनीति यह कसि कसि कस ऋतुराज ३५ ॥ सवैया ॥ बसुधाधर में बसुधाधर में औ सुधाधर मेल्योसुधामेंलसै । अलिवृन्दन में अलिवृन्दन में अलिवृंदनसैं अतिशै सरसै । हियेहारन में हरहारन में हिमहारनमें रघुराजलसै । ब्रजआरन बारन बारन बारनबारनबारबसन्त बसै ३६ वृक्षन बल्लीचढी करि चोप अली अलिनी मधुपी मुदकारी । कोकिल सारिका कीर कपोत करैं धुनि माधुरी कानन चारी । फूले सबैबन

बाग तड़ाग भरे अनुराग पिया अरु प्यारी। चैन में चारु बिहारुकरैं दशरत्थकुमार बिदेह कुमारी ३७ कबित्त॥ सन सन डोलै पौनउन सन सूखयो सन सनसन अंग दुखसन होत हरि घरी। वनबन बीनिलीन्हेंबन बन ब्योरि ब्योरि बनत न बरगात क्योंहूं उरधरधरी। लेखराज ऊंखऊ पियूष सों बिशेष राखि नाहिं अन-मेख देखिदेखिकरकरबरी। अबअरबरी शरबरी मिलैं कैसे कन्त अरहरी अरहरी अरहरी अरहरी ३८ बन बने बानिक मेंबरगा बरगा फूले लोकनाथ ललित ल-तान छबि छाईहै। मंजु मंजु मंजरीन गुञ्जत मधुपपुञ्ज कुञ्जनमें कोकिला की कोकनि सुहाईहै। होरी होरी करत किशोरी दौरी खोरी खोरी गोरी चलतहांबल बल सुखदाईहै। लटकि लटकि कान्ह बांसुरी बजा-वत है येरी चलि देखिये बसन्त ऋतुआईहै ३९ हूस-नमें हूसन में लालमनमूसन सें मैन की मसूसनमें धीर कैसे रैहैरी। कोकिलकी कूकनि में पौन मन्द भूकनि में औसरकी चूकनिमें फेरि पछितैहैरी। बेलिन नवे-लिन में संगकी सहेलिन में खेलिनमें केलिनमें मनसा समैहैरी। वृन्दावन कुंजनमें फूलनके पुञ्जन में भौंरन की गुञ्जन में भूलि मान जैहैरी ४०॥ सवैया॥ को-मल कञ्जन की कलिका अलिकाहेन चित्त तहां त रमायो। मञ्जरीमंजु रसालनकी तिनको रसक्यों नहिं तो मन भायो। फूलतीं औरें अनेक लता हरिदास जू आयोबसन्त सोहायो॥ छोड़ि गुलाबन को बनतूकट-

मैरुवापै किधौं कारण आयो ४१ ॥ कवित्त ॥ गुञ्जरन लागी भौंर भौंरें केलि कुञ्जन में कैलियाके मुखते कुहूकनि कढ़ैलगी। द्विजदेव तैसे कछु गहब गुलाबन ते चहकि चहूंघा चटकाहटि बढ़ै लगी। लागो सरसावन मनोज निज ओजरति बिरह सतावनकी बतियां कढ़ै लगी। होन लागी प्रीति रीति बहुरि नईसी नवनेह उनईसी मति मोहसी मढ़ैलगी ४२ प्रथम बसन्त पिय आवनको आस है जो आवत हों आवैं तो बुलाऊं करजोर ज़ोर। नाहीं तो समीप होनपावै ना बहारदार झिझिर पुकारो राखो याको मन मोर मोर। परसि पलाशन रसालन प्रसूनबेलि खिलन न पावैं अलिकीजै कृपा थोर थोर। बचूराम त्रिबिध समीर बेग दूरिकरो भृङ्गी पिक हटको न शोर करैं घोरघोर ४३ बीथिन सघन अति बीथिनमें बोलैंपिक तैसई रह्यो है घेरि बिरहा इतै उतै। दूजे भई केसरि समान भुवि पीतमयी पहिरे बसन्ती चीर सखियां जितै तितै। सीरी सुखदायक समीर लै प्रसून बास आवत हमारे हिय बेधत नितै नितै। बचूराम बावरी भईहौं मैं बिहारीबिन पीलीभई देह पीलीपीली को चितै चितै ४४ ॥ सवैया ॥ मिलि माधवीआदिक फूल केब्याज बिनोदलवा बरसायो करैं। रचि नाच लता गन तानि बितान सबै बिधि चित्त चुरायोकरैं। द्विजदेवजू देखि अनोखी प्रभा अलि चारन कीरति गायोकरैं। चिरजीवो बसन्त सदा द्विजदेव प्रसूनन की

झरिलायो करै ४५ ॥ कबित ॥ कोकिल नकीब औ पपीहा चोबदार दार भवँर नफीरैकीरै मंदमंदगायो है। गुटक कपोत गोत ताल मानो तबलन की अबलन की जाति भांति मोरवा नचायोहै। तूतो तालदेत भाव भाखत भुजंगी भेद चातक उतारै राई लोन को बनायोहै। मदन महीपतिके मनीराम माघसुदीपंचमी को दयाहन बसन्त ऋतु आयो है ४६ गावैं राग बाणी बरमानो सुधासानी मुनिमोहै सब ज्ञानीध्यानी ध्यानी अलसन्तरी। केसर कुसुम्भ रंग कंचनके जन्त्र भरे झोरीभरिरोरी औगुलालबरसन्तरी। चोवा और अतर फुलेलके फुहारे चलैं मलैदेव मीड़ै मुख सुरसोह सन्तरी। मनीराम माघसुदी पंचमी पियारे कान्ह साजि ब्रजराज आजु खेलत बसन्तरी ४७ ॥ सवैया ॥ जादिनते परदेश गयेपिय तादिनतेतनुतापसी दौरत। आवते बेगिइतै नँदरामजू देखते बागबसन्त समौरत। चन्द उदोत न होतउतै अरविन्द मलिन्दके वृन्दनझोरत। याही अँदेश महामन में सखिका वहिदेश नहीं बन बौरत २४८ ॥

ग्रीष्म ऋतु के कबित्त व सवैया २ ॥

कबित्त ॥ ग्रीषम प्रचण्डघामचण्डकर मण्डल ते उमड़्यो है देव भूमि मण्डल अखण्ड धार। भौनतेनिकुञ्जभौन लहलही डारनह्वै दुलहीसिधारी उलहीज्यों लहलही डार। नूतन महल नूल पल्लवन छ्वै छ्वै सेद जलनिसुखावत पवनउपबनसार। तनकतनक मणिक-

झनक नुपुरपाय आयगई झनकझनक झनकायेबार१॥ सवैया॥ ग्रीषममें तपै भीषम भानु गईबनकुञ्ज सखीन केभूलसों। घामतेकामलता मुरझानी बयारिकरैघन- श्याम दुकूलसों। कम्पति औ प्रकटै परस्वेद उरोजन दत्तजु ठोढ़ी के मूलसों। ह्वै अरबिन्द कलीन पै मान झरै मकरन्द गुलाब के फूलसों २॥ कबित्त॥ भरियत गहरे गुलाब हद हौदन सुधारियत रजत फुहारे तदबीर के। ढरियत ढारन हुढारन नहरनीर ढरियत घनसार के। करियत तर अतरनसों बिछौना क- पारद गँभीरके। चन्दन पलँग बिशोभजू उघरियत बातायनतीर के। चन्दन पलँग अरबिन्दनकी सेजपर सुन्दरि सिधारी आज मन्दिर उशीर के ३ बर्बरात बैहरि प्रचण्ड खण्ड मण्डल पै दर्बरात धूपनकी द्युतिपीनअर्फरात। झर्झरातपवनके झोकआये अर्र्रात खर्खरातपातपात वृक्षनते झर्फ- रात। भर्भरात भामिन भवन मांझ बैठी जाय हर्बरात हायहाय पीवपीव बर्बरात। कहैं बचूराम छिर्नाछिन- कमें चुर्भुरात जलबिन मीन जैसे सेजहूपै फर्फरात ४ प्रीतम न आये जाय कूबजा गृह छाये ऊधो पाती लै आये यहां ग्रीषम की हूकहै। पवन झहराने धूल लागी फहराने अबकाम शरताने हिय बेधत अधूक है। सूर्य्यकी चमक दूजे घामकी धमक तीजे लहकी रसकतेउठत तन बूकहै। कहैं बचूराम चोली चीरना सुहाय अब बिना मिलेश्यामके कलेजा टूक टूकहै ५ सीरे तहखाने तामें खासे खसखाने सोंधे अतर गुलाब

की बयारैं रपटत हैं। भूधर सवाँरे हौद छूटत फुहारे और बारे भारे तावदान धूप दपटत हैं॥ ऐसेसमै गौन कहु कैसे के बनै तो प्यारे सुधाके तरङ्ग प्यारो अङ्ग लपटत हैं। चन्दन किवार घनसार की पगारदई तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटत हैं ६ शीतल गुलाब जलभरि चहबचन में डारिके कमलदल न्हायबे को धसिये। अंकभरि प्यारीनेह नदिन सुदिनभरि बारिके बिहारतेन बाहिर निकसिये। कालिदास अंग अंग अगर अतरसंग केसर समीरनीर घनसार घसिये। जेठ में गोबिन्दलाल चन्दनके चहलन भरिभरि गोकुल के महलन बसिये ७ खासे खसखाने खासेखाने तहखा-ने नतछूटत सरोजकी सुगंध लपटीरहै। अतर अरगजे सों केसर गुलाब नीर छिरके किवांरद्वार झारझपटी रहै। कृष्णालाल जेठमें गमन कैसे कीजै प्यारे चन्दन मलैके पंक अंक दपटी रहै। ज्वाल उदभटी कुचवटी कामगटी तटौहटी मरहटी नटी लटी लपटीरहै ८ अमल अटारी चित्रसारी वारी रावटीमें बारह दुवारी में के-वांरी गन्धसार की। कामानल छायरह्यो चांदनी बिछौना पर छबि फबिरही क्षीरसागर कुमार की। श्रीपति गुलाबवारे छूटत फुहारे प्यारे लपटैं चलत तर अतर बयार की। भयता नेवारी घनसार भीजि सारीझार तऊना बुझानी नेक ग्रीषम के झारकी ९ चोवा चौक चांदनी चंदेवाचिकै चौकी चौक चम्पक चंपावली चमेली चारु चौजहै। खासेखस फरस उसीर

खसखानिन में पउन कपूर चन्दनादि करि चौज है। लालीलखि ललित ललीके लाल लोइनमें अमल गुलाबदल सलत उरोजहै। अवनिअशीतलपै ग्रीषमतपीत लपै पिय हाथहीतलपै शीतल सरोजहै १० ॥ सवैया ॥ शीतलता ते सिराने महा तहखाने नये खसखाने बने हैं। सैन सवाँरे सनोते फुहारे अपारे कतारे छुटै अँगने हैं। श्री रघुराज तहाँ यदुराज सखीन समाज लै मोदसनेहैं। ग्रीषम जानि महे सुखदानि सुरूविमानिसों इति बानिभनेहैं ११ ऊँची अटानि अनन्द सों सोइबो सींचिबो सीकरसौरभसानै। मंजुमयंक मरीचिन सेइबो लेइबो तू अधरामृत पानै। श्री रघुराज सदा सुनिबो सजनीन समाजमें सुन्दर गानै। ग्रीषमऋतु बिरहीन को भीषम तीखन तापको मानौबिलानै १२ ॥कबित॥ तातो होत तन और सूखिजाति मुख ज्योति अंग अकुलात चित्त अधिको भवतुहै। जैयतु उसीर भौन लागत न नीको पौन ओला घनसारघनो चन्दन अमितुहै। सीरेहूयतन याते कीनेहैं अनेकभांति तापर तिहारी सौंह दुखनाघटतुहै। जानत हैं। ब्याप्यो तोहिं बिरह प्रसिद्ध आली नायक है कोऊ नाहीं ग्रीषम की ऋतुहै १३ चन्दन चहल चोवा चांदनी चंदेवा चारुघनो घनसार घेरिसींच महबूबी के। अतर उसीरसीर सौरभ गुलाब नीर गजब गुजारैं अंग अजब अजूबी के। फेरन फबत फैलि फूलन फरश तामें फूलसी फबीहै बालसुन्दर सुखूबीके। बिशद बिताने ताने तामें तहखाने बीच बैठी

खसखानेमें खजाने खोलि खूबीके १४ आंचाँसी अव निधुंधी धूपरूप धूमकेतु आंधी अन्धकूपडारै लोचन अनैसेके। जमकू जलाकन की नाकन की लोहू चलै व्याकुल जगत सांझपावें जैसे तैसेके। लोकपति लूकसे उलूकसेलुकतवेनी कुञ्जछाया जहांतहांछाइरहीऐसेके। कोठरीतखाने खसखाने जलखाने बिनग्रीषमके वासर व्यतीत होंय कैसेके १५ धौंरहरधौल धूपधापहूंधसै न जामें चहुंघा दुआरके सुगन्ध सारशालासे। सशिमा दीपमालामणि भूषणा बलितआला खासेपरयंक बासे सुमननि मालासे। व्यजन उशीर नीर मलयज समोये हैं परसत समीरहै सरस शीतकालासे। जिनहेत बिरचे बिरञ्चि हैं मसाला ऐसे व्यथित न होतते निदाघजात ज्वालासे १६ चन्दन चहल चित्रमहलहिदेश गोहेरम वतियानसों प्रमोद सखियानमें। खासे खस फरश फुहारे फूही फैल फैल फैल भरशीतल समीर छतियान में। गोरेगातसोहै गरे गजरा चमेलिनके गोहेवर सुघर सहेली अति स्यानमें। गोदते उरोज करपरश गुलाब जल छिरकत लाड़िलो लली की अंखियानमें १७ सुमन सवांरे भारे भौंरन उशीरवारे छूटत फुहारे नीर वारेकी शलाकेरी। कहै गिरिधारी सची चन्दन की पंक परयंक पर पंक कीन बहुरि चलाकैरी। ऐसे में ललन परदेशको गमन कह्यो तरशिाधरशिा देततरशिा तलाकैरी। चहुंओर अतर गुलाब सरबोरो सखी धाई बरजोरीतऊ जेठकी जलाकैरी १८ धाईहैं धरशिा धूप

दँदकि अँगार जैसे पवन प्रचण्ड लूक लागे दिशि द-सते । बेली द्रुम कूपताल कुण्डनके सोत सूखे रूखे भे कुरंग देहफूँकेंबोरि पसते । प्रीतम सुजानजान कैसेके पयान कोजे शीतल सुगन्ध सीँचिराखी बोरि रसते । तातकीकमाई वित्त बहुतमँगाइदेहैं बँगलाछवायदेहैं तुम्हें खासेखसते १९ ग्रीषम तपत परचण्ड नवखण्ड मध्यहूहभरेलालेलालेलूहन लुकारेहैं । तीरकेसे तीषण समीर सरसात आलीमानो आजबरसत अंगनअँगारेहैं । ऊबिऊबि आवैं सांस ज्योंज्यों अध ऊरध उसासें उप-सोयेकसो पूरण पनारेहैं । सूखे सर सरिता अपार जग मोहनजू दिनबिपरीते रीते नदी नद नारे हैं २० झांपें झुकी झपटें झरोखनकी झांझरीकी झोंकन खुलैन कहूं खसखसकी टाटीसों । आँगन के ऊपर अँगूरकी लगायो लताछिरकें छबीली छीरछीटनकी छाटीसों । आयोऋतुग्रीषम गरूरजग मोहनजू बगरिबगाख्यो बार बेलिनकी बाटीसों । अगर उसीरनीर सौरभसमीरसीरे सुखद सवांरे सेजशीतल की पाटीसों २१ खासे खस खाने सींचे अतर गुलाबनसों सीरे तहखानेचारु चंदन चहलहैं । कलित कपूरनके चौतरेचुनेहैं तीन मोदवारे मालतीके मंजुल महलहैं । पन्नाकेपलँग रँगपरदाफि-रोज़ा धरे बेलनकी पांखुरीसों परश पहलहैं । ग्रीषम के गरमगरूर जगमोहनजू दूरदरशात इतचोवन चहल हैं २२ गाढे गन्धसारन घनेरघनसार आली घोरिघोरि आजु मेरे बगर बगारिदे । त्योंहीं तहखानन में खासे

खसखानन में अतर गुलाबके फुहारन फुहारिदे। बेली
के बिछौना पै सिधारि सखिसलापान आछे मृगमद
सों अमोद उदगारिदे। जौ लौं जग मोहन बिराजैं इत
बीर तौलौं बाहर सों बैठि बलिहथ्यजना सँभारिदे २३
घोरि घनसारन घनेरे गन्धसार आली भारन दै अमल
अमोद अंगरागौना। खासेखसखानन खुसीस खुशबूके
नीर नहरैं निराली नई रातौ दिन पागौना। शीतल
रहैगो जगमोहन तपीत लागो गरम गरूर लैलैहीतल
को भागौना। बाल कैसी पूतरी समेटि अंगमाल कोउ
जौलौं नव बालकी रसाल उरलागौना २४ तावरीतपन
ताप ज्वाला सों न बिरहीन छीन ह्वैरहीं हैं आपनो
ईयेकुभावरी। भावरी सजन मध्यजासों सब राजीरहैं
नेकलूह लपटसों घटना जरावरी। रावरी न मानिहै
सनेह नेह मेरो कह्यो देहमें प्रवेशि बारि बाती को
लगावरी। गावरी बजावरी सुबन्दी मनभावरीपै येरी
बीर ग्रीषम तू मोहिं ना सतावरी २५ बिकल सकल
जल थलनके जीवहोत जेठकी ज्वालानिमेंपुहुमीतपति
है। सरिता सरोवर रसाल जलहीनभये सूखै तरूपशु-
हूपखेरून बिपतिहै। ग्रीषम तपनि दूजे बिरह तपनि
बाढ़ीतापै यह लपटि झपटि लपटति है। सीरे उप-
चारन ते जारत अनंग अंग पिय बिन मान याको कैसे
कै रहतिहै २६ ॥ सवैया ॥ आतप ताप तपै रबिमण्डल
तापित तात ततोजल आजहै। तापित बायुबहैबड़सोख
सो सोखित कूपतड़ागनलाजहै। भूमितचैतजि आपनो

भाव दुखी बन बालऊ ऊंख सुराजहै। हैं महिषीहू कलेशित बारि की शालिकराम सो ग्रीषम साजहै २७ देखेपथी अति व्याकुल लूकसों बांहहु देखि लजाय के भाजहैं। बौंडोहू घास जरीजड़ सें सब बंधेहू बन्द धनीन के काजहैं। मूंड़पैभानु चितै अति कोपित धूप धुपाली के बाजन बाजहैं। छोटी निशादिन भारीरहै द्विजशालिकराम सो ग्रीषमसाज हैं २८॥ कबित॥ सूबह असिसटंट सब निजसाजे मध्य रात्रि युगयाम प्रभु तहसीलदारीहै। शालिग्राम डिपुटीकमिश्नरसो आंधी मानो आदि अन्तरात्रि यामखेक्टरा बिचारीहै। मन्द मन्द दिनघाम साहब कमिश्नर औ तेज मध्य दिनघाम फनासिल कारीहै। लूक को लपाकोसोतो चीफ़ अहै सबकेरो ग्रीषमके लाटकी सवारी अति भारीहै २९ द्वारन पै खसकेरी टट्टियां चुवतजल अन्दर सुपेदपर्यंकहु तहांपरो। बालाऔर भोजन जेंवायपति अति हित शालग्राम बर्फलै सुराही मध्यतें भरो। पानन के बीराहू खवाय पतिखाय आपु मन्दमन्दमारुत डुलावै नींद मेंगरो। सुख सरसात दिन दुखना दिखात कहुँ बिधिऐसी ग्रीषमको दूरिना कबौं करो ३० दिनकर जोरतपैं घाम नहिं देखो जाय आँधी और आगने तो उधके निदादई। पन्थमें पथिकसब लूकसों मरतजात जीव अति व्याकुलोसो अईही गिजालई। भोगी तहखानेपरे मारुत झुलावें जन ताहूपर आबताब तनसों जुदाभई। धर्मकर्म आपने जनावें जाके जैसेहैयँ शाल-

ग्राम ग्रीषमसों आजसों बिदाभई ३१ ॥ सवैया ॥ देहतचो
बिरहानलसों अति ऊरध श्वासहि पौनबढ़ाई। मुक्तव-
लाकनकी अवली बलदेव कहै सुखमासरसाई। श्याम
घटासमकारी लसैं द्युति दामिनि त्यों बरदन्त न पाई।
भीषम बुन्दगिरैं दृगसों ऋतुग्रीषममें बरषाऋतुआई ३२
कवित्त॥ सुमनसुगन्धशुचि सुरभीसमीरसेत शीतलसमाज
साज सकल बनाये हैं। नहर नदीनिकट खूबखसखाने
जाने खिरकी झरोखा खोलि खासदानलाये हैं। तर
करि चतर तमोल तान तामदान भान को समान सो
प्रमानकै दुराये हैं। द्विजबलदेव कहै बरफ बिछायबर
बारिके फुहारे औ बितान बेलिताये हैं ३३ सुनतसना-
के यमुना के नाके ताके सब ग्रीषमसे ढाके सुखमाके
निजगातना। द्विज बलदेव जलदेव कलदेव कहै जल
जल जात जल जात जल जातना। मन अनुमान हरि
साजो यों समान दिनदीपमान भानकीप्रमान दरशात
ना। गुंधि गुलगजरे गुलाबन सों गलकाय गलिन में
गरमीकी गरद लखातना ३४ नदिनमें नारनमें नारँगी
अनारन में नवल निवारनमें तौरबदलेगये। नन्दरास
ग्रीषम गुसामें गरमी में गैल गहब गुलाबनसों अंगभस
लेगये। ऊसर के अंगन में नीर नदी रंगनमें तरल तर-
गन में हरिनछलेगये। हेम गिरि मन्दर में हिमगिरि
के कन्दर में अन्दर के अन्दरमें बन्दर चलेगये ३५
चौकमें चटक चांदनी में चारुसेज सारु नारन के ऊ-
परसेबारन बिछाय दे। चन्दन की चहल चमेली के

श्रतर घोरि घने घन सारन चहूंघा छिरकायदे। कहै नन्दराम तैसे बोरिके सुगन्धनसों हौरे हौरे बेगि बेश बीजना डोलायदे। गहगहे गहब गुलाबन के गंजगुहि गजरा गरेगरू गुलाब गलकायदे ३६ जीवन को शोश कर ज्वाल को प्रकाश कर भोरही ते आशकर आसमान छायो है। धमका धमक धूप सूखत तलाब कूप पौनको न गौन भौन आगि में तचायो है। तकि थकि रहे जकि सकल बिहालहाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायोहै। मेरेजान काहूवृषभान जगलोचन को तोसरो त्रिलोचनको लोचन खुलायोहै ३७ जेये बिना जीरनसो जलको जिकिरजोभ अद्योजात जगत जला-कनके जोरते। कूप सरसरिता सुखाय सिकता में भई धाई धूर धौरन धराधरके ओरते। बेणी कबि कहत अनात पचहत सब अगिनसों आतप प्रकाश चहुँओर ते। तावासों तपत धरामण्डल अखण्डल सो मार्त्तण्ड मण्डल दवासो होतभोरते ३८ धुधुरे दिगन्त भये बि-गत बसन्त आली ग्रीषम बिषमदिन काहूना सुहातहैं। तैसेही प्रचण्ड मार्त्तण्ड नवोखण्डतपैं बलित बवण्डर बहत चारोंबातहैं। सूखे से लगतद्रुम रूखेभूखे सलिल से भंजन भयावन महाबन भुरातहैं। आवा सो जगत भयो तावासी तपति भूमि दावा भरे भूधर पजावा से सुवातहैं ३९ ग्रीषम में भीषमह्वै तपत सहसकर वापी तारे नारे नदो नद सूखि जातहैं। झंझा पौन झरपि झरपि झकझोरि झोरि धूरिधार धूसरे दिगन्तन

दिखातहैं। श्रीपति सुकवि कहै आली बनमाली बिन खाली जगमोहिं कैसे बासर बिहातहैं। तावासों अजिर पग लावा सोतचतघर भयो गिरि आवा सो पजावासो धुवातहैं ४२ प्रबल प्रचण्डचण्ड करकी किरणिदेखो बैं हरउदण्ड नवखण्ड धुंसिल्लतिहै। औटिके कराही रतनाकरको तेल जैसे नैनकवि जल को लहरि उछ-लति है। ग्रीषम की कठिन कराल ज्वाल जागी यह काल व्याल मुखहू की देह पघिलति है। लूका भयो आसमान भूधर भभूका भयो भभकि भभकि भूमि दावा उगिलतिहै ४३ उछरि उछरि भेकी छपटैं उरगपै उरग पगकेकिनके लपटैं लहकिहै। केकिनकी सूरति जिये कीना कछूहै भये एकी करि केहरिन बोलत बहकि है। कहै कवि ब्रह्मचारि हेरत हरिणफिरैं बैहर बहति बड़े जोर सों जहकि है। तरणि के तावन तवासी भई भूमिरही दशहू दिशान में दवासी यों दहकि है ४४ सेनापति तपनि तपत उतपति तैसो छायो रतिपति ताते बिरहबरतुहै। लूवन की लपटैं ते चहूँ ओर झ-पटैं यों ओढे सलिलपटैं नचैन उपजतुहै। गगन गरद धुंधि दशोंदिशा रही रूंधि मानो नभ भार की भसम बरसतुहै। वरणिबताई क्षिति व्योमकी तताई जेठआयो आततार्इ पुटपाक सों करतु है ४५ सेनापति उवैं दिन-करके चलतलुवैं नदनदी कुवैंकोपि डारत सुखायकै। चलत पवन मुरझात उपबनबन लाग्योहै तवन डार्‌यो भूतलौ तचायकै। भीषम तपत ऋतु ग्रीषम सकुचि ताते

शीतहै कछूक तहखाननमें जायके । मानो शीतकाल शीतलताके जमाइबेको राख्योहै बिरंचिबीज धरामें धरायके ४६ चएडकर भारन भकोरत सरोष पौन तोरत तमालगन मदन्दन भारोसो । धमकैधरणिगिरि तमकै प्रतापजाको देखत मजेजरेज जगत निहारो सो । तरुक्षीणछाया सरसोखत समुद्रबन करनबिचारदेखो आतप अगारोसो । छावत गगनधूरि धावत धधात आवै चापचढ्यो ग्रीषम गयंद मतवारो सो ४७ श्रोब-रिन दोबरिन तहखाने खसखाने आपने बचायबे को फिरैं मैं तरसिके । रघुनाथ की दोहाई पैयत न कहूं कल लागतही बिहवल होतिहैं अरसिके । आजके पवनकी व्यवस्था कौनकौन कहैं आवतहै तरणिकि-रणिको गरसिके । मलयके सांपनके बिषको करषि कैकि दावामें झरसिकै कि बाड़व परसिकै ४८ वृष को तरणितेज सहसो किरणकरि ज्वालनके जाल बिकराल बरसतुहै । तचति धरनि जग जरत झरनि सीरी छांहको पकरि पंथी पंछो बिरमतुहै । सेनापति नेक दुपहरीके ढरतहोत धमका बिषम योंनपात खर-कतुहै । मेरेजान पौनोसीरी ठौरको पकरिकोनोघरी एकु बैठि कहूं घामै बितवतुहै ४९ घोरि घनसारन ते सखिन कचूरचूर लीपे तहखाने सुख दीवेको दुरएड की । तामें खसखाने बने उजरेबिताने सुरभौनकी समानै जे निदानै ठानै ठण्डकी । बहत गुलाब को सुगन्ध के समीरसने परत फुईहैं जलयन्त्रनके तएडकी । बिशद

उसीरनके फोर परदान प्यारे तऊआनि बेधत मरीचैं मारतण्डकी ५० सीनाबीच ह्वैकर पसीना की बहत धार झीनाभयो जलुमन नैनहूंसों घरमी । सेवक भनत पौन पानीते कढ़ति आगि दागिजैये परसिन होत कबौं नरमी ॥ खसखाने रसखाने गये ह्वै अतसखाने कसखाने बैठिकहो पूजै होसहरमी । ईयमसो ह्वैरहो नहीयमपरतभूरि भीयमभईहैगाढ़ ग्रीषमकीगरमी ५१ सीरे तहखाने तामेंखासे खसखाने सींचे अतर गुलाब की बयार दपटतिहै । भूधर सुधारे हौज छूटत फुहारे भारे बारे तापदाननमें धूपदपटतिहै । ऐसेमें गवन कहो कैसेके कीजियत सुवासी तरंगप्यारी अङ्ग लपटतिहै । चंदनकिवार घनसारके पगारबीच तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटति है ५२ अम्बर अतरतर चन्द्रकच हल्लतन चंदमुखी चन्दन महलमैन सालासे। खासेखस खाने तहखाने तरताने तने ऊजरे बितानेछुये लागतहैं पालासे ॥ दत्तकहै ग्रीषम गरमकी भरमकौन जिनके गुलाब आबहौज भरे तालासे । झाला से झरत झर झांपनसी बाराबांधे धाराबांधि छूटत फुहारा मेघ मालासे ५३ चादर चहूंघा शिशिरादर मचाइ गिरैं नहर निरादरलौं जातिकम्पसानेमें । केतेजलयंत्रशीत यंत्रसे सलैके चलैं बीजन स्वतंत्रके तुषार मंत्रमाने में । फरद फुहारनते ग्रीषम गरद कीन्हो सेवक त्यों शरद सुबासदे खजानेमें । संग नवलाके मनमोहन अनंगराचे माचे रसरंगकी तरंग खसखानेमें ५४ दशौंदिशि तची

अवलोकियत ग्रीषम में जल थल बिकल अवनि सब थहरी। अमृत के पुञ्ज दोऊ औचक मिले हैं कुञ्ज द्रुम बेली नीकी तकि छांह छबि गहरी। राधे हरि भूलि पतरूप छाक सखीसुख रसके समुद्र बढ़ी अनुरागलहरी। चन्द्रमासें लाग्यो भानु चांदनीसी लागी धूप शरदकी रातिभई जठकी दुपहरी ५५ क्षिति जल अम्बर दशोंदिशा तचीईजात नेकु न सुहात सब बन बेलि झरसी। सीरीहू उसीरन को टाटी आवटीही जात साटीकर नारीहून नेक जात परसी। ता छिनही आये कुंजभौनमें कहूंते श्याम चाँदनीसी लागी घाम सरज लग्यो शसी। दीरघ निदाघ के दिवस घटिका सी लाग्यो होत न ब्यतीत जानि छनदा छनकसी ५६ चन्दनमहलमध्य चन्द्रक चहलचारु चाँदनीसी चिकैं चन्द चाँदनी सुहाईहै। तर अतरन बीर बिजन बयार नीर नहर बिमलबारि चौगृद चलाईहै। रजतफुहारन की परत फुहीहै तहाँ परमानद गुलाब की गिलंबिछाईहै। ग्रीषम गरमधर्म पावै क्यों प्रवेश तहाँ जहाँ महराज ब्रजराजकी अवाईहै ५७ कमल बिछाये बर बिमल बितानछाये छबिभरे छज्जे दरवज्जे महराबके। घने घनसारके सवाँरे सखिहौज तामें छूटत फुहारेभारे केसरिके आबके। सौंधी सेज सुमन शिँगार अंगराग होत राग रंग भारे सुरसरसहिताबके। चन्दनकी खौर बेंदी बन्दन बनाय बैठे राधिका गोबिन्द आज मन्दिर गुलाबके ५८ खासे खासे खुले खसखाने खुशबोई

दार आसपास छुटतफुहारे बड़ेताबके। गिरिधारी फ-
रश सवाँरी तहाँ फूलन की परेदर परदा दरीचिनमें
दाबके। चन्दन भिगोये सुखसोये श्यामाश्याम तामें
ग्रीषममें ऊषम हेरानी आवताबके। गहबगलफगुल-
गुली गुल सुईचारु गिलिम गलीचेतर अतर गुलाबके
५९ भरियत गहरे गुलाब हद हौदन सुधरियत रजत
फुहारे तदबीरके। ढरियत ढारन सुढारन नहर नीर
दरियत घनसार शरद गँभीरके। करियत तरअतरन
सों बिछौना कबि शोभजू उघरियत बातायन नीरके।
चन्दन पलँग अरबिन्दनकी सेज पर सुन्दरी सिधारी
आजु मन्दिर उसीरके ६० रावटी उसीर बिछी शीत-
लपटीरबीर तीर तीर त्रिबिध समीर झपटत जाति।
चन्दन कपूर लिपी दहरैं सुगन्ध भूमि फहरैं दुहूं के
पटचित चपटत जाति। छूटत गुलाबभरे ललितफुहारे
भारे परत फुहीकेही के रंग रपटत जाति। सरकिसु
शोचि सकुचाय यशवन्त अंक सरकि सलोनी शशि
मुखी लपटत जाति ६१ हौद बीच पलिका पै राजत
रसिक दोऊ चहूं ओर छूटैं जलयंत्र त्यों सहमहात।
लागिकै गुलाबनीर फिरत फुहार अंग रंग बैढिवैनमैन
नैनंनि डहडहात। सगबगे बारछूटि रहीलटैं आनन पै
रगमगे रागतान बीनामें गहगहात। रीझैं भीजैं लप-
टात जातगात बातलगि प्रेमके तमाल नेह बेली ज्यों
लहलहात ६२ शीतल महल्ल महा शीतलपटीर पंक
शीतलकै लीप्यो भीति क्षिति छाति दहरैं। शीतल

सलिलभरे शीतल बिमलकुंड शीतल अमल जल यंत्र धारा छहरैं। शीतल बिछौननिपै शीतल बिछाइ सेज शीतल दुकूलपैन्हि पौढ़हैं दुपहरैं। देवदोऊ शीतल अलिंगननि देतलेत शीतल सुगन्धमन्द मारुतकी लहरैं ६३ दोऊ अनुरागभरे आये रंग भौनभाग मघवाश्चीको लखि लागत सहलहै। बैठे एक आसनपै एकै संग एकै रंग चल्योना परत अंग कोमल कहलहै। एकनलै अतर लगायो देव दुहुँन के छिरकि गुलाब कीन्हो बिजन बहलहै। लैके करबीनै परबीनै अलियां अलापैं मञ्जु सुर पुञ्जन ते गुञ्जत महल है ६४ माधोधाम तचो भूमि तैसी कामधाम धूम प्यारे बन वारी जू न जैये बनवारी मैं। उबटि कपूरचारु चरचि के चन्दनसों छूटत फुहारे सुख सेजन सवाँरीमैं। भूधर सुकबि कहूं रबिसों न हेस्यो लाल प्यारी अंग संग रंगरीझिरीझि वारीमैं। बसो दुपहर रतिखाने बाला खाने बीच भोर होत भौन में अथोत फूलवारी में ६५ आईचलिचन्दमुखी चांदनी महलशोभ चमकत बादला बसन बितरनसों। चांदीकी फुहारनते फैलत फुही हैं फूलसेजपर दंपति छकतरस रनसों। बाजैं बीनबाद कलहंसन अबादकिये नूपुरनि नादवे धरन उतरनसों। सरभये सौतिनके सतरमनोरथ री तरभये पंथके गुलाब अतरन सों ६६ फहरैं फुहारे नीर नहरैं नदीसी बहैं छहरैं छबिनछाम छीटनकी छाटी हैं। कहैं पदमाकर ज्यों जेठकी जलाकैं जहांपावैं क्यों प्रवेश बेश बेलिन

की बाटीहैं। बारहूदरीन बीच चारहू तरफ़तैसी बरफ़ बिछाई तापै शीतल सुपाटीहैं। गज़क अँगूरकी अँगूर से ऊँचे हैं कुच आसव अँगूर को अँगूरही की टाटी हैं ६७ तपै इत जेठ जगजात है जरत जासों ताप की तरनि मानो भरनि करतहै। इतही असाढ़ उठे नूतन सघन घनशीतल समीर हिय हीतल भरतहै। आधेअंग ज्वालन के जाल बिकराल आधे सुखद समोद हिय धीरज धरतहै। सेनापति ग्रीषम तपत ऋतु भीषम दै मानो बड़वानलसों वारिधि बरतहै ६८ चलैलूक पवन लुकारी जनुसम्बतके मानो भालुजुरे देहमुख जुरे बाघ के। मारतंड तेजसे बिकल भये जलथल रावटीउसीर राजा जाने निशि माघके। पीयेपीये करत जहानरहे रातौदिन सरिता तलाव आब पीपीपाये दाघके। भनत दिवाकर अनलते अधिक आंच कांच चुपेकांकरी दुपहरी निदाघके ६९ ॥ सवैया ॥ ऋतुग्रीषमकी प्रति बासरकेशव खेलतहैं यमुना जलमें। इत गोपसुता वहि पार गोपाल बिराजत गोपिनके गलमें। अतिबूड़ति है गति मीनन की मिलिजाय उठैं अपने थलमें। यहि भांति मनोरथ पूरिदोऊ जनदूरिरहैं छबिसोंछलमें ७०
कबित्त ॥ चलति उसास की झकोरघोर चहूँओर नहींहै समीर जोर मुखाकहैं लोगहै। शोचनकी लहरें न ठहरें सकोचन ते रबिकरहोय नहीं प्रयामहै धुसोगहै। मृगनभ्रमतमेरेमनके मनोरथये फेरैनहिं फिरैंलगी प्रीति तृषाकोगहै। धीरधरैंबीर कैसे तपत उसीर भीननाहीं

यह ग्रीषमरी भीषम बियोग है ७१ पतित दुजन को है देति सुमनैं सुखाय लगैं अति काननमें बात तापमें बली । मित्र वृषकोहै जहांभारी दुखकारी बनो बोलैं दूगरातेबिन काल वृथाहोछली । जीवन जलावर्ति है लावर्तिहै आगि मनो दीनद्याल सारस न मिलैं जलकी थली । देत नाहिं बसन सुबसन उतारबिन किधैं यह ग्रीषमकैं घोरखल मराडली ७२ ॥

पावसऋतुके कबित्त व सवैया ३ ॥

कबित ॥ कंटकित होत गात बिपिन समाज देखे हरीहरी भूमिहेरि हियो लरजतुहै । निपट चवाईभाई बन्धु जे बसत गांउ दांउ परे जानिकै न कोऊ बरजतु है। एते पै करखाध्वनि परत मयूरनकी चातकपुकारि तेहताप सरजतुहै । अरजो न मानी तू नगर जो चलति बेर एरे घनबैरी अब काहे गरजतुहै १ ॥ सवैया ॥ बरसैं बनकुंजन पुंजलतासिकमंजु मयूरनको सरसैं । मधुघोर किशोरकरैं घनये चपलाचलचारु कला दरसैं । अलि हो बलतू चल बेगि हहा उततो बिनप्राण पियातरसैं । उमड़ैं दुमड़ैं घुमड़ैं घन आज मिही बुंदियान मड़ो बरसैं २ ॥ कबित ॥ पौनहहराई बनबेली थहराई लहराई सौरभ कन्द बनन की सानते । झिल्ली झुननाई पिक चातक चिचयाई उठै बिज्जु छहराई छाई कठिन छ-पान ते । कहैं परमेश चमकत जुगनू नचाय मेरे मन आई ऐसी उक्ति अनुसानते । बिरही दुखारे तिन पर क्रूरदई मारेमानो मेघबरसत अँगारे आसमानते ३ उठत

पहारे घनकारे सारे बद्दलके कज्जलते कारे धुधकारे देत दामिनी। छूटत छरारे ते करारे बुंद बरसत भारे अन्धकारे अटा लागत भयावनी। मोरवा कुहूंके झोर शोर पिककूकें बंद मराडुक धधूकें सोचुहूंके कोकिलाघनी। कन्तबिन कामिनी बिरह सरसावनी सो लागेडर पावनीय भादौंकेरी यामिनी ४ नीलपटतनुपै घटानसी घुमाई राखेंदन्तकी चमकसों छटासी बिचरतिहैं। हीरनकी किरनै लगाइ राखे जुगुनुसी कोकिला पपीहा पिकबानी सो ढरतिहैं। कीच अंशुवानकी मचाऊं कवि देवकहै प्रीतम बिदेशहैं सिधारिबो हरतिहैं। इन्द्र केसों धनुसाजि बेसरि कसति आजु रहुरे बसन्त तोहिं पावस करतिहैं ५ घनको घमंक औ बनक बक पांतिन की बीजुरीचमककर बालसी देखातरी। ललित लतान लखियतुहैं नदान और कहै परमेश त्योंं बहत बेस बातरी। मोरन को शोर चहूंओर होत ठौर ठौर दादुरकी टूँदि घोर करै तनु घातरी। सुख सरसावत लगेरी लोग गावन को बिना मनभावन नसावन सोहातरी ६ छोटे छोटे कैसे तृण अंकुरित भूमिभये जहां जहां फैली इन्द्रबधू बसुधानमें। लहकि लहकि सीरी डोलति बयारि और बोलत मयूर माते सबनि लतानमें।धुरवा धुकारैं पिक दादुर पुकारैं बक बांधिके कतारैं उड़ैंकारे बदरानमें। अंशभुज डारे खरे सरयू किनारे प्रेम सखीवारि डारे देखि पावसबितानमें ७ ॥ सवैया ॥ सावन कोऊ पठाऊं

उतै उनतौ इहि औसरमें कहे आवन। गावन लगीलगे मुरवा धुरवा नभमंडलमें लगेधावन। छावन योगीलगे शिवलाल सुभोगीलगेहैं दशा दरशावन। तावनलागो बियोगिनका तनु सावन बोरलगे बरसावन ८ ॥कवित्त॥ पौनके झकोरन कदम्ब झहरान लागे तुंग फहरान लागे मेघ मराडलीनके। भनत कवींद्र धरा सारनभरन लागे कोश होनलागे बिकसित कन्दलीन के। उटज निवासिनकाबास उपजनलागे सम्पुट खुलनलागे कुटज कलीनके। माचो बिरहीनके अहीन स्वर झिल्लिनके दीन भये बदन मलीन बिरहीन के ९ बियत्त बिलो- कतही मुनि मन डोलि उठे बोलि उठे बिरही बिनोद भरे बनबन। अकल बिकल ह्वै बिकानेरे पथिक जन उध्वंमुख चातक अधोमुख मंडलगन। बेनीकवि कहत महोके महा भाग भये सुखद संयोगिनि बियोगिनिके तापतन। कंजपुंज गंजन सुखी दलके रंजनसे आये मान भंजनपै अंजनबरण घन १० घुमड़ि घुमड़ि आये बादर उमड़िधाये सांवरे बिदेशछाये औसर करारेमें। दादुर पपीहा मोर शोर चहुंओरकरें मारत मरोर उठि कामज्वार ज्वारे में। घूम जलधारैं करैं उमंगि सलिल सरैं गाजकी गर्जौन सरैं बैस मतवारे में। भूकें झुकि जातीखड़ी झूलिझूलि गातीदेखि फाटैबीर छाती हा कुठौर भये भारे में ११ ग्रीषमते तचिबचि पावस मरू के पाई तामें फूके जुगुनू झबूकें लागीं पौनकी। हूकें उठैंहियमें कनूके लखें बून्दनकी झिल्लिहू नमकें ये

बिसासी बैरी भौनकी। चपला चहूं के त्यों त्यों तनमें भभूकै उठैं ऊकैंमारे मुखन कहोंमैं कौन कौन की। दादुरको हूकैं घायकरत अचूकैं उर कोकिलकीकूकैं तापै बूकैंदेतो नोनकी १२ ॥ सवैया ॥ चहुंघाते घरीघरी घेरिघना घनकी घटाघोर घनी घहरैं। छिनही छिन छीनन को बरछी छितिलौं छन छाया छटा छहरैं। चकवा चकईबकचातक चोरिनकी चिचियानिचहूं चहरैं। बिलखाय बियोगिनि बेदन से बिजया नँद बैठरहे वहरैं १३ झूमिरहे घन घूमिघने बलि बोरत भूमिमनो चहुँघा घिरि। है अफसोसन रोसकरौं बिन होस लतारहि रूखनसों भिरि। बेनी पपीहन मोरन-हूं हहरानन हूँदि करैं बहुते फिरि। ज्यों डरपै तड़पै बिजुरी परैकाहू बियोगिनि पैन कहूं गिरि१४ ॥ कबित्त ॥ कूकैलगीं कोइलैं कदम्बनपै बैठिफेरि धोये धोयेपात हिलिहिलि सरसैलगे। बोलैलगे दादुर मयूरलगेनाचै फेरिदेखिके सँयोगीजन हियहरसैलगे। हरीभई भूमि भीरी पवन चलनलागी लखि हरिचन्द फेर प्राण तरसैलगे। फेर झूमिझूमि बरषाकी ऋतु आई फेर बादर निगोरे झुकिझुकि बरसैलगे १५ आयोऋतु पावसलों योवन चढ़ाई करि से सबको फन्द बन्द छोरन चहतहै। ग्रीषम समान मिट्यो ज्ञात गुरुजन भीतपवन सुछन्दता झकोरन चहतहै। कामकोघनेरो घन बरसि सनेहबुन्द तनमन प्राण सबै बोरन चहतहै। बयस नदी में लाल प्रेम को प्रवाह बाढ्यो लोकलाज

सीमाहाय तोरन चहत है १६ कूकैलगीं कोकिलैं कदम्बनपै रातोदिन मोरपिक शोरहू सुनात चहु पास है। मन्दमन्द गर्जत घनेरी घटा घूमिघूमि बहतसमीर धीर संयुत सुबासहै। जितातित नारीनर गावैं सुखपावैं अति झूलत हिंडोरेलाल बाढ़त हुलासहै। हिये झरसावनको काम सरसावनको बुन्द बरसावनको सावन सुमासहै १७ कैधौंवहि देशजहां प्रीतमपियारे बसैं घोरे घटा नहिं घूमि घूमि घहरावैं है। कैधौं चमकत नाहिंचपला चहूं घातहां कैधौं नासुरेश कबौं बुन्दझरिलावैं है। कैधौंकाम कुटिल नझ्यापत करैजेकैधैंकोऊ नाहिं मेघश्री मलारराग गावैहै। कैधौंलाल पावसकी रातमैं पपीहा पापी बारबार पीपीकर कूकनासुनावैं है १८ बेलिन सों लपटे ललित लहकारे भये बलित तमालनके देखेपरैं दरखत। चातक शिखंडी मंदमेडुक रहेहैं नादि झींगुर झनक करैं जोर शोर हरखत। झंझापौन झूकैश्री कुहूकैतैसी कोकिलाकी अजबेस बिरह बधूकेप्रान करखत। पारावार धारकी धरामैं जलधारा भई धारन सों धाराधर बारिधारा बरखत १९ मल्लिकान मंजुल मलिन्द मतवारे भये मन्दमन्द मारुत मुहीम मनसाकीहै। कहै पदमाकरते निनद नदीनंनित्त नगर नवेलिनकी नजरि निसाकीहै। दौरत दरेरो देत दादुरसे द्वन्दैं देह दामिनी दमंकति दिशान मैं दिसाकी है। बद्दलनि बुन्दनि बिलोकि बकुलान बाग बंगलनि बेलिन बहार बरसाकी है २० दामिनी

दमंकनते झिल्लीकी झमंकनते दादुर असंकनते उमग उईपरैं। बादरते बनते बहार बरहीते वेश बेलिन ते फूलन ते फहरि फुईपरैं। जलकी जलूसजेब योवन जमाजमतैं जुगुनू जमक हरियारी ते हुईपरैं। पोहसी पहारनते पारावार पारनते पौनते नवीन ऋतु पावस चुईपरैं२१ धुंधुरित धर धुरवानकी धुकाई नभ जलधर धारैं धरा परसन लागीरी। द्विजदेव हरीभरी ललित कछारैंत्यों कदंबनकी डारैं रस बरसन लागीरी। का-लिहीते देखिबन बेलिनकी बनक नवेलिनकी मति अति अरसन लागीरी। बेगि लिखु पाती या सँघाती मनमोहन को पावस अवाती ब्रजदरशन लागीरी २२ घटाघन छतरीपै बगपांति झालरहैं इन्द्र धनुबांसरंग बिबिध मढ्योफिरैं। दामिनी दमंक सोई झगाकीझ-मंकमानो बेलिहरी भूमि वृक्षतकिया कढ्यो फिरैं। बीरकहै शीतल समीरही कहार किये धुरवा खवास रासबिधिसों बढ्योफिरैं। प्यारी पहिंचानपति पतनी की पौरिपौरि पंचबान पावसकी पालकी चढ्योफि-रैं २३ उमड़ि उमड़ि घन घुमरत आये घने घोरि देत निदरि नगारनकी घूमको। कहत किशोर चारो ओ-रनते जोरावरी जोरे देत जुरबिज्जुरीन वारी धूमको। झाझ झंझा पौन तैसी झपटि झकोरे देत झोरे देत झालरैं तमालनकी झूमको। जलजको जोरेदेत जलद को ढोरेदेत जलधिको फोरेदेत बोरेदेत भूमि को २४ झरपि झरपि झूमि झूमि झरैं जलधर तरपि तरपि

उठैं तरिता घरी घरी। तैसी अभिराम बाम काम सों लपटिघन चिन्तामणि हेरु बेलि बन की हरी हरी। जकिजकि पापी पिक बकि बकि जोरि जोरि तकि तकि प्यारी कारी सूरति डरी डरी। दौरति गिरति उझकति झुकि झुकि जाति चौंकति चकति चक चौंधति खरीखरी २५ झंझा झकझोरनसों धूकैं चहूं ओरनसों पावस झकोरनसों असोसो छन्योपरै। तरु-नाइ तोरनसों हियकी हलोरनसों व्यथा सिंधु बोरन सोंतनहूँहन्योपरै। बोलत मरोरनसों दादुरकी शोरनसों हित मोतीरामकवि कैसेकै भन्योपरै। बादरकी कोर-नसों जलकी घँघोरनसों मोरनके शोरनसों मैनउफन्यो परै २६ अमित अखिराडन की मराडी धुनि मराडल में झींगुर झकोर झिल्ली झरप झरापैं री। चञ्चल है चपला चमंके चराड चारोंओर चातक चुनौटीपीव पीवहि अलापैंरी। कहै नन्दलाल गाढ़ अगम असाढ़ आयो दादुर दरेरनकी दरत दरापैंरी। एरी डर कापैं प्राननाथ कुबजा पैं अबकौनसहै दापैं धुरवान की धरापैंरी २७ कैसे धरौं धीर बीर पावस प्रबल आयो छाई हरि आई क्षितितम बगपांतीहैं। कोकिलकलापै केकी चातक चकोर झिल्ली दादुरहूकोबा करैं शोर दिनरातीहैं। घासीराम रातीराती ललन सुहातीमिलि इन्द्रकीबधूटी चहुँ ओर दरशातीहैं। नटके बटासी छटा बिज़ुरी चमक चारु तड़पि अटा सों घटा घसि घसि जातीहैं २८ लागत असाढ़ दल साजि चढ्यो मेघ पर

घेरेलेत मोरहिं बोलि टेरें जलसरजे। झिल्लिन के झुंड बकझुगडत्ते सुभट संग बोलत नकीब केकी काके रहें बरजे। चंचला निशान आसमान फहरानलागे भूधर सुकबि कहै येही पंचशरजे। आधे आधे बैन कहि राधेमें रह्योनचैन मैनपादशाहके नगारे आनिगरजे २९
छायछाय खसखाने चन्दन लिपायगेह बन्दन बँधाय अरबिन्दनकी झापै तो। ग्रीषम की तीषन तपन तन ओड़ी अब छोड़ी आसडोंड़ीदै कलापी जो अलापैतो। बेणी कबिकहै आयो आयोरी असाढ़ अब जीबे की न आस जिये दूनीह्वै हैं तापैतो। अत्तनतरापैं मनकापैं बारबार बीर आय जैहैं बदराबराय जैहैं कापैतो ३०
घनघहरान लागे अंगसहरानलागे केकी कहरानलागे बनके बिलासीजे। बोलिबोलि दादुर निरादरसों आठों याम ग्रीषमको देनलागे बिरह बिदासीजे। ठाकुर क-हत देखो पावस प्रबलआयो उड़त दिखानलागे बकुला उदासीजे। दाबेसे दबेसे चहुँ ओरन छपेसे बीर बसिबसि रहेलागे बदराबिसासीजे ३१ आली ऋतुग्रीषमबितायो बिनपीवबिन कठिन कठिनकरि बचीहैं मरीमरी। अब तो इलाजको रह्योनकछुकाज लखि उठी ये घटान व्य-था उमड़ी खरीखरी। अजहूं नआयेहरी झरी जलभरी भूमि चहूंओर देखो बनीहोरही हरी हरी। छूटनलगेरी बीर धुरवा निहारप्रान लूटन लगेरी बोल मोरवा घरी घरी ३२ जलभरे झूमैं मनोभूमैं परसत आय दशहूं दिशान घूमैं दामिनी लये लये। धूरि धार धूमरे

से धूमसे धुधारेकारे धुरवानधारे धावैं छबिसों छये छये । श्रीपति सुकबि कहै घेरि घेरि घहराहिं तकत अतन तन तापते तयेतये । लालबिन कैसे लाज चादर रहैगी मोहिं कादर करत आय बादर नयेनये ३३ झंझापौन झूकेलगैं अङ्ग सबहूके त्योहीं उठत भभूके पंचबानजूके बानकी । दशौदिशि हूके मेघदौरदेतढूके त्योहीं चातिक उलूके भनै देवन अचानकी । झिल्ली गनमूके चुपहोत जोमरूके त्योहीं जलकी कनूकैआन प्यासीहोत प्रानकी । गयेश्यामजूके उपजावैं हियेहूकें सखी धुरवाकी धूकैं टूजेकूकैं मोरवानकी ३४ कारे जलधर चहुंघा ते झूकरत आवैं दामिनी सोहावै सो जनावैं दुख गाढ़के । झींगुर पपीहा भेक शुक पिक मोर बोलैं डोलत समीर सो करत आढ़आढ़के । कहै कबिरामपीरेअंकुरमहोतेकढ़े बढ़ीपीर बनिताके देखे जलबाढ़के । कामकेउमाहक बिरहीजनदाहक ये आये प्राणगाहक बलाहक असाढ़ के ३५ बरषत मेह नेह सरसत अंग अंगझरसत देह जैसे जरत जवासोहै । कहै पदमाकर कलिन्दीके कदम्बनिपै मधुपन कीन्होआय महत मवासोहै । ऊधोयह ऊधम जनायदीजो मोहनसों ब्रजसोसुवास भयो अगिन अवासोहै । पातकी पपीहा जलपानको न प्यासोकाहू बर्थित बियोगिनके प्रानन को प्यासोहै ३६ श्यामघटा नाहीं येतो धूमकी छटाहैं छाई बीजुरी कहांहैयेतो झाकैंउठैं धुरमैं । गरज कहां है घोर फाटैं ऐसी थंबनकी जुगनू कहांहै येतो चिगैं

उठैं सुरमैं। मेघबुंद नाहीं ये बुझावत फिरतदेव तिनहीं के छींटा देखि आवत अतुर मैं। लालबिन दावानल अबकौबचावैकौनसरीआगि लागीहैपुरंदरकेपुरमैं ३७ बादर नहोयँ दलआये मैनभूपजूकेबुंदिया न होयँ पंचबानझरलाईहैं। दादुर न होयँये नकीबबोलें चारोंओर मुरवा न होयँहाँक शूरनसुनाईहैं। बगुला न होयँ श्वेत ध्वजा भगवन्तजूके चपला नहोयँ शमशेरैं चमकाईहैं। बालम बिदेश यातेबिरहिनि जारिबेको जुगुनू न होयँ काम यामकी जगाई हैं ३८ अंकुर कुसुम इन्द्रबधूगन चहुँ ओर करिके भगोहें राखे सूखिबे को पटहे। रूप घनश्याम घटाछटा शिर सोहतहै जलही बिभूतिभूति पौनताके तटहै। हहर अवाजसुनी जात घरघर जाको भरिगो तलावबड़ो खप्पर अघटहै। जगके बियोगिन को कामनिशिदिन दाह्यो सावनहैयोगी यों दिखायो मरघटहै ३९ राजै रसमैरी तैसीबरषा समैरी चढ़ी चंचला नचैरी चकचौंधा कौंधा वारैंरी। पतिव्रत हारैं हिये परत फुहारैं कछुछोरैं कछु धारैं जलधर जलधारैंरी। भनत कबिन्द्र कुञ्जभौन पौन सौरभ सो कौन को कँपायके न परहथ पारैंरी। कामकेतुकासे फूल डोलि डोलिडारैं मनओरैं कियेडारैं येकदम्बनकी डारैंरी ४० उमड़ि घुमड़ि घनघेरिके घमराड कीन्हों चपला समेत चहुँओरनते झूमरे। निशिदिन जापीतापी बोलत पपीहा पापी कूरहें कलापी ऐसेघोरसुनि घूमरे। जियैंगे बियोगी कैसे ऐसी समै महाकबि योगी ते वैभोगीभये

फोरिफोरि तूमरे । देखि मेरी आली अबमैनके मतंग छूटे धायेआवैं धुरवा ये धौरेधौरे धूमरे ४१ उनयेते दिन लाये सखी अजहूं न आये उनयते मेह भारी काजर पहारसे । कामके बशीकरन डारैं अबशीकरन ताते ते समीर जेहैं शीतल तुषारसे । सेनापति श्यामजूको बिरह छहरिरह्यो फूल प्रतिकूल तनडारत प्रजारसे । मोर हरषनलगे घनबरषनलगे बिनुबरषन लगे वरष हजार से ४२ दूरज दुराई सेनापति सुखदाई ऋतु पावस की आई नहिंपाई प्रेमपतियाँ । धीर जलधरकी यों सुनि धुनिधरकी सोदरको सोहागिनकी छोहभरी छतियाँ । आई सुधि बरकी हियेमें आनिकरकी कहो जो प्राण प्यारे वह प्रेमभरी बतियाँ । बीती औधि आवन की लाल मनभावनकी डगभई बावनकी सावनकी रतियाँ ४३ बिन घनश्याम धाम लागत निकाम बाम आठो याम दहत अतनतन छतियाँ । केकी पिक कूकैं हूकैं उठैं ये अचूकैं अंग लूकैं देतदादुर बिरहआग ततियाँ । पतिया न आई बीर छतिया जरन लागी बतियाँ सुहाति नाहीं भूली गतिमतियाँ । बीतीऔधिआवनकी लाल मनभावनकी डगभई बावनकी सावनकी रतियाँ ४४ शरदशशीते अधशशी ह्वै बचीहैं कवि चिन्तामणि तिमि हिमि शिशिर झमक ते । मारत मरुके बची बधिक बसन्तहू ते पावक प्रजार बाँचो ग्रीषम तमकते । आयो पापी पावस ये प्रान अकुलान लागे भागेरी असान घोर घनकी घमकते । ताप ते तचौंगी

जौपै अमिय अँचैांगी आली अबन बचैांगी चपलान
की चमकते ४५ गरजि घुमंडिलै सकल महिमण्डलै
तू दण्डविरहीनको उमण्डकरि ऐंठैगो। दादुरपपीहा
दीह दारुन दिखाईदेत मारन को शोर तन तोर करि
पैठैगो। चपलाकृपानवुन्द बानसे प्रवीन वेणी शीतल
समीर प्रान अधिक अमैठैगो। जारीहैं बसन्तकील-
धारी मारी ग्रीषम की पावस कलंक तेरे शीश चढ़ि
बैठैगो ४६ दामिनी दमक सुर चाप की चमक श्याम-
घटाकी घमक अतिघोर घनघोरते। कोकिलाकलापी
कल कूजत हैं जिततित शीकर ते शीतल समीर को
झकोरते। सेनापति आवन कह्यो हो मनभावन सु-
लाग्यो तरसावन बिरह जुर जोरते। आयो सखि
सावन मदन सरसावन सुलाग्यो बरसावन सलिल चहुं
ओरते ४७ कढ़ी दिशि दक्षिणते घोर घन घटा चढ़ी
बढ़ी बिरहीको दुख देनको न कमहै। ठाकुर झरोखे
ह्वै तनक ताकीतोय कह्यो तूरी ताकि आलीया उतङ्ग
रंगतमहै। कह्यो वाहि मेघसों न मानै कहै जानै तन
गरजत आवै या सुजान्यो योगहमहै। हैनबिज्जुहोत
किरवारी दण्ड चमचम जीवआनै आवत जमात जोरे
यमहै ४८ आई ऋतुपावस पपीहा बोलैं दादुर ये छ-
तियाँ दरत तापैं बिरह मदीकरैं। दौलत कहत हाल
सुन्दरसरसबाल लालमणि भयसा बिशालन रदीकरैं।
चहूं ओर चमकत चपलन चौंधचारु देखिदेखिमृग-
नैनी नैनन नदीकरैं। बिरहिनि तियनके जियनके गा-

हक ये नाहबिन नाहक बलाहक बदीकरैं ४९ आयें से अमल झलाझलऊ के टापे सेवै विधि कारीगर ने बिचित्र बिसतरेहैं। रंगत गरूरेलाल लहरललामलोने छबिकी उमंगन सुहाये जल भरेहैं। ठाकुर कहत पूरे पानिपके मेरीबीर सुखमा भरेहैं तातेउपमा न करेहैं। पावस फकीरकेके मदन अमीर के ये बासन चिनीके नीके ठौरठौर धरे हैं ५० लागयो मास सावन बिदेशी ठाँव ठाँवनसों आवनलगे हैं कैधें उन्हें सुघरी नहीं। कैधैं वहिगावनमें जावन कहत कोऊ कैतो गुनगावन कीरीझ अगरी नहीं। भनतकबिन्द्र मनभावन तिहारे हम पावनको सेवैं तकसीरहू परीनहीं। इतेतो हिता-वनपै तावनलगेहो देह दावनलगेहोकी बिदावन करी नहीं ५१ शीतल समीरउर तीर सों लगतअरी हरीहरी बेलिनपै पावक प्रजारिदे। दादुरनि दूर करि पिकन पकरिदैरी बागनके बाहिर मधुपमोर मारिदे। पावस में पियबिन बिपत्ति बढ़ावैं येसु जीवन जिवैबे की उ-पाय उपचारिदे। दामिनी दबायदे तू बादर बिदाकर री बुन्दन बरजिकरि बगन बिडारिदे ५२ पावसप्रथम पिय आपनी अवधि सोतौ आवतही आवैं तौ बुलाव अति आदरन। नाहीं तो न हीलहोन देरी झीलझा-बरन ग्रीषमहिँ भाषि खाली राखि खल खादरन। बीजुरी बरजिकहि मेघैं न गरजि इनगाजमारे मोरमुख मोररी निरादरन। चोंच नोच चातकन कंठ रोंकि कोकिलन दूरि करि दादुर बिदाकरी बादरन ५३

आई ऋतुपांवस न आये प्रारा प्यारे याते मेघन बरज
आली गरज सुनावैंना। दादुरनि कहि बकि बकि
जिन फोरैं कान पिकन हटकि भूलि शब्द सुनावैंना।
बिरह व्यथामें मैंतो व्याकुल परीहौंदेव जुगुनू चमकि
चित चिनगी लगावैंना। चातक न गावैं मोर शोर ना
मचावैं घन घुमड़ि न आवैं जौलौं लाल घर आवैंना ५४
गरज पुकारसो बियोगी तनछार भये बूंदैं बिष बारि
परैं महाबिषधारी के। धुरवा अनेक फन मण्डन को
बिज्जुमणि चमकि चकितचित होत नरनारीके। बोरैं
फेन भरैं बायु मंत्रसों सँचारकरैं देशनमें शीशपरैं सूरत
डरारीके। भामिनि भँडारेबिष बामीते निकारेकान्ह
फिरैं घनकारे नागपावस खिलारी के ५५ घेरि घेरि
घहरि घहरि घन आये घोर तापै महामारुत झकोरत
झरपसो। सुनि सुनि कूकनि मयूरन की बीर मैं तो
राख्यो निज प्रान यमराजहू अरपसो। भीतभरी भौन
ते कढ़ौन कमलापति मैं तऊबेधे डारै हियो तड़िता त-
रपसो। गावन मलारको सुहावन लगै न भयो भावन
बिनारी मोहिं सावन सरपसो ५६ कारीघटा कामरूप
कामको दमामो बाज्यो गाज्यो कबि ग्वाल देत दा-
मिनि दरेरसी। लपकि झपकि आयो दादुर मचायो
शोर हमें तो बिरह सखि सदन दरेरसी। बालमबिदेश
बसै चातकको जोरलसै ताहीसमै होत कछू औरैं हर-
बेरसी। बूंदनको झन्दसुनि आँखैं मुंदिमुंदि जात आयो
सखी सावन सँवारे शमशेरसी ५७ उमड़ि उमड़ि नदी

नद कूल बोरतहैं जोर जलधारनसों सूझत कहूंना है। परम प्रचण्ड पौन धावनि त्यों धुरवाकी झिल्लिन को शोर सुनेहोत कान सूनाहै। गिरिधरदास महाबिङ्जुको प्रकाशसोई लागै दोह दुसह दवानल सों दूना है। एरी बाल जोई श्याम बिन सुखखोई यह पावस न होय प्रलैकाल को नमूनो है ५८ आई ऋतुपावस बहत पुरवाई पौन काशीराम तैसी ये तड़ितलागी लपकन। झूमिआये बादर बिहंगबन बोलिउठे चहूंओर कुञ्जन अँध्यारी लागी झपकन। झिन्नाझननात हहनात मोर शोरसुनि बिरहअगिनि जरि छातीलागीतपकन। हेरहार हरतन हारदेखों आठोंयाम पिया के बियोगमो निशाहू लागी हपकन ५९ सावन की रैन मनभावन गुबिन्द बिन देत दुखझरन में झिल्लिन के शोरहैं। कालिदास प्यारी अँधियारीमें चकितहोतउमड़िउमड़ि घनघहरतघोरहैं। सूने कुञ्ज मन्दिरमें सुंदरी बिसूरैबैठी दादुरयेदहकसी लेतचहु ओरहैं। हियमेंबियोगिनके बिरह की हूकउठी कूकउठी कोइल कुहुक उठे मोरहैं ६० घूमिके चहूंघा धायआवैं जलधाराधर तड़ित पताके बाँके नभमें पसारिगे। द्विजदेव कालिंदी समीपन के नीपनके पातपात योगिन जमातिनसों भरिगे। चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निज निज दाँवठाँव ठाँवनमेंअरिगे। बिनयदुराय अब कीजैकहा सायहाय पावसमहीपके चहूंघा घेरे परिगे ६१ कारे कारे घन ये दतारे से दबत आवैं बोलत नकीब केकी

कोकिलाप्रमानकी। दामिनिकी दमकचमककिरवा-
ननकी बाननकी बरषा बिरहवुन्दठानकी। घासीराम
बाजत नगारे भारे मेघकैधौं कैधौं इन्द्रचापकीन्हो च-
ढ़जकुमानकी। दावन पकारिच्यारी बूझैं मनभावन ते
सावनसमूह कैधौं आवन अमानकी ६२ साजैंशोरबादर
समाजैंजोर चहूंओर बाजैंऋतुराजके बधाईकेतुतुरवा।
तैसीतनतीरसी बयारबहै सीरीसीरी मन्दमन्दबोलैं मद-
माते बनमुरवा। गवनकी तुम्हेंपरी आजु इहिसमैंहरी
हरीहरी भूमिभई दूबके अँकुरवा। बूंदैंबरषावन पिया
के परसावन सनेहसरसावन ये सावनके धुरवा ६३ धु-
रवा कलिन्दीकूल इन्द्रचापमहमूल राजत अतूलअति
आनँदकी शालासी। गरजमृदङ्गभारी चातक अलाप-
चारी केकी ततकारी पिक देतहठतालासी। बड़ीबड़ी
बुन्दन बखेरि पुहुपांजलि को धीरी पौन उघटि सुघट
पाँतिआलासी। व्योम राजमण्डलमें नृत्यकरैं प्र्यास-
घन आसपास दामिनी बिराजैं ब्रजबालासी ६४ भूमि
नाचै नर्तकसे मोर येरी चहूंओर चञ्चला अकाशदेव-
नारिसी नचतिहै। गायकसे गानकरैं चातक बिपिन
घन गन्धरब गावैंगीत आनँद रचतिहै। गिरिधरदास
देव फूलबरसावैं जल सुमनलुटावैं तरु बुद्धि यों जचति
है। पावसको जनम भयोरी यासों सुखमा सों अवनि
अकाश में बधाईसी मचतिहै ६५ चंचला चमंकैं चहूं-
ओरनते चाहभरी चरजगईती फेरि चरजनलागींरी।
कहै पदुमाकर लवंगन की लोनी लता लरजि गईती

फेरि लरजन लागींरी। कैसे धरैं धीर बीर त्रिबिध स-
मीरै तन तरजि गईंती फेरि तरजन लागींरी। घुमड़ि
घमराड घटा घन की घनेरी अबै गरजि गईंती फेरि
गरजन लागींरी ६६ ॥ सवैया ॥ उमड़े नभ ते क्षितिम-
गडल मेघ घमंगड चहूं दिशि धाय रहे। कविचन्दन
चावसों चातक मोर हरेबन शोर मचायरहे। पियपा-
वसमें बिरही बनितानमें आवनहारते आयरहे। कोहि
कारसाहाय बिहायहमें हरिजायबिदेशमें छायरहे ६७
छायकेप्रेम गयेजबते तबतेमैंबची करिकोटिउपायके।
पायके पावसरी ऋतुसों अब कोबचिहै उठि कोकिल
गायके। गायके सो नँदलाल कहै चपला चमके चहुँ
ओरसों आयके। आयके हाय मिले नहिं मोहन मेरी
अटापै घटारहीछायकै ६८ कोरनलौं दूगदेतीहै काजर
कारीघटा उमड़ी घनघोरन। घोरनते जो चली अलि
सुंदर नेकदेती नहिं बागकेमोरन। मोरनकीरति नाचत
है नहिं मानतहै हटको बरजोरन। जोर न अञ्जन देउ
सखी अँगुरी करिजैहैं कटाक्षकी कोरन ६९ ॥ कबित ॥
पावसप्रवेश वेश छाइरह्यो देश देश शेष ज्यों सरोष
श्वास पौन गहिबेपरी। दादुर दबावैं तन घेरिघेरिआवैं
घन केकिनकी कूकै बनहूकै लहिबेपरी। जानैंना स-
यानी जाहिमुखहू न आनी अब भूपतिभवानीदीन सोई
कहिबेपरी। आये नहीं लालबाल भईहै बिहाल हाय
चातक चवाइनकी चोटसहिबेपरी ७० ॥ सवैया ॥ तड़पै
तड़िता चहुँ ओरन ते क्षिति छाइ समीरन की लहरैं।

मदमाते महागिरि शृङ्गनपै गण मञ्जुमयूरनके कहरैं। तिनकी करणी बरणी न परै सो गह्वर गुमानन सों गहरैं। घन ये नभमण्डलते छहरैं घहरैं कहुँ जाय कहूँ ठहरैं ७१ चपलाचटमोर किरीट लसै मघवा घन शोभ बढ़ावतहैं। मृदुगाजत आवत बीण बजावत मत्तमयूर नचावतहैं। उठिदेखु भटू भरि लोचन चातक चित्त की तापबुझावतहैं। घनश्यामघने घनवेषधरे सो बनेबनते ब्रजआवतहैं ७२ ॥ कबित ॥ गर्जिलेघुमंडिले सकलमहि मंडलै औ दण्ड बिरहीन को अदण्ड अब ऐंठैगो। पापीहू पपीहा पीउ दारुण देखाइ दुःख मोरन को शोर तन तोरि अंगपैठैगो। चपला कृपाण बुन्द बाण सो प्रवीण वेणी शीतल समीर तन अधिक उमैठैगो। जारीहैं बसन्तकी लेथारी मारी ग्रीषमकी पावसक-लंक शीश तेरे चढ़ि बैठैगो ७३ गगनगरजिछायोमेघ जोर झरिलायो शीतल समीरबहै त्रिबिधभयामिनी। कोकिला कलोलैं करैं मोरबोलैं चहूं ओर कोपिकाम आयोजू अकेली यामकामिनी। ऊधोजी शरीर सुख सबकोऊ चाहतहै कहत बनै नहै पराई पीरपामिनी। मारेडारैंमदन मरोरे डारै दादुरये दाबेमारैं बादर दबा-ये मारैं दामिनी ७४ ॥ सवैया ॥ आजरी देखु घटाघन सुन्दर सावनकीनो सुहावन साजरी। साजरी भूषण भेष शिंगारसो तेरोई आजु बन्यो सब काजरी। का-जरीआज घरी वहनेहकी तेरे अधीनखड़े ब्रजराजरी। राजरी वारौं तिहूंपुरको मुरलीधरआये मयाकरिआ-

झरी ७५ ऋतुआई सोहाई नईबरषाबढ़ो मोद मयूरनके हियको। हरियाई चहूंदिशि फैलिरही अनुरागबढ़ावतहै जियको। चढ़िऊंचे अटान बिलोकै घटा कर कंजसो हाथ गहेपियको। लखि कंजकलीन तड़ागन में मुखमंजु मलीन भयो तियको ७६ ॥ कवित्त ॥ बदरान होइँदल आये कोई भूपन के बंदवा न होइँ पञ्चबान झरिलायो है। दादुर न होइँ ये नकीब बोलैं ठौर ठौर मोरवा न होइँ हांक शूरन सुनायो है। बगुला न होइँ श्वेतध्वजा भगवन्तजीकै चपला न होइँ शमशेरै चमकायो है। बालम बिदेश बिरहीनिन के मारिबे को जुगुनू न होइँ कामयामकी जगायोहै ७७ नजानी वहि देशघनघटाना घमंगाड आवैं न जानी वहि देश मेघवा नरेशामरिगयो। नजानी वहिदेश मोरचातक न करत शोर न जानी वहि देश पापी पपीहा जरिगयो। न जानी वहिदेश रसबातहू न जानै कोउ न जानी वहि देश रस मदन मान सरिगयो। न जानी वहि देश ज्ञानरच्यो ना बिधातानाथ न जानी वहि देश ज्ञान ज्ञानिन को हरिगयो ७८ कारे कारे बदरा पवन लै प्रचराड करौ घनकी घनाक नेक चित्तहूं न धरिहैं। पापीये पपीहा के सचान लैकै प्रान लेउं कोकिलाके कराठ कारे काटि काटि डरिहैं। झींगुर झँगार को बोलाइलेउ नीलकराठ शेषको बोलाइ सबै दादुर सँहरिहैं। आवन दे सावन रेमेरे मनभावन को रहुरे असाढ़ तेरे हाड़ हाड़ गाढ़िहैं ७९ ग्रीषम बिताय ताय

रंग रंग बरसाके बरसि बरसि बारि सरस सोहायेहैं। द्विजबलदेव बलबागन बहारबर बाजतहैं बाजने बिहंग बन गायेहैं। बिशदबसन बकुबिलगबिलग व्योम बेलिन बितान बनिता अतनतायेहैं। बिज्जुल बिपुल लखि बरही बोलत बैनमैनके बिरादर येबादरह्वै आयेहैं ८० साजतसमाजैं रूप केते उपराजैं दिगदेशन मेंभ्राजैं शोर सहित ह्वै आजैरी। दामिनीहू छाजैं दुरि व्योम पुनि बाजैं बलदेव हितकाजैं मोद सहितल राजैरी। चित्त अनदाजैं लाइ सात्तकोभाजैं फेरि घेरि घेरि गाजैंसुरभी सों भिरताजैरी। आपनो मचाजैं रांखिलेती मम लाजैं क्यों न बोलि ब्रजराजैं ये लखावैं घनसाजैरी ८१ दैके घेरि घुमड़ि घमंगिड घहरान लगे तड़पि तड़ाक दै द्वि चन्द ह्वै घटागये। द्विजबलदेव अबै त्योंहीं सरसात जात जाहिर जनाया रंग कारेसे भरेभये। कबहूं सुरंग नील सोसनी सबुजसेत संयुत समीर कबौंपीतपट सेठये। सादर लै दामिनि निरादरकै ग्रीषमको कादर करतमोहिं बादर नयेनये ८२ आजैं मेघबानको गयोरी रवकान को भुलाने। मगमान को सँभारतहैं। जानको। आदि करितान बलदेव गुणगानको लगायो मनध्यान को छटान को घटान को। तड़ित तटानको औ असित लटान को न जातिहैं। अटानको असित ह्वै कटानको। मदन पटानको डेराती नारटानको जो नागर नटानको लयाती या चटान को ८३ ॥ सवैया ॥ धावनलागे घने बदरा चदरासी धराहरी छावन लागे। बंदि सुनावन

लागे शिखी रव दादुरशोर मचावनलागे। गावनलागे मलारश्रौसावन चातककूक उठावनलागे। वैमनभावन आयेनआली बिदेशीसबै घरआवनलागे ८४॥ कबित्त॥ चंचलाकी चमकचहूंघा चोख चायनसों चाहिचाहि चित्तमें छपारहा चोटकैरहे। इन्द्रको शरासन शरासन सरसबानबुन्दके बिधानन बिनोदनबितैरहे। कहैनन्द-रामतैसेचातक चकोरजोर बोलिबोलि बिरहीवलाके बिषबैरहे। आदरकै राखैंमान कैसेहूंकिनादरलैयमके बिरादर येबादरउनैरहे८५॥ सवैया॥ आये असाढ़ घटा लखिके चपला चमकैं घनबीचसमैहैं। एकही बारबड़े बड़ेबुन्दपरैं छितिपै छहरानमचैहैं। भीजत देखिउठाय के कामरि लायगरे हरिमोहिं बचैहैं। ह्वैहैं अनन्दसबै ब्रजमें जब गोकुलचन्दजू गोकुल ऐहैं ८६॥ कबित्त॥ तीर पर तरनि तनूजा के तमाल तरे तीजकी तयारी तकि आई सखियान में। कहै पदमाकर सो उमगि उमगि उठै मेहदीसुरंगकी तरंग नखियानमें। प्रेमरंग बोरीगो-री नवल किशोरी तहाँ झूलती हिंडोरे यों सोहाई पखियानमें। कामझूलैउरमें उरोजनमें दामझूलैंश्याम झूलैं प्यारीकीअन्यारी अँखियानमें८७ भादोंमेंकारी बिकरारी राति ह्वैहै प्यारी जुगनू जमाति जोर जोर धमकावैंगी। घनन घमंडह्वैके बरषा अखंडह्वैकेपवन प्रचंड द्युति दामिनी दबावैंगी। अरुणा बरणा ह्वैके इन्द्रवधू ठौरठौर मल्ल कवि कहै जोर आपनो जनावैं-गी। पावस समैमें जोपै ऐहैंनहीं कन्त तोपै मदन मही-

पतिकी फ़ौजैं उठि धावैंगी ८८ घुमड़त घुमड़ि घुमंडि घनआये घने तड़पन चांड़ीचढ़ि तड़पनिसोहैंये। झझ्झ-कत झंझाकी मझ्झंझा झूमि झूमनिमें झुमक झराने झीने भिनफिन सोहैं ये। पूछत अगस्त को उदोतजानि पियको पजन लखि अंकुर अनेक उकसोहैंये। सिन्धु तासों दाबी दशहूं दिशान सोहै आज बादरा बिसोहैं सो बिसोहैं बिकसोहैं ये ८९ दिनन घरीको घनघेरि घहरानलागे अवनि अँधेरी ह्वैहै आभा इन्दरनकी। पथिक थोरही थोरी उमिरि अकेली बीर अकुलाई नाहींगही गैल कन्दरनकी। द्रुमन लतानमें दिखात पै नजीकही सो दुरिदुरिताई प्रवेततोई मन्दरनकी। कहै पजनेशकैसे दाहने दुवोंसोकोस डगरनबीच बीचबाधा बन्दरनकी ९० ॥ सवैया ॥ सावन शोक नशावनहै नहिं राम चरित्र मेरे मनभावन। भावन मोहिं घटा घनकी बनकी हरियाली लगी लुकलावन। लावनकोउ कहै उनको उनको करजोरिकहो गुणगावन। गावनमें सब कोसुखहै हमकोदुखहीदुखहै दरशावन ९१ आयहैाना ऐसेसावनमें मनभावन पावस कैसे बितायहैा। तायहैा कातनतापनते मनआपन होय सो लेखभेजायहैा। जाय हैाजल्दचले पुनि पाछहि रामचरित्र अबेर न लायहैा। लायहैा औरकछूनाहमें जोवनैतोतुहींचट सों चलेआय हैा ९२॥ कबित्त॥ दमकैं दशौंदिशा दुनाली द्यौढ़दामिनि की घनकैं नगारे भारे उर उलझनके। झनकैं झनाक झुंड झींगुर बिगुर बाजैं सनकैं समीर तीर शक्र शरा-

सनके। सनके ससरसद मेचक झिलमधारे ठनके नकोबदर्प दादुर दमनके। मनके मदन बिन कामिनि क्रदनकेये आयेवीर बादर बहादर मदनके ९३ बरखै पुनरवसु धराहै उदार जहँ इन्द्रगोप गोपिकाली फिरैं घूमिघूमिहैं। द्विजहरखावैं पथप्रावैं चहुंओरनते अम्बर सुहावैं शिखिआवैं झूमि झूमिहैं। चपला सहित बग्र यासजामें घनश्यामगति अभिराम अतिचलैं भूमिभूमिहैं। चहुंधा तमालैं हैं कदम्ब तालैं दीनद्याल पावस रसालैंके बिशालैंभूमिभूमिहैं ९४ भादौंभरे सरवर नदी नारे धर धर धरापर मेघबुंद झर्झर झरति है। भरि भरि नयननमें नीरनिसैन मारी हारी बरि बरि अरि अरि बीरमैं कहतिहै। धरिधरि देखौ करहियोहोत धरधर थर थरकांपै धर धीरना धरतिहै। हरि हरि जीवजात देखेलता हरिहरि हरिहरि हरहर रसना रटतिहै ९५ अम्बुज तटान फैलि फूटत फटान जैसे धावत नटान छबि छाईहै छटानकी। चातक रटान नदी नद उपटान जल जंगल बटान महा मारुत कटानकी। भीजत पटान बुंद चुवत लटान पुखी तन लपटान मानो सदन घटानकी। पीवके तटान ओढ़े कुसुमी पटान अरु ठाढ़ीहै अटान लेत लहरैं घटानकी ९६ बादर पटान कारे सटित सटान जनु धावत नटानन ज्यों बिज्जु सटकानकी। अम्बर भुसटानज्यों लपटत भुजटान देव बिजय निशान वुन्दउदित कटानकी। भनै जगेश्वर ऋतु-पावस भट जानियो चातक रटान कूक कोयल हटान

की। नदके तटान ओढ़े कुसुमी पटान ठाढ़ी देखत अटान चढ़ी लहरैं घटान की ९७ छवै हैं नहिं इंदीबर ह्वैहैंना कलिन्दी माहिं नाहीं अब सखी श्याम बिन्दीहू लगायहैं। आनिजनि नीलमणिभूषणानिमेरी बीर दूरिकरि येरीमृगमदको न लायहैं। आलीकाकपालीको न सुनिहैं रसाली कूक अबतो तमालन के कुञ्जमें न जायहैं। देखिहैं घटानको न चढ़िकै अटान बाम श्यामसंग बैर अब हमहूं चढ़ाय हैं ९८ झिल्ली झनकारैं पिक चातकी पुकारैं बनमोरन गोहारैं उठैं जुगुनू चमकिचमकि। घोरघनकारे भारे धुरवाधुरारे धामधूमन मचावैं नचै दामिनी दमकि दमकि। झूंकन बयारी वारिलूकनलगावैं अङ्ग कूकनभभूकन सों औरै मो खमकिखमकि। कैसेरहैं प्राण प्राणप्यारेयशवन्त बिन छोटी छोटी बूंदन सों बरसै झमकि झमकि ९९ लटकिलटकि मेघ बारिझहरनलागे तड़पितड़पिबिज्जु करैं रव घोरिघोरि। फैलीहरियाई नीरबिहरी बहूटी बीर बापी सर सरिता करार जल छोरिछोरि। भनत दिवाकर बरस बायु झूंकिझूंकि झँकिझँकि बिपिन बिटपदेत झोरिझोरि। वोहीकाल बालब्रज सांवरो पियाके सेज कुच चुभुकाति मुसक्याति मुख मोरिमोरि१०० चीरफहरावन झुलावन संयोगिनको हियेहुलसावनरिझावनसोहायोहै। सुधिबिसरावन तरसावन सतावन जगावन अतन शोर मोरन मचायोहै। धीरज गवावन बिझुकावन झुकावन तावन तड़ित रसाल घन

धायो है। बिन मनभावन बढ़ावन बिरहप्रान सावन बितावन बियोगिनको आयोहै १ पावसके आवतइत सरवरमाहिँ हंस जलमाहिँ होति देखो नित कलुषाई है। मानसर चलिबेकी सुरतिलगाई निज हंसिनी हु- बंसिनीहू हिये यादिआईहै। तहांके निवासी पक्षीप- क्षिनी कहनलागे प्रीति परदेशीकी हमैंना सुहाईहै। कैसी अद्भुतबरषाकी ऋतुआई जो संयोगिनिदुखदबिर- हिनि सुखदाईहै२ सासुतौ न्यारी ननँद सासुरेसिधारी रैनि अँधियारी कारी सूझत न करहै। प्रीतमकोगौन कविरायनसोहाय आली पवनहहायो अरु लायोमेघ झरिहै। सङ्गना सहेली गृहमांझ हौं अकेली अरु ब- यस नवेली तन लाग्यो मैनशरहै। आई अधरात मेरो जियरा डेरात जाग्रु जाग्रु रे बटोही यहां चोरनकोडर है ३ सरतट सुंदर नवीनगृह छाजे पुनि झिमि झिमि झिमि झिमि मेघकेतड़ाकेहैं। शोभित पलँग पर का- मिनी वहार पेखि पतिसँग हँसिहँसि सुखके झनाके हैं। बारुणीको पानकरैं गिजकसों फेरि फेरि ग्वाल- ग्राम देखोकैसे मदके सनाकेहैं। जीवभनै चित्तसो अ- नन्द ऐसोकौनअहै बादरघुमैंडे ऋतुपावस झनाकेहैं ४ आइये जु श्याम घनश्यामलता मुरझगईं प्रेमउरझोहै जुविचार चितलाइये। सूखोहोय नालपै सरोजकुंभि- लायगये चातक मनमोर गर्ज बांसुरी सुनाइये। उर बनमाल बक पंगत फबीहै किधौं पीतपट फहर बिज्जु वायु सरसाइये। कैसे बचै हाय छकुमाकर मरोरै घरै

समझ मननीत नेह मेह बरसाइये ५ सुन्दर सरस ऊंचे महलमझाके मंजुझंझरी झरोखनमें झोयबोईकरिये। तड़ित प्रचंड औ घटानके घुमंडनमें प्रीतिरस प्यारीते समोयबोई करिये। परिपरियंकपै सुनीतनवअङ्कलाय ह्वैकर निशाङ्क लङ्कगोय बोई करिये। अधर कपोल रसरङ्गमेंमगनहोय गरकगलेफबीचसोयबोईकरियेई ॥ सवैया ॥ ह्वैहैं धुरवा धुरवारे अली द्विजदेव चहूंदिशि दौड़त ह्वैहैं। त्यों मनमत्त सखापै शिखी मनमोहनकूं का बिलोड़त ह्वै हैं। पावस काल करालहहा क्षण एकहू सङ्ग न छोड़त ह्वैहैं। फूलसे वै अँग पीउकेहाय घनी घन चोटन ओड़त ह्वैहैं ७ ॥ कबित ॥ सावनी के ब्याज आज आई गाँव गाँवनते भावनते लेनेछरी करनप्रसूनकी। गुरुजनहूंन गूढ़गुनन रिझावैं तहां गोरी गुनवती गाय तानैं द्वाह दूनकी। द्विजदेव साजैं सबैं अङ्गन सुरङ्गचीर झालरैंझसाकैंलगीं कोरनखतूलकी। इन्द्रके बधूनकी सुदेखी छबि तूनेइत दूनोछवि देखुरी गोबिन्द की बधूनको ८ धुन्धुरित धुरि धुरवान की धुंधाईनभ जलधर धारैं धरा परसनलागींरी। द्विजदेव होती कछु ललित कछारैं त्यों कदम्बन की डारैं रस बरसन लागींरी। कालिहीते देखि बनबेलिनकी बनक नवेलिनकीमति अतिअरसन लागींरी। वेगिगलिखु पातीवे सँघाती बागोपालै देखु पावसअवाती ब्रजदरसन लागींरी ९ कूकिकूकि केकी हिय हूकनि बढ़ावैं क्योंन बिषधरभोजनके अतिउतपातीरी। साजिदलबा-

दरडरावने डरावैं करैं येतो घनश्यामजूकेपरमसँघाती
री । अजगुति एक तोहिँ बूझन चहति आलीद्विजदेव
कीसोंकछु बूझत सकातीरी । अबला अबलजानि सू-
नीपरीसेज माहिं कैसेकुन जोन्हन की दरकति छाती
री१० दीनोमनरंचऊन चीठिन बसीठिनपै कीनोकान
कानकी न दीन अरजनिमें । द्विजदेव कीसों जऊँ हारी
वे सिखायतऊँ सुमुखि सखीन की सनीन बरजनिमें ।
येरीमेरी बीरधीर काबिधि धरैंगी होय चातक चवा-
इनिकी चोखी चरजनिमें । मेचक रजनिमें कदम्ब ल-
रजनिमें सुमेघ गरजनिमें तड़ित तरजनिमें ११ बूझेहून
सूझत सुघाटबाट जलथल बिनशो सकल मरयाद सब
ठामकी । द्विजदेव देहरीके बाहर धरतपग फेरि सुधि
करत न धामकी न ग्रामकी । बूड़ति अथाहे कुल धरम
निबाहे कौन बावरी बिलोकि यह झूकनि सुदामकी ।
पावस अँध्यारीहुती ऐसिये डरारीतापै आठोयामरस
बरसनि घनश्याम की १२ ॥ सवैया ॥ होतेरहे नवअंकुर
की छबि छाहँ कछारन में अनियारी । त्यों द्विज देव
कदम्बन गुच्छन एईनये उनये सुखकारी । कीजिये
बेगि सनाथ इन्हैं चलिये बनकुञ्जन कुंजबिहारी । पा-
वस कालके मेघनये नवनेह नई वृषभान कुमारी १३॥
कवित्त ॥ घन घिरिआयो बन सघन तिमिर छायो रैन
को डरैंगेलेखि देखियो दृगनतें । नन्दजू कहत वृषभान
नन्दनीसों नन्दनन्दनहिँ घरैजाहु लैकै बेगिवनतें । गुरु
के बचनपाय प्रेमकी रचनभरे चले कुंजतीर तरुदेखि

कै बिपिनतें। यमुनाके कूलमें रहसि रसकेलि मयी ऐसे राधा माधौ बाधाहरो मेरे मनतें १४॥ सवैया ॥ बादररेख उठी नभ में पुनि फैलिगई अति आतुरताई। श्यामतमालते भूमिभई तमपुंजछये तिहि औसरआई। घोरघटा घनधारलगी अँधियारभयो बिजुरी अररराई। लायहियेहरिको नँदराय डेरायउठे गउवैं छितिराई १५ कोउ जाइ शिखीगणा को सिखवै अनखातन क्यों मघवा खलसों। पपिहाऊ पियै किनजायके नीर अघाइके गोकुरके थलसों। अब ऊधो दया करि आये इते ब्रजबासिन पायो महाफलसों। थल बावरे दावरे बीचकरैं रह्यो मीनन काम कहा जलसों १६ करकी पथुरी जबलागि गई जबते ऋतुपावसकी बरकी। बरकी सुधि आयगई जबहीं बरषैं बरषा वो धराधरकी। धरकी नभचन्दमहादुरकै सजनी न लखै द्युतिचादरकी। दरकी छतिया सुमिरे बतियाँ पतियाँ न लिखै अपने करकी १७॥ कवित्त ॥ भादों गँभीरनीर बाढ़ो नदीनारन में उतरै न बटोही चित्त चञ्चल भ्रमावैंरी। पापीपपीहा मोर शोरकरैं बागनमें बाउरी बलाहक देह दावा सों लगावैंरी। करिके शिँगार मोतिनसों भराय माँगमाखन कविकहैं नेम आपनो जनावैंरी। जिया हुलसावैं तिया लोने गीतगावैं हम रामचन्द साहब की साहबी मनावैंरी १८ श्यामघन आवैं घेरि बिज्जु चमकावैं मन मदन जगावैं कूक बिरही सचावैंरी। मोहन पै जावैं ममसदनको लावैं बलदेव गुणगावैं हित तासों सरसा-

वैरी। आनँद मचावैं तब पासहूभावैं शुगा मारुत चलावैं हठि हियो हुलसावैंरी। अभिमत पावैं दुख नेकहू न छावैं चित धीरज बचावैं बिरहागिको बुझावैंरी १९ केते छ्रपताने घनपावस कमाने डरनेकहू न माने गहि दामिनि छपानैंरी। घूमि घहरानैं बलदेव बल पानैं अरु देतहैं निशानैं सो किसानैं सुख जानैंरी। आवत रौकानैं भेद ताको पहिँचानैं मनमदनकी खानैं सरसानैं बुँदवानैंरी। कीजै ना गुमानैं नेक मेरीकही मानैं अम जानैं हरिसानैं करिआनैं सुद ठानैंरी २० घन घहरात थहरात अङ्ग अङ्ग सब नीर छहरात राततम अतिछायो री। द्विज बलदेवकहै दादुरि दरारैं और झीली झनकारैं मोर शोरको मचायोरी। बचीहैं बसन्तते उपाय करि आशारहेग्रीषम बितायकै अकेलीकरि पायोरी। पावस छपाराकरि चपलाकी जोतिबेको अबहीं बरषि गयो फेरि झपिआयोरी २१ केतेसे उपायपाय पावस जगावैं मैन जियरा डरातधुनि मेघके नगारेको। द्विज बलदेव कहै दादुरि मचायो शोर मोर बरजोर और जोर जलधारेको। चलत समीर शुचि त्रिबिध न धीर रहै दामिनी दमकि ललचावै जो हमारे को। एते तौ सवाँरि साज नितही सतावैं सखी दोय कहौ कौन है बिदेशी वे बिचारे को २२ काजरसे कारेघन साजिकै सिधारे अब देत ये नगारे बरबारे जलधारे हैं। आनँद मचारिबलदेव हितकारे उमगात नदनारे हैं किनारेसम थारेहैं। मदनप्रचारे धुनिझीली झनकारे दिनआतपहू

गारे नभतारे ना निहारेहैं। चोर पटवारे नखअग्र गिरि धारे बनमाल उरडारे ते हमारे रखवारे हैं २३॥ सवैया॥ घेरी घटा घनकारी चहूँ दिशि शोर कठोर रहे करि दादुर। बन्द छटा छबिछाई हरी भरी भुम्मिलतानन की बिछीचादर। आदरसों रहे कूकि शिखी निशि कारी अँध्यारी करै हियकादर। ताल तमाल न जाल बिशाल रसालनपैबरये घनेबादर २४॥ कबित्त॥ मालती बितानपर भौंरन निवासकीन्हो मदमतवारे मन्द मन्द सुरगावहीं। कहै नन्दराम जोर मोरन को शोर सुनि उरमें दरारहोत झोली झहरावहीं। नद उफनात नदी नारनको जातघन घूमि घहरात नये नेरेनीर आवहीं। नज्जलन देखियत सज्जल जलदकारे कज्जल गिरीश कारे उपमा न पावहीं २५ देखौ नन्दराम यह पावसी समाज जोरि आइगो मनोज महि मण्डल समातना। देखुरी घटाको घेर ह्वै रहो कटाको साज याहू ते घटा को जौन जीवन देखातना। पटको पटाको सुनि छाती में छटाको छतहोतहै झटाको हित टाँको दरशातना। जायहै अटानप्रान देखिके अटाकारूप बिद्युत छटाका री चटाका सहिजातना २६ बाटिका बिहङ्गनपै वारिगा तरङ्गन पै बायु बेग गङ्गन पै बसुधा बगार है। बाँकी बेनु ताननपै बङ्कले बिताननपै बेश औधपाननपै बीथिन बजारहै। वृन्दावन बेलिनपै बनिता नवेलिनपै ब्रजचन्द केलिनपै बंशीबटमारहै। बारिके कनाकन पै बद्दलन बाँकनपै बिज्जुली बलाकनपै बरषा बहारहै २७ हरखे

हरीलह्वै अमरखे अनङ्ग हेत करखे कलापी चोपि चातक चमूपिली। उमड़े घटा हैं मानि करने छटा हैं छटाफेरत पटाहैं ठटा सूरकी हटाकिली। घेरिके अड़ेहैं बिन बूंदन लड़ेहैं औध आनँद खड़े हैं देखि दादुर बड़े दिली। कादर बियोगी हारि चादर बलाकफेरि बादर बहादुरको नादिर फतेमिली २८ येरी ऋतुपावस में मोर घोर रोरकरैं ठौर२ मंडुक कठोर शोर वैरह्यो। देखिके बकालीरी कपाली अरिजाली हाली आली बनमाली बिन काली मोहिके रह्यो। दामिनी दमंक बीच यामिनीबिलोकि नित कामिनीसकात बातमुख पै न वैरह्यो। झिल्ली झनकारैं मेघबारिधारधारैं पिक कोकिल पुकारैं यो महेशदत्त ह्वैरह्यो २९ ॥ सवैया ॥ छोट नदीनद मार्गहि रोकत दिक्षु बिदुक्षहिँ धारबही। छान छवाय सुखी सबलोग सेदेखत हर्ष बहार सही। नारिन मार बढ़ो झरिलागत कोकिला शब्दहिकूकि रही। द्विज शालग्राम हरि:शरसां ऋतु पावस भूमि झमाकि रही ३० आई असाढ़की कारीघटा घहरान लगे बदरा चहुँओरके। दूजे जो कन्त बिदेशगये सुधि पाई न नेकरही मनाहेरिके। उसराय स्वभाउ बिहङ्ग कहे मृदुबैन कहे जो सखी कहे टेरिके। सोने से चोंच मढ़ैहों तेरी बलिजैहों पपीहा पिया कहुफेरिके ३१ ॥ कबित्त ॥ सावन के मास मनभावन के सङ्ग प्यारी अटा पर ठाढ़ीभई घटाअँधियारीमें। दामिनीके धोखे चकचौंधे दृग कबिनाथ छबिनसों मुरि दुरे पियअङ्ग वारी

में। कोटि रतिवारैं ऐसी राधाजूके रूपपर रम्भारङ्क कहा शङ्कशचीके निहारीमें। पागिरही रसजागिरही ज्योति लाजनिमैं नेह भीजोवेह मेहभीजो श्वेत सारी में ३२ गये कहि आवनन आये यहि सावन में ऊधो मनभावन भुलाय रहेहैं तहीं। ह्वैरही बिहाल बाल ब्रजको गोपाल बिना रैन दिन नैनते अपार धार ह्वै बहीं। बैठि जन पुंज ठाम यमुना निकुंज धाम छाँड़ि श्याम पाहि वहां सोहत नहींकहीं। गरजैंहैं घन घोर लरजैं हैं बन मोर नन्द के किशोर सुनि अरजैं अजौ नहीं ३३ ॥ सवैया ॥ सावन के दुखदावन ये घनश्याम बिना घन आनि सतावैं। तैसे मिले त्तिन्हैं आनियमोर सुजोरके शोरजरेपै जरावैं। प्यारेको नाम सुनायसखी हिये पापी पपीहा ये शूल उठावैं। नेह नवेली भरी अबहैा दिन दोइक पीय जो और न आवैं ३४ भादौं की कारी अँध्यारी निशालखि बादरमन्द फुही बरसावैं। श्यामाजी आपने ऊँचे अटापै छकी रस रीति मलारहै गावैं। तासमै नागरके दृगदूरित्ते चातक स्वाति की मौजमें पावैं। पौन मयाकरि घूंघटटारैं दया करि दामिनी दीप देखावैं ३५ चहु ँ ओरन ज्योति सँगावै किशोर जगी प्रभा जेवन जूटीपरैं। तेहित्ते झरिमानों अगार अनी अवनी घनी इन्द्र बधूटी परैं। चहुँनाचैं नटीसी जराव जटीसी प्रभासोपटीसी नखूटीपरैं। अरी एरी हटापटी बिज्जु छटाछटी छूटी घटानते टूटीपरैं ३६ आई सोहाई नई बरषा ऋतु रीझ हमारी सोई पिय

कीजिये । जैसेही रङ्गलसै चुनरी मम तैसेहि प्राण तुम्हैं रँगलीजिये । भूलापै भूलहिं एकहीसंग सुबारकएतो कहो पुनि कीजिये । जैसे लसै घनश्याम सों दामिनि तैसे तुम्हारे हिये लगि भीजिये ३७ ॥ कबित ॥ चातक चिहुँकमत सुरवा कुहुँकमत झींगुर झिहुँकमत भेकी मननाय मत । चकवा चिकार मत पपिहा पुकार मत बूँदझर धारमत धारधहराय मत । कृष्णालालसाय मत पीर उपजाय मत बालमबिदेश पाय मैन तनताय मत । पौन फहरायमत चपला चवायमत धायमतधुरवा औ घनघहरायमत ३८ उमड़िघुमड़ि घनआवत अटानओट छन घनज्योति छटा छटकि छटकि जात । मोर करैं चातक चकोर पिक चहुं ओर मोर ग्रीव मोरिमोरि मटकिमटकिजात । सावनलौं आवन सुनोहै घनश्याम जको आंगनलौं आय पाय पटकिपटकि जात । हिये बिरहानल की तपनि अपार उरहार गजमोतिन को चटकि चटकि जात ३९ ॥ सवैया ॥ साजि सुहे दुकूलन बिज्जु छटासी अटानचढी घटाजोवतीहैं । रँगरातोसुने धुनि मोरनकी मदमातोसँयोग सँजोवती हैं । कहिठाकुर वेपिय दूरिबसैं हम आँशुनते तनधोवतीहैं । धनि वे धनि पावसकीरतिया पतिकी छतियालगी सोवती हैं ४० कूकिहैं कोकी गिरीनके ऊपर भूपर काम कसानलै भूकिहैं । भूकिहैं चन्दवधूनके बुन्दन फूकिहैं मन्द समीरन चूकिहैं । चूकिहैं प्रान बिना घनश्याम के श्यामघटा तनदेखतहूकिहैं । हूकिहैंदैके हियोकार

टूक अँध्यारीनिशामें पियाकहि कूकिहैं ४१॥ कबित ॥
पावस अमावसकी अधिक अंधेरीराति साथुहै प्रबास मेरी ननँद नदानजू। सूनो सुखभौनहै परोसको भरोस कौन पाहरू न जागतपुकारपरे कानजू। पंडितप्रबीण प्यारो बसत बिदेशपति यातेहै अँदेश अबरसिक सु-जानजू। एहो ब्रजराजराजमुनिके अरजमेरीआजु बसि जैये बसिजैये तौ बिहान जू ४२ घन मतवारे गज पौन हरकारे बकबीर निरधारे मोर ढाढिनकी तानपर। बिज्जु बरछीनकी चमक चहूं ओरनते त्यों नकीब चातक पुकारन प्रमानपर। देखिदेखिकांपत बियोगी जन कातर सुबेनीकबिकहैं इन्द्र धनुष निशान पर। कोकिलकी कुहुक दुहाई फिरी ठौरठौर पावस प्रबल दल आयो महिमानपर ४३ ॥ सवैया ॥ केकीकिकूक पिकी कि पुकार चहूंदिशि दादुर दुंदि मचायो। भू-मिहरो चमके चपला अरु श्यामघटाजुरिअम्बर छा-यो। ऐसेमें आवन होइलछू अबला लखिलाल सँदेश पठायो। बावनको पगभो बिरहासो अहो मनभावन सावन आयो ४४ आवतेगाढ़ असाढ़ के बादर मोतनमें अति आगि लगावते। गावते चावचढ़े पपिहा जिन मोसों अनंगसों बैर बँधावते। धावते बारि भरे बदरा कबिश्रीपति जू हियरा डरपावते। पावतेमोहिँ न जीवते प्रीतम जोनहिं पावसमें घरआवते ४५ ॥ कबित ॥ बोलतन मोरगयो चंदनमलीनभयो चातक रटनि बकी काहेते भुलानीहै। कोकहू मिलेहैं तिन्हैं दुख सरसान्यो अति

हरय चकोरनके प्रीति कुम्हिलानीहै। बंशीधर कहै भौंर मंडित कलोलकरैं केकरि अडोलरहे सौत मन हानीहै। चंचला हेरानी घनबानीको न लेशरह्योकौन रीति पावस की आजु दरशानी है ४६ उठे घनजाल देखि दामिनि कपाल देखि देवराज चापदेखि त्रास अति पावतो। बुंद वृन्दपातदेखि सूर्य अप्रकाश देखि दिनहूको अंतदेखिचैनहूं न पावतो। नभको बितारदेखि बायुसुख चारदेखि अति अंधकार देखि मोमैंसन ला- वतो। होतो उहांपावस तौ येरी सखी बातसुनौ बीस बिसे आजही हमारो कन्तआवतो ४७॥ सवैया॥ काहे को रूसत पावसमें इन बातन तोहिँन कोऊ सराहै। पौनलगे लहराती लतातरु कुंजकदम्बमें केकीकराहै। बोल सुहावने चातककेलगैं इन्द्रवधू गराधाईधराहै। बोलि पठाई उतैं उनये उनये नये देखिनये बदराहै ४८ बहु फूलैं कदम्बनिकुंजनमें अरुभावतो पौनबहैनितमें। बरजैं जनिकोऊ मयूरनको गरजै घन आपनेहीमतमें। शिवलालभयो मनभायो जितो अबऔर करौरीतितो नितमें। बरसाइतमें घरआइगये बड़भाग भटू बरसाइ- तमें ४९॥ कवित्त ॥ श्यामघन आये आली श्याम परदेश छाये श्यामकंठ शत्रुआगि अंगमें बढ़ैलगी। श्यामकंठ बोलिसुनि श्यामकंठसौंरिआवै कोकिलाहुकूकिकूकि प्राणन कढ़ैलगी। झिल्ली मंडूक कूक सुनिहिये होत हूक रामदास तातगुणनिधिसों चलैलगी। रैनिअंधि- यारी होन लागी द्रुम बाढ़ी दशकन्ध बन्ध प्यारीऊ

पयानासे करैलगी ५० सोरीसोरी बही चहूं ओरते बयारि बड़ी घटन बगारि बड़ो आसरी सोदैरहो। याहीहेतु छोंड़िकै नदीनि नद येतेदिन तेरी आशागहेतेरी ओर तकतैरहो। नीरदतू आपनो बिचारि देखु नाम शम्भुकहांऐसे औसरमें ऐसो हठलैरहो। गरजि शहुलसायो हियो चातकको बुंदनके समैमें निमुंद मुखकै रहो ५१ ॥ सवैया ॥ दादुरि चातक मोर करो किनशोर सुहावन कै भरुहै। नाहत्तेही सोईपायो सखी मोहिं भाग सोहागहुको बरुहै। जानि शिरोमणि साहिजहां ढिग बैठोमहा बिरहा हरुहै। चपला चमको गरजो बरसो घन आशपियातो कहा डरुहै ५२ ऊंचीअटापै लखैं घटादोऊ दुहूंनकी ह्वैरहि रूप कलासी। बेणी बड़ेबड़े बुंदनते इकबारही बारिधि कौन हलासी। चौंकिचली बिचली गचपै लचकी करिहां कुचभार छलासी। त्योंघनश्याम गही अबला फिरिकै गरे लागि गई चपलासी ५३ ॥ कबित्त ॥ तोरहैन बीरकोऊ करैना समीरधीर बाढोश्रम नीरमेरो रह्योना उपाउरे। पंखाहैन पाससक आसतेरे आवनकी सावनकी रैनि मोहिं मरत जियाउरे। संगममें खोलिराखी खिरकी तिहारे हेत होतिहैं अचेत मेरी तपनि बुझाउरे। जानु जानिजानोकौन कीजियै उतालगौन पौनमीतमेरेभौन मन्द २ आउरे ५४ दिशि बिदिशानते उमड़ि मढ़ि लीन्हो नभ छोरिदिये धुरवा जवासेयूथ जरिगे। डहडहे भये द्रुमरंचक हवाके गुण कुहकुह मुरवा पुकारि

मोद भरिगो। रहिगये चातक जहांके तहां देखतही शोभनाथ कहूं कहूं बुंदहून करिगो। शोरभयो घोर चहूंओर नभ मंडलमें आये घनआये घनआयकेउमड़िगो ५५॥ सवैया॥ हरीहै सबैसुधि बुद्धिहरी तियसेजपरी तन चेतनरीहै। नरीहै कहां रति रूपरतीकन सोनेके सांचेढरी पुतरीहै। तरीहै मनोज महानँदकी नृपशंकर शोभित लाल डरीहै। डरीहै खरी यहि पावसमें शिखि शोरसुने लखिभूमि हरीहै५६ धावन भेजु सखी वहिदेश-बसे जेहिदेश पियामनभावन। भावनभोरया लूकलगी तनबीच लगी जियरा झरसावन। सावनमें न भयो हनुमन्त दोऊमिलि झूलि मलारहि गावन। आवनमोहिं सुहातनहींबदरा बदराइलगेजुरिधावन५७ कबिबेनीनई उनईहै घटा मुरवा बनबोलत कूकनरी। छहरै बिजुरी क्षिति मंडल छ्वै लहरै मनमैन भभूकनरी। पहिरो चुनरी चुनिकै दुलही सँग लालके झूलिये झूकनरी। ऋतुपावस योंहीं बितावतीहो मरिहौ फिरबावरी हूकनरी ५८॥ कबित॥ तीजनीके रोज सबसजनी गईरी उहां झूलन हिंडोला ब्रजबाला बीर बरबर। तोयनिधि तौलौं उठिधुरवा धरालौं घूमिधाराधर धरणि बरसि परो धरधर। मोहिं तौ कन्हाई करिकामरी बचाइलीनो और सबभीजी तिनतनहोयँ थरथर। ऐसो बदनाउं यहिगाउं मो गरीबिनीको देखि सखी चूनरी चवाउ फैलो घरघर ५९॥ सवैया॥ चमकैं चपला झमकैं झुगुनू रव भेकिनको भय छावत है।

पिक झिल्लिन को गन मोरनसों मिलिकै अति शोर सुनावतहै। कबिगोकुल प्यारी बिना गिरिधारीकहौ अबकौन बचावतहै। इहिओर लखौ क्षिति छोरहितै घन घोरतसों चलो आवत है ६० धुरवानकि धावनि माने अनंगकि तुंगध्वजा फहरान लगी। नभ मण्डल ह्वै क्षितिमण्डल छ्वै छनज्योति छटा छहरानलगी। मतिराम समीरलगे लतिका बिरही बनिता थहरान लगी। परदेशमें पीवन पायो सँदेश पयोद घटा घह-रानलगी ६१ ऋतुपावस श्यामघटा उनई लखिकै मन धीरधिराती नहीं। धुनि दादुर मोर पपीहनकीसुनिकै क्षन चित्त थिरातीनहीं। जबते बिछुरे कबिबोधाहितू तबते उरदाहु बुझाती नहीं। हमकौनसे पीरकहैंजिय· की दिलदारतौ कोऊ दिखाती नहीं ६२ ॥ कबित ॥ फुही फुही बंदझरैं बीरबारि बाहन ते कुहू कुहू सुनि परैं कूक कोकिलानकी। ताही समय श्यामा श्याम झूलत हिंडोरेचढ़े वारौं छबि कोटिनमें रति पंचबान की। कुण्डल लटक सोहै भृकुटी मटकमोहै अटकचटक पटपीत फहरानकी। झूलति समयकी सुधि भूलति न हूलतिरी झूकनि झुकनि उझकोरनि भुजान की ६३ कारे २ बादर डरावने लगत अब दादुर की धुनि सुनि भूली दशा तनकी। बंदकी झकोर झकझोर पुरवाई करै हरै मनमोर शोर चहूँ ओर बन की। हरी २ ल-तिका करावै घरी २ यादि इन्द्रगोप लखि लालगुञ्ज मालगनकी। नन्दके कुमार बिन लागै उर आर ऊधो

पपिहा पुकार झनकार झींगुरन की ६४ ॥ सवैया ॥
परकारज देह को धारे फिरौ परयन्य यथारथ ह्वै
दरसौ। निधि नीर सुधा के समान करौ सब भाँतिन
सज्जनता सरसौ। घन आनँद जीवनदायक हौ कछु
मेरियो पीर हिये परसौ। कबहूँवा बिसासी सुजान
के आंगनमो अँशुवानहु लै बरसौ ६५ भजि बेगिचलौ
मथुराको भटू बचिहै न कोऊ करि जोरनरी। घिरि
कारी डरारी घटा नभते लटकी धुरवानकि डोरनरी।
अति चाव चढ़ी लहकै चपला बहकै बरहीन के शो-
रनरी। वह पाछिलो बैर सम्हारि पुरन्दर चाहै अबै
ब्रज बोरनरी ६६ भूमि हरी चहुँ ओर भरे जल है थ-
थरो ऋतु आई अषाढ़ी। मीठी महाधुनि मोरन की
कबिराज सुने सबकी रुचि बाढ़ी। झूलत गोपी गो-
पाल मिले वृषभानके आँगन भोरहै गाढ़ी। हेरे हरी
मिस वाकी बटाभरि फेरि घटा में अटा पर ठाढ़ी ६७
उत कारी घटा इतमें अलकैं बक पांति उतै इत मोति
लरी। उत दामिनि दन्त चमंकैं इतै सुर चाप उतै इत
भौंह तरी। उत चातक तौ पिउपीउ रटै बिसरै न इतै
पिउ एक घरी। उत बुन्द अगाध इतै अँशुवा बिरहोते
मनों घन होड़ परी ६८ ॥ कबित ॥ आयो सखि सावन
बिदेश मनभावन जू कैसे करि मेरो चित हाय धीर
धारिहैं। ऐहैं कौन झूलन हिंडोरे बैठि सङ्ग मेरे कौन
मनुहारि करि भुजा कंठ धारि हैं। हरी चन्द भीजत
बचैहै कौन भीजि आप कौन उर लाइ काम ताप नि-

रवारिहैं। मान समै पगपरि कौन समुझैहै हाय कौन मेरी प्राणप्यारी कहिकैपुकारिहैं ६९ घहरघहरघहरात चहूँघाते घेरि सघन घुमड़िघनघन बरसतहैं। छहर छहर छहरात क्षितिमण्डल पै छूटि छूटि बुन्दन ते छर्रा को छरत हैं। भहर भहर भहरात भौन भीति भारी भीति भारी भारती के भौनहूँ भरत हैं। थहर थहर थहरात मेरो गात आली बिजय अनन्द बिदेश में बसतहैं ७० ॥ सवैया ॥ भूमि हरी भईं गैलैं गईं मिटि नीर प्रबाह बहावे बहाहै। कारी घटाने अँधेरो कियो दिन रैनिमें भेद कछू न रहाहै। ठाकुर भौनते दूसरे भौन लौं जातबनै न बिचार महाहै। कैसेकै आवैं कहाकरैं बीर बिदेशी बिचारे न दोष कहाहै ७१ घूमि घराघन की गरजैं चमकैं चपला क्षिति कूँ फिरैं फेरी। शोर करैं चहुँ ओरते मोर जुरीकरैं कोलिया कूक घनेरी। गोकुल सीरो समीर लगै केहि भाँति सो धीर रहैंगे धरेरी। मोहिँ बिना यह सावनकी निशि भावन कैसे बितायहैंयेरी ७२ घेरिघटा उनईचहुँघा क्षनएकमेंबिज्जुछटा छबिछायहैं। श्रीपतिरायकहा करबी अरबी करिकै पिक चातक गाय हैं। कारा पिछौराउतारि हहा अबचनरीलाल अनूप सोहायहैं। हौंजुसुनी घरी चारिकमें तिया आजु तिहारे पिया घरआयहैं ७३ ॥ कबित्त ॥ एकतौ बिदेशी बिन सेसही दुखीहैं हम दूसरे प्रचण्ड लागेपावस सतानेरी। बचनजू बादरकोआदर न मेरेयहां अजब अनारीआप बिरहबढ़ानेरी। बर्षिबे

कोहौसहैतो जायमथुरामेंबर्य सांवरे मिलैंगेतोहिं सौत कोठिकानेरी। अरज न मानैंनेक हरजहमारोकरै गरज नजानैंमेघ गरजनजानेरी ७४ कैसेंचितचोरैं गुगा पवन झकोरैं मोर अति बरजोरैं मोरैं सुखमाबदनके। द्विज बलदेव बरबानिक बसनबेश बीजुरीलैधायेहैं बिरादर मदनके। तूही यशलीजै दरशायनेक दीजै अधरामृत को पीजैमोद दाड़िम रदनके। प्राणप्रिय पावसअनंद अतिछावन ये आयेबीर सावन सोहावन सदनके ७५ काजरसे डारेलखि मोरगण भारे कूककीन्हेंदईमारे मोदछाये अतिमीनको। द्विजबलदेव बकपंगति विशेष ताई त्योंही शोर मण्डित मँडूक गन पीनको। भरत सनाके नाके नाकेसब घेरिलियो कैसी करिवे है उर शोभ धरदीनको। धंधुर धुधारे धराधारे अतिभारेसारे आयेघनकारे डरपावैं बिरहीनको ७६ ॥ सवैया ॥ नई नोखी भईहो कहा तुमहीं उमहो रहतो मति दीन्हो दई। दई कान्ह की बीरो न लेत भटू तुम्हैंया बतिया कहौ को सिखई। खई में न बड़ो भयो कोऊ कहूं किनहीं अतिहीरिसपरिगई। गइभार में नाहींननाहीं करो लखो कैसी घनेरी घटा उनई ७७ प्यारो मनावत प्यारी न मानति बैठिरही करि प्रीति की टूटन। कारी घटा घहरान लगी सुउठी तब चौंकि चितै चहुँ खूटन। धाय डेराय लगी पिय के हिय सो कवि देव सुनो सुख लूटन। मानतो छूट्यो महाकरिकै मनतेनहीं छूटति मानकी छूटनि ७८ दुख दूरिभयो वहि ग्रीषम

को करिबे पिक चातक गानलगे। चपला चमकैलगीं चारों दिशा निशिमें जुगुनू दरशान लगे। गिरिधारम पावस आवतहीं बकवृन्द अकाश उड़ान लगे। धुरवा सबओर दिखानलगे मोरवानके शोर सुनानलगे ७९॥

कवित्त॥ कारी अँधियारी रैन बीजुरी चमंकै ऐन दादुरके बैन मेघ बरसै फुहूँ फुहूँ। पवन झिकोर झोर झिल्लिन की घोर शोर चातक चकोर मोर कुहुकै कुहूँकुहूँ। ताहीसमै सुधि मनठानी मनमोहनकी ढुरै लागे आंशु नेक नयनसे लुहूँ लुहूँ। मसकि मसकि प्यारो ज्यों ज्यों लपटात जात त्यों त्यों मुख मोरि मोरि करत उहूँ उहूँ ८० लपटि लतासी परयंक पटियामें रही डोलैना डोलाये कर पायन दुहूँ दुहूँ। केती केती भांतिनसें हरिजू बुझाय हारे कोकिलाके नाईं जैसे कुहुकै कुहूँ कुहूँ। मेरी ओर फेर मुख बीरहू न खात काहे उरसें लगाइ कर बोलत मुहूँ मुहूँ। मसकि मसकि प्यारो ज्यों ज्यों लपटातजात त्यों त्यों मुख मोरि मोरि करत उहूँ उहूँ ८१॥ सवैया॥ सखाहीं सखा दौरैं दुरैं दरशौ छबिपुंज किशोर उमासे करैं। अति दीन बिना पिय जान जिये बिरहीन हिये बरमासे करैं। अरु देखी भई कबहूं थिरहू घनको हरिकी उपमासे करैं। चहुंघाते महा तरपै बिजुरी तम तोममे आज तमासे करैं ८२ गरजै घन दौरि रहे लपटाइ भुजा भरिकैं सुख पागी रहैं। हरिचन्दजू भीजि रहैं हियमें मिलि पौन चले मद जागी रहैं। नभ दामिनिके दमके सत-

राइ छिपी पिय अंग सुहागी रहैं । बड़भागिनि ओई
अहैं बरसातमें जे पिय कराठ सों लागी रहैं ८३ आये
हैं आज घने घन घोर सो बोलत मोर बियोग जनाये ।
जनायके मोह बियोग सों योवन मारत कामके बाण
चढ़ाये । चढ़ायके लायेहैं श्यामघटा बदरा चहूँ ओर
महा झरि लाये । लायकै मोहिं कहां बिलमें अजहूँ
नहिं पीउ बिदेश सों आये ८४ ॥ कवित्त ॥ घोर घन घु-
मड़ि घटानकी घुमराडनमें बीजुरी प्रचराड नेक धीरज
धरीरहौ । दादुर चकोर मोर शोर चहुँओरन ते निशि
दिन एक झर बरसै हरीरहौ । उर लपटाय सुखपाय
नवनीत संग जंघजुरि केलिरस रंगमें भरी रहौ । गरज
हमारी कर दरज दिलोंदे बीचप्यारी नेक और घरी
द्वैक तौ परी रहौ ८५ उमड़े सरित सर झारे बेशुमारे
अति बहे नदनारे छहरारे जल थलपै । मरुत हहारे
तरुवान तोरिडारे पातपात झोरिडारे झारिडारे जवा-
हलपै । पैदल सवारन चलत घाट बाटनमें भरोहे चहल
बन्दि रहल गहलपै । कन्त बिन कामिनी भयामिनी
अटापै लगी घेरेरहे घटा नेक मेरेहि महलपै ८६ ॥ सवैया ॥
चातक मोर करैं अति शोर उठी घन घोर है श्याम
घटा । चमकै बिजुरी अति जोर भरी अरु लागीझरी
लिये ठाट ठटा । शोक भरी पछतावै खरी बिरहागि
जरी शिरखोले लटा । कराहिके हाय करै पछिताय
वह हाफ़िज देखिकै सूनी अटा ८७ गरजी पुनि घोर
घटा सजनी रजनी दिन ऊबत भीतरजी । तरजी तड़िता

नभ शोर सुनेसुमन मन कान भयो मरजी । मरजोहित हाहा करी कितनी अरजी न कबूल कियो बरजी । बरजी नहिँ मानत मेरी भटू भयो चातक सों जियको गरजी ८८ आयो अषाढ़ सुनो सजनी रजनी दिन घेरि घटा घन छायो । छायो बिदेशहि रामचरित्र अँदेश लग्यो है सँदेशन पायो । पायो भले अपने बश कैधौं कहूँ कोऊ सौतिन सेज लुभायो । भायो कहा उनके मनमाहिँ कि पावसआयो पियानहिँआयो८९ लागो अषाढ़ सबै सुख सोवत मैं जियमें बिरहादुख बोई । सावन में सब केलिकरैं मैं अकेली परी सँग साथ न कोई । कैसेजियोंघर हेसजनी फिरि भादवँमें घनश्याम न होई । कौनसी चूकपरी बिधना बरसातगई बरसात न सोई९० ॥ कबित्त ॥ सावन सुहावन मनभावनकी राह देखि सगुन जगावैं कब नाह घर आवैंरी । देखि घन घटा चित चौगुनो चकित होत छातिन बिच पातिन की लीकैं करिजावैंरी । चूनरी कुसुम्भ रँग सोहैं शिर सखियनके झूलतीं हिँडोरा बिरहिनिनको लजावैंरी । जिया हुलसावैं त्रियालोने गीत गावैं हम रामचन्द साहबकी साहिबी मनावैंरी ९१ ॥ सवैया ॥ यह सावन शोक नशावनहै मन भावन यामें न लाजैं भरो । यमुना पै चलो सुसबै मिलिकै अरु गाय बजायकै शोकहरो । इमि भाषत है हरिचन्द पिया अहो लाड़िली देर न यामें करो । बलि झूलो झुलाओ झुको उझको यहि पाखै पतिव्रत ताखै धरो ९२ ॥ कबित्त ॥ श्याम घटादेह

जाकीदंतपदप्रवेत जाकीपौन पुरवाईकीपुकार दरसतु है। मन्द मन्द दामिनि मदाइनि की भूल तापै अंकुश छटानन की कौन सरसतु है। ठाकुर कहत तापै मैन असवार भयो झूलतहै घरीघरीपौन भरसतु है। प्रेमको सँघाती साथी बालम बिदेश छायो छातीपर घूमिघूमि हाथी बरसतुहै ९३ सुन्दर सुखारे अनियारे कारेकारे घन धारे बहु भेष धाम धारे बरसतु है। तरुणा तरारे न्यारे न्यारे उदगारे पौन दादुर दगारे धुनि धारे दरसतुहै। पीपी कै पुकारे पपीहराउ प्यारे प्यारे सारे दुन्दुभि धुकारे तो अनङ्ग सरसतुहै। अचरज यामें कहु कौन भुवनेश जोपै श्याम मिलबे को मन मेरो तरसतु है ९४ ॥ सवैया ॥ दादुर बोल मचै चहुँओर सुने बिरही हिय ताप बढ़ावत। पावस की झमकी रतिया पति की छतिया बिन कौन बितावत। बोलहिंगे अलि कुञ्जनमें बनके मुरवा धुनि टेर सुनावत। काह कहीं सखि नाह बिना अब ये बदरा बदराह बतावत ९५ आवत देरभई बरसै न लगे करसै पिक चातक दादर। मोर सशोर लगे घरयै चित चोर सने सुख सौति स-हादर। बन्दि उपाय बनै न किये नहिँ फारिके लाज समाज कि चादर। बाढ़ धरायके देती जराय ये दायक गाढ़ असाढ़के बादर ९६ ॥ कबित्त ॥ बाजत नगारे घन ताल देत नदीनारे झींगुरन झांझ भेरी भृङ्गन बजाईहै। कोकिल अलाप चारी नीलकराठ नृत्यकारी पौन बन धारी चाटी चातक लगाईहै। मशिमाल जुगनू सुवा-

एक तिमिर थार चौमुख चिराग चारु चपला जगाई है। बालम बिदेश नये दुखको जनमभयो पावस हमारे लायो बिरह बधाईहै ९७ हरित हरित हरि लेत मन बेली बन सघन घटान घन घिरि घहराने हैं। बोलैं चहुँ ओर कीर कोकिल पपीहा मोर कुञ्जकुञ्ज गुंजैं अलि पुंज मनमानेहैं। अंकुर बिछाय हित कीनो मरकत मणि तामें इन्द्रबधू जाल लाल सब छाने हैं। दिशि विदिश देख द्युति चाह मनभावन को सावन की सब-जीमें सबजी भुलाने हैं ९८ कारेकारे बादर सो बरषत आदरसों दादुर पपीहा पिक उर न समातके। ठौरठौर सरस सरोवर अथाह भये गुंजरैं मधुप पुंज पातैं जल जात के। हरी हरी दूब छोटी तापर बिराजैं बुन्द उपमा बनीहै मित्र निरखि सिहात के। सावन सनेही मनभावन रिझावन को मोतिन गुथाये हैं दुलीचा स-कलात के ९९ मानो एक चोप तम्बू ठाढ़ो है सुरुख श्याम डोरी मखतूल तामें लागतसुहावने। कहै शिव-राई शोर करत कलापी पापी झिल्ली झनकारत बि-रह उपजावने। ताही समै प्यारी सखियान ते कहत बात लाल बिन घरी घरी युगन बितावने। काम बाद-शाह के हुकुमते फराम मानो सबुज बनातके बिछाये हैं बिछावने २०० सावन सजल घन बरषैं अखण्डधार चहूँ ओर नार खार ताल झिलि भरिगे। झिल्ली झ-नकार रव दादुर अपार मोर शोर कुहुँ कारन उदार छबि करिगे। हरी हरी भूमि तापै इन्द्रबधु फैलिरहीं

उपमा सुताकी रसराम चित्त धरिगे। सबुज बनात पर मानो मैन जौहरीकी गाँठिते उचटि पुंज मानिक बिथरिगे १ बादर उतङ्ग अङ्ग डोलत अनङ्ग भरे बगन कतार दन्त दीरघ सँवारेहैं। चरखी चमक तरकत औ गरजगुंज बरषै मदन निशि नीरके पनारेहैं। सोमनाथ प्यारे नँदनन्दके बिरह जान ब्रजमें उमङ्गन करोर हन कारेहैं। आये घन भारेमैं बिचार उर धारे येरी कारे रङ्गवारे ये मतङ्ग मतवारे हैं २ पावस बिबश निशि बासर निशासे भासे भन पजनेश देशदेशन सवाँरे से। धूम रङ्ग धीरे धीरे धराधर शृङ्गन पै धावत अधर धूर धुन्ध गतवारेसे। छुटे बादवाननि बिलन्द ज्यों जहाज मानो आवत हिलत नित नेह नद वारेसे। होती घनी धूमै धराधरनि की धूमै घेरि घेरि घन घूमै झूमै गज मतवारेसे ३ नाचत कलापी जूह संगलै कलापिनको झिल्लिनकी भीर झनकारकैं जमकि रही। दादुरकरत शोर घोर चहुँ ओरन सों देखु बगपाँति बिरहीन को धमकि रही। कहै हनुमान मान छोड़ि प्राणप्यारी जाय मोहनसों मिलि देखु लतिका लमकि रही। छाय छाय मेहरहे चावन सों ब्योम माहिं धाय धाय चहूं ओर चपला चमकि रही ४ मेचक कवच साजि बाहन बयारि बाजि गाढ़े दलगाजि उठे दीरघ बदनके। भषणा भनत शमशेर सोई दामिनिहै हेत नर कामिनिके मानके कदन के। पैदर बलाके धुरवान के पताके देखि घेरि घेरि जात चहुँ ओरहिँ सदनके। नकर नि-

यादर पियासों मिलि सादर ये आये बीर बादर बहा-दरसदनके५ कैसीकरोंबीर यह घेरिदिशाविदिशानि फेरि नभमण्डल घमण्ड घनछायोरी। पीड़ित पियास परमातुर पपीहापापी पीउपीउ कहि तन अतनजगायोरी। कहतकिशोर तैसी पवन झकोरनसों मोरन त्यों महत मलार सुर गायोरी। बड़े बड़े बुन्दन विलोकि बारिधरबीर अबहीं बरसिगयो फेरि झपिआयोरी६ मोरनके शोरसुनि पिककीपुकार तैसी चातकचिकार सुनि सूनी श्याम यामिनी। जुगुनू जमक देख झिल्ली की झनक लेख भयसोंबिशेखशेख डरैं गजगामिनी। झरन झरतनीर कम्पतशरीर येरी बालमबिदेशधीर धरैं कैसे कामिनी। मारे डारैं मदन मरोरे डारैं दादुर ये दाबे आवैं बादर दबाये आवैं दामिनी ७ मानगढ़ घेराहोत गरज अरेरा होत दादुर दरेरा होत जेरा होत याम को। पिक भटभेराहोत धकपक हेराहोत गरब अरेराहोत बेराहोत साम को। पवन सरेराहोत धनुष धरेराहोत बुन्दन शुरेराहोत खेराहोत बामको। बीजु-री उजेराहोत कैाधा चकफेराहोत घनन को घेराहोत डेराहोत कामको ८ बिज्जुकी छटामें घनघोरकी घटा में बकपाँति की प्रभा में कैधैां नैननि लगायेना। दादुर कलामैं जोरशोर सरनामैं पीउ पीउ पपिहामैं हामैं शोरसरसायेना। शक्रगूजामैं नीलमणिसी ल-लामैंभूमिसोहै ठामठामैं तामैं कामैंतेजतायेना। मोर हरखामैं नदीनदतरखामैं अजहूं लैां परखामैं बरखामैं

हरि आयेना ९ झरकी झरनझार झरसी झरत अंग झंझाकी झकोर झुकि झपट झरीनमैं। छटाकी उछटि छबि छपन छपाकरकी छायरही छनदा सुहाई दिनदीनमैं। चातक चिकार चकचौंधा चारु चहूंदिशि चक्रित चकोर चकवानके बिहीनमैं। आवसपरे हैं पुषीकावस परायेदेश पावसमें थ्यावस रह्यो न बिरहीनमैं १० कैधौं वहिदेश घनघुमड़ि न बरसत कैधौं मकरन्द नदीनद पथ भरिगे। कैधौं पिक चातक चक्रित चक्रवाकबाक मत्तभये दादुर मधुप मोर मरिगे। मेरेमनआवत न आली प्यारे आवतहैं कामक्रूरनिकर महीतेधौं निकरिगे। कैधौं पञ्चशर हर फेरकै भसम कीन्हो कैधौं पञ्चशरजूके पांचौशर सरिगे ११ कैधौं उपवन घनघेरिन घुमड़िआये कैधौं कीच भूतल में प्रगटी नहीं नई। कैधौं दाब दादुर रहेहैं डरव्यालन के कैधौं पापी पपिहा पिया की टेर नाईई। घासीराम कैधौं पिक बाजनको त्रास मान्यो कैधौं वहिदेशबीर पावस नहींठई। कैधौं काम श्यामजूके तनते निकरि गयो कैधौं मेघ जूझे कैधौं बीजुरी सतीभई १२ कैधौं मोर शोर तजि गयेरी अनत भजि कैधौं उत दादुर न बोलतहैं ये दई। कैधौं पिक चातक महीपकाहूमारि डारे कैधौं बकपांति उत अन्तर्गतिह्वै गई। आलसकहत आली अजहूं न आयेपिय कैधौं उत रीत बिपरीत बिधि ने ठई। मदन महीप की दोहाई फिरिबेते रही कैधौं मेघजूझे कैधौं बीजुरी सतीभई १३ ओढ़े नील

सारी घन घटा कारी चिन्तामणि कुचन किनारीचारु चपला सोहाई है। इन्द्रबधू जुगुनू जवाहिर की जगा ज्योति बगमुकतान माल कैसो छबि छाई है। नील पीत श्वेत बर बादर बसन तन बोलत सुभृङ्गी धुनि नूपुर बजाई है। देखिवेको मोहन नवल नट नागर को बरषा नवेली अलबेली बनि आई है १४ कारे कारे धुरवा चिकुर चारु चमकत चञ्चला बरङ्गना सु अति अलबेली है। पचरँग अम्बर अडम्बर पटम्बरनि मुद्रित बदन चन्द सुखद सहेलीहै। जुगुनू जमाति नैन बगुला कतार हार केकी धुनि नूपुर अनूप रसरेली है। कबि शिवदास दिन दूलह मदनभूप बानक बनकबनी बरषा नवेलीहै १५ चंचलासी चौंकति चहूँघा आँशु बरषत फैले तम केशकीन सुधि उरधारी है। इन्द्रगोप झारी है अँगारी बिरहागि वारी भयणा जराऊ ज्योति सिंगान बिसारीहै। शङ्कर बखानै ह्वै पपीहा पीव पीवरटै लाज हंस जामें गति दूरकी निहारी है। शोभा लखि न्यारी मन आपने बिचारी बरषाहै यह भारीकी बियोग बारी नारीहै १६ चूनरी सुरङ्ग साजि सहीअङ्ग अङ्गन उमङ्गनि अनङ्ग अङ्ग अङ्ग उमहतहैं। झुकि झुकि झांकति झरोखनते कारीघटा चौहरे अटा पै बिज्जु छटासी जगतहैं। द्विज देव सुनि सुनि शबद पपीहन के पुनि पुनि आनँद पियुषमें पगतहैं। चावन चुभीसी मन भावनके अङ्क तिन्हैं सावन की बूँदैं ये सुहावनी लगतहैं १७ रसरँग भरे दोऊ उज्वल अटापै खरे हरे

हरे हेरत सुहेत हिये पटि उठैं । दमकि दमकि जाति दामिनी चहूंघा चारु चमकि चमकि चूनरी में अङ्ग छटि उठैं । कहै ऋषिनाथ मोर दादुर करत शोर जोर जोर जमकि पपीहा पीउ रटि उठैं । घुमड़ि घुमड़िघन घिरि घिरि आवैं मोद उमड़ि उमड़ि दोऊ छतियां छपटि उठैं १८ घने घन घेरि घेरि उमड़ि घुमड़ि आये ऐसो तम छायो मानो भूमि परसतहैं । चपला चमकि चहूं ओर चारु चोरैं चित तामें बकपांतिन के पुंज द-रसतहैं । इतै झरिलागी उतै अनुरागी भये दोऊ कैसे हाव भावनमें मैनसरसतहैं । सूरज सुकबि आजु लखैं पिय प्यारी संग लाल बँगला में लालरंगबरसतहैं १९ आवत कदम्ब कुसुमनको परागपूरि सीरी पौन लह-लही ललित लतान की । घोरैं घन घेरि घेरि पावस अँधेरी पिक केकिनकी टेर शुनि अरि होत प्रानकी । ऐसे समय कुञ्जभौन आनँद उछाह बाढ़े ठाढ़ेढिग ल-लना मनोरथनि भानकी । मोहन मचाई बात करत रचाई दोऊ छबिसों बचाई छीटैं ओट छतनानकी २० चपला चमक घन गरजनि साज संग सहित अनंग के तरंग धरिबो करैं । शीतल सुगन्धयुत पवन सहायकारि बसुधा अपार जलधार भरिबो करैं । चातक पुकारे मोर शोर करि हारे बन झिल्ली झनकारे हर भाँति अरिबो करैं । पियके प्रयङ्कमें निशङ्क ह्वै भरति अङ्क अब घन घोर चहुँ ओर करिबो करैं २१ पकरे उरो-जन के सकुच नवाय ग्रीव नाहीं नाहीं कहि कहि बातैं

अरतीहैं जे। हरी हरी डारन में परे जे हिंडोरा तिन्हैं देखि झूलिबे को अनखाय लरतीहैं जे। कहै हनुमान तेई धन्य सुन्दरीन माहिं पैन्ह लाल सारी हिये मोद भरतीहैं जे। सावन को हेरि घटा बैठी रंग रावटी में भावनकी गोदमें कलोल करती हैं जे २२ अवली अलीनकी अनोखी नवला लैसंग चोखी रतिहूतें राजै आनँद अथोरे पै। साजे बिन दूषणके भूषणको अंगन में औरही अनूप आब आई मुख गोरेपै। कहै हनुमान घरहाईके सकोचनते हेरति न लालै भई शोचनकरोरेपै। हूलै हिये सौति के अतूलै छबि धारि झूलै मन सों पियाकी गोद तनसों हिंडोरे पै २३ हेरिकै बहार बरषाकी बलि बार बार आई बन बाग बीच मदन मरोरे पै। आस पास गावैं मंजु घोषाभी सहेली सबै मंजुल मलार मन मोहैं बरजोरे पै। कहै हनुमान ता समान में शचीहै कहा जाके रूप सोंहैं रहै रतिहूनिहोरेपै। हीरन जटित चारु चाँदीको तखत डारि बैठी बाल झूलतिहै हेमके हिंडोरे पै २४ जाके मुखचन्द सोंहैं लागतहै मन्द चन्द कुन्दन ते सुन्दर सलोनो जासु गातहै। औरै छबिछाय रही अंगनमें अंगना के अंचल ते उघरि उरोज दरसात है। कहै हनुमान प्रेम पूरशा उघरिपरयो छपत न कैसेहू छपाये सरसात है। ज्यों ज्यों मचकीन को मचाय बाल झूलति है त्यों त्यों खरी भूमें लाल लपि लपि जातहै २५ नाजुक नबेली अलबेली लै सहेली संग आई बर बाग बीच अधिक

निहारि पै । हरी हरी क्यारिन में डोलैं गलबाहीं दिये बोलैं बैन मधुर सुभाय भाव भोरे पै । कहै हनुमान ज्योंहीं भूलिबेको कीनोमन त्योंहीं मान छाड़ि है सुहाई मुख गोरे पै । भूलति हमारे हिये हूलतिहै सौतिनके फूलति कलीसी बाल बैठी जो हिंडोरे पै २६ करत अकाश बारि बाहक बिलास तैसे बुंद परैं बसन कुसुम्भी रंग बोरे पै । छपा छबिछटा तैसी घटा घन घहरात हीरन के भूषणात्यों सोहैं तन गोरे पै । गिरिधरदास लिये गिरिधर लालसंग भुकति भपकि जाति थोरेहू भकोरे पै । हूलति है शूल सुख सौतिउन सूलतिहै फूलति है भूलतिहै हेमके हिंडोरे पै २७ रहसि रहसि हँसिहँसि के हिंडोरे चढ़ी लेति खरी पैंगैं छबिछाजै उकसनमें । उड़त दुकूल उघरत भुज मूल बढ़ी सुखमा अतूल केश फूलनि खसनमें । ओभूलहू देखि देखि भये अनिमेष प्यास रीभत बिसूरि श्रमसीकर लसनमें । ज्यों ज्यों लचि लचि लंक लचकत भावती को त्यों त्यों पिय प्यारो गहै आँगुरी दसनमें २८ प्रेमसद पागे अनुरागे लाल बागे दोऊ लागे भले लोचन को भूलत हिंडोरना । लोनीहै चपल द्युति चीरनै चुराय चित चन्द मुखी चंचल चयन गुन बोरना । ज्यों ज्यों प्राणपति परिरंभण करत त्यों त्यों भावती मुरति यहै बोा चके भकोरना । शिरस सुमनहूते कोमल किशोर उर कठिन कठोर कहूँ गड़ै कुचकोरना २६ रागभरी भीजी सी हिंडोरे भूलैं सूहे पट प्यारी मुख चन्द पै चकोर

झगरतहैं। भँवर सुकबि बोर कंठ माहिं मणि माल बाजूबन्द किंकिणी कनक नगरत हैं। गहे कर डोरी ज्योति ज्योति जीति लालनसों सौरभ मगन भौंरजाल झगरतहैं। कहूँ फूले फूल कहूँ उड़त दुकूल कहूं उर उघरत कहूंबार बगरत हैं ३० बैठी है हिंडोरे बीच तखत सुकंचनके जेब सरदारी की मजे जन भुलावहीं। दुहूँ ओर चँवर डुलावैं सखी चौंरदार सायबान संग सो झुकायेहीं झुलावहीं। खुलेबार हारन जवाहिरहू जगमगात देखैं सोहैं लाल ठाढ़े डीठि न डुलावहीं। नागर सुगन्ध की झकोर उठै पैंग संग झूलै श्यामा साहिब मुसाहिब झुलावहीं ३१ फूलन के खम्भा पाट पटरी सुफूलनकी फूलनके फन्दमें फँदेहैं लाल डोरेमें। कहै पदमाकर बितान तने फूलनके फूलनकी झालर यों झोलति झकोरेमें। फूलरही फूलन सुफूल फुलवारी तहाँ फूलईके फरस फबे हैं कुञ्ज कोरे में। फूल झरी फूलभरी फूलजरी फूलनि में फूलईसी फूलति सुफूलके हिंडोरे में ३२ यमुनाके तीर भीर भई है हिंडोरना पै दूरहीते गहगही गति दरसत है। गान धुनि मन्द मन्द आवतिहै कानन में बीच बीच बंशी धुनि प्रान परसतहै। देखिकारे द्रुमन लतान माँझ दामिनी सी पट फहरात पीत शोभा सरसत है। हाहा चलि नागर पै हिय तरसत आली आजु वा कदम्ब तरे रंग बरसतहै ३३ कूकन मयूरनकी धुरवाके धूकनकी झकन समीरनकी खसन प्रसूनकी। दमकनि दामिनि

की भामिनिकी रमकनि झमकनि नेहकी करोररति हूनकी। नाथकी सों माननकी झोंकैं चढ़ियाननकी हँसि हँसि झुकि झुकि तामन दुहून की। उड़न दुकूलनकी छवि भुज मूलन की काम मन हूलन को झूलन दुहूनकी ३४ बरसै सघन घन सावन सुहाई बूंदें कुंज में पवन चलै लहर झकोरे में। कुहु कै पपीहा मोर दादुर करत शोर गुंजत भवँर बिज्जु नचत सुजोरे में। आनँद कहत सखी चहूँघा चँवर ढारैं हाथन ल-लाई मानो लालरंग बोरे में। लहकि ढरकि जाती अलकै कपोलनपै लचकि लचकि झूलैं मचकि हिं-डोरे में ३५ घांघरे की घुमड़ उमड़ चारु चूनरी की पायन मलूक मखमल बरजोरेकी। भृकुटी बिकट छूटी अलकैं कपोलन पै बड़ी बड़ी आँखिन में छबिलाल डोरेकी। तरिवन तरल जराऊ जरबीले जोर स्वेदकन ललित वलित मुख मोरे की। भूलत न भामिनी की गावन गुमान भरी सावन में श्रीपति मचावनि हिंडोरे की ३६ चूनरी की चहक चमक चारु चोपन की चुरियाँ की चुहुरि चितौनि अख चोरे की। कहै पद-माकर मनोज मदमाती मंजु मेहँदी की महक मजेज मुख मोरेकी। गोला गर्ब गंजन गुलाई गोल गालन की गहमही गालिब गोराई गात गोरेकी। हरित हरा की हीर हारकी हमेलहू की हरनि हियोई हरैं झूलनि हिंडोरेकी ३७ सघनघटान छबिज्योति की छटान बीच पिककी रटान ज्योति जोगन जुईपरै। हारहिये

हरित नदीन नद भरित झरीन झर झरित सो धरनि धुईपरै। ऐसेमें किशोरी गोरी झुलति हिंडोरे झुकि झुकनि झकोरैं फैल फूलन फुईपरै। कीजिये दरश नँदनन्द ब्रजचन्द प्यारे आजुमुख चन्दपर चूनरि चुई परै ३८झूलिबेको रसबस नवल हिंडोरे चढ़ी तासमन कोऊ सुर किन्नर असुर को। कहै घनश्याम अभि-राम दृग चंचल सो अंचल उड़त बरणौ को छवि उर की। ख्याल के मचतही लचत उर बारबार माने बिपरीति रति सीखबेको ढुरकी। उछरि उछरि चोटी पीठपै परत मोटी खोटीके परेते ज्यों चमोटी काम गुरकी ३९ फूली फूल बेलीसी नवेली अलबेली बधू झूलति अकेली कामकेलीसी बढ़ति है। कहै पदमा-कर झमंक की झकोरनसों चारोंओर शोर किंकि-नीनकोमढ़तिहै। उरउचकाय मचकीनकी मचामचसों लंकहि लचाय चाय चौगुनो चढ़तिहै। रति बिपरी-तकी पुनीत परिपाटीमनो हैंसनि हिंडोरेकी सुपाटी में पढ़तिहै ४० सावन सखीरी मन भावन के संगबलि क्योंनचलि झूलति हिंडोरे नवरङ्गपर। कहै पदमाकर सुयोबन तरंगिनते उमँगि उमंगत अनंग अंग अंगतर। चोखी चूनरीकी चारोंतरफ तरंग तैसी तंग अंगियाहै तनी उरज उतंगपर। सौतिनके बदन बिलोके बदरङ्ग आज रङ्गहेरी रङ्गतेरी मेहँदी सुरङ्गपर ४१ दोऊ रुख सूलभूल झूलमखतूलझूला लेतसुखमूलकहि तायभरि बरसात। छूटिछूटि अलकैं कपोलनपै छहरात फहरात

आंचर उरोजनते उघरिजात। रहोरहो नाहीं नाहीं अब
ना झुलाओ लाल बबाकीसों मेरेये युगलजानु थहरा-
त। ज्योंहींज्यों मचत लचकत लचकीलो लंक शंक-
निमयंक मुखी अंकनि लपटि जात ४२ झूलत हिंडोरे
प्रिया प्रीतम यमुन तीर बोलैं पिक कीर छबि छाजत
लतानकी। बांधेपाग पचरंग ओढे चूनरी सुरंग कंचु
की दुरंगबेंदी कोरिद्युति भालकी। ब्रजवधू गावैं झुकि
झुकिकै झुलावैं श्यामा श्यामको रिझावैं होतवरषा
सुगानकी। घोर घनगाजै बगपांतिहू बिराजै ताकेबीच
बीच बाजै बंशी सुन्दर सुजान की ४३ झूलत हिंडोरैं
उठैं छविकी झकोरैं मन माधुरीसें बोरैं पानखान मुस-
कानकी। जोरैंदृगकोरैं हिये सबके मरोरैं मानो शोभा
चौंरढोरैं द्युति पट फहरानकी। योवन के जोरैं झूला
थामत निहोरैंहून चाय दुहूं ओरैंछूवैं फुनग लतानकी।
बेसीहू हिलोरैं फूलछोरैं हार डोरैंलखि आली त्रन
तोरैंसुधि भली गान तानकी ४४ कौनपरी चूकमोसों
एरी मेरी बीरजासों कीनी मन मोहनने ऐसी हायध-
तियां। छाये परदेश पायो कछुना सँदेशयेही जियमें
अंदेश कबों भेजत ना पतियां। कामकी सताई बिन
रायकै बिताओं लाल कैसे कलपायों पीर होत अति
छतियां। तापै काल पावनको विरह बढावनको आई
दुखदाई फेरि सावनकी रतियां ४५ आयोपुनि पावस
अमावस निशाभोदिन छिन बिन प्यारे क्योंहि भांतिन
बितायहैं। फिरचैं करेजहू की कोकिलैं करन लागीं

मोर शोर सुनि किमि चित्त ठहरायहैं। बेदरदी बैरी बदबदरा बड़ेई बुरे नित प्रति तासों प्राण कैसे कै बचाय हैं। परत न एकौ पल कल लाल क्यों हूँ हाय काके गरे लागि काम तपनि मिटायहैं ४६ ॥ सवैया ॥ ऋतु पावस आइगो भागनते सँग लालके कुंजनमें बिहरौ। नहिं पायहौ औसर और युवत्त्व कहा अबलाज लजाइ मरौ। गुरु लोग औ चौचँद हाइन सों बिरथै कहिकारण बीर डरौ। चलि चाखै सुधा अभिलाखै करो यहि पाखै पतिव्रत ताखै धरौ ४७ ॥ कबित्त ॥ घन को घमक औ बनक बकपांतिनकी बीजुरी चमककर बालसी दिखातरी। ललित लतान लखियत है नदान और कहे परमेश त्यों बहत बेग्र बातरी। मोरन को शोर चहुँ ओर होत ठौर ठौर दादुरकी हन्दघोर करैं तनु घातरी। सुख सरसावन लगेरी लोग गावन को बिना मन भावन न सावन सुहातरी ४८ डोलै पौन परसि परसि जल बुंदन सों बोलै मोर चातक चकित उठी डरि मैं। कहांलौं बराऊँ दई मारे मैन बाणनसों थकि रही केतिकौ उपाय करि करि मैं। दत्त कवि प्यारे मनमोहन न पाऊँ कहौ मन समझाऊंरी कहालौं धीर धरिमैं। छाये मेघ मगन सुहाये नभ मण्डल में आये मनभावन न सावन की झरि मैं ४९ मद मई कोयल मगन ह्वै करत कूकैं जल मई मही पग परते न मगमें। बिज्जु नाचै घनमें बिरह हिय बीच नाचै मीचु नाचै ब्रजमें मयूर नाचै नग में। श्रीपति सुकबि

कहै सावन सुहावनमें आवन पथिक लागे आनँद भो अँगमें । देह छायो मदन अछेह तम छिति छायो मेह छायो गगन सनेह छायो जग में ५० भूली किधौं ह्यां की पीर बाढ़ीहै उहां की झरैं नैन झरना की सुधि आय उर वाकी है । चपला चलाकी करैं नटकी कला की तैसी दौर बादराकी औधुकार धुरवाकी है । हैन कछु वाकी औध आसरा निशा की तामें आइ परैं डांकी ये झकोर पुरवाकी है । टेर पपिहा की करैं शेल समताकी डरैं करैं उर झांकीसे पुकार पुरवाकी है ५१ कंठ कित होत गात बिपिन समाज देखे हरी हरी भूमि हेरि हियो लरजतु है । निपट चवाई माई बन्धु जे बसत गावँ दावँपरे जानिकै न कोऊ बरजतुहै । सते पै करन धुनि परत मयूरनकी चातक पुकारि तेह ताप सरजतुहै । अरजो न मानी तू न गरजो चलत बेर सरे घन बैरी अब काहे गरजतु है ५२ पौन हहराय बनबेली घहराय चारु लहराय सौरभ कदम्बन की सानते । झिल्ली झननाय पिकचातक बिचारउठै बिज्जु छहराय छाय कठिन कृपानते । कहै करनेश चमकत जुगुनू नचाय मेरे मन आई ऐसी उक्ति अनुमानते । बिरही दुखारे तिनपर दईमारे मानो मेघ बरसतहैं अँगारे आसमानते ५३ ॥ सवैया ॥ कर कागद लैके वियोगिनि नारि लिखै इसि प्रीतम को पतियां । यहि पावसमें परदेशछये बलिहारी तुम्हारी शिलाछतियां । सखियां पियसङ्ग हिंडोरे चढ़ीं कहैं गीतमें गाभीभरी

बतियां। अतिकारी डरावनी सांपिनि सी मोहिं सालति सावन की रतियां ५४ सखियां कोउ झूलकते झूलनके डरि लागहिं प्रीतम की छतियां। कोउ डोरधरे कर एक रयों एकरो पीकी बचावतिहैं घतियां। कोउ गाइ मलार रिझाइरहीं अरु कोउकरैं रसकी बतियां। कबपीर निवारिहौ मोंहियकी पियजातीहैं सावनकी रतियां५५॥ कवित्त॥ धीरगयो हीको सुनि शोर बरहीको बीर नाम लैके पीको या पपीहा आनि पीको है। मेघ अवली को घोर पौन अवलीको बहै मार अवली को हायमार अवलीकोहै। नाहसे पथीकोकहूँ आइबो नहीको कहै देखि अवनीको रँग लागत न नीकोहै। डारै अधजीको मोहिं कीने अधजीको यह जानत न जीको भेद हरत न जीकोहै ५६ पीउ पीउ करन मिलैं जो मोहिं आज पीउ सोने चोंच चातक मढ़ाऊँ अति आदरन। कठिन कलापिन के कंठ न कटाइडारों देत दुख दादुर चिराय डारों दादरन। मोतीराम झिल्ली गन मन्दिर मुँदाइ डारौं बधिक बुलाइ बांधौं बन की बिरादरन। बिरहा की ज्वालन सों जिरह जराइडारों श्वासन उड़ाऊँ बैरी बेदरद बादरन ५७ लगी सो लगाई लङ्कखेहनि खराबकरौं मारि करौं मोरन अहार मार जारेको। सुकबि निधान कान आंगुरिन मूंदि मूंदि सुनिहौं न घोर शोर झिल्ली झनकारे को। भेकनकी भीर सहसानन मिटाय डारौं मेटिडारौं गरब गरूर घनकारेको। पाऊँ जो पकरि कहूँ जाल सों जकरि

तन फीहा फीहा करौं या पपीहा दई मारेको ५८ कै
धौं वा बिदेश घन घुमड़ि नछावैं चहूँ कैधौं वा बिदेश
कहूँ दामिनी न दरसै। कैधौं वा बिदेश मोर शोर ना
मचावैं ज़ोर कैधौं वा बिदेश बेग बोलिके न हरसै।
कैधौं वा बिदेशमें न झींगुर झनक झुराड कैधौं वा
बिदेशन जुगुनू ज्योति सरसै। कैधौं वा बिदेशराम च-
रित्तरसिककोऊकैधौं वाबिदेश घटाघेरिकैनबरसै५९॥
सवैया॥ निज नैननको बरसा बरसा तरसातन आंशुन
धोवती हैं। कहुँ रामचरित्रन रोवतीहैं दिलको दिलही
बिच गोवती हैं। हमतो नित पावसकी निशमें सखि
सूनी सेज टकटोवती हैं। धनिवै धनि पावसकी रतियां
पतिकी छतियां लगि सोवती हैं ६० धनिवैं जिन प्रेम
सने पियके उरमें रस बीजन बोवती हैं। धनिवै जिन
पावसमें पिसिके मेहदी करकञ्ज मलोवतीहैं। धनिवै
जिन मूरति सांजिसजें हम लाज के बोझ को ढोवती
हैं। धनिवै धनि सावन की रतियां पतिकी छतियां
लगि सोवती हैं ६१ धनिवैं जिन पावसकी ऋतुमें नित
प्रीतिमें प्रीति सँजोवतीहैं। धनिवैं जिन कारी घटा में
अटाबिच बिज्जु छटा छबि छोवती हैं। धनिवैं जिन
रामचरित्र हिये हिलि होमन हर्षित होवती हैं। धनि
वै धनि पावस की रतियां पतिकी छतियां लगि सो-
वती हैं ६२॥ कवित॥ पौन झकझोर घनघोर घनेघटा
छटा अटा बिच बिरह के तापतन तापिनी। कहूँ क-
लना परै कामिनी काकरै दरैदुख दापते दामिनी दा-

पिनी । दादुरौ झींगुरौ मोर सब शोरते रामचरित
बधे बोलि पिक पापिनी । भूत भूयराभयो चुरी चुर-
इल भई राति रकसिनि भई सेज भइ साँपिनी ६३ ॥
सवैया ॥ अब सावन में इतनी गरमी भरमो मतिभोग न
भावतहै । ऋतुमें अनरीति भई सजनी रजनी दिन ज्यौं
उबि आवतहै । कवि रामचरित्र कहै किसि के सुख
सोइये तापन तावतहै । बरसातमें बारि भरे बदरा ब-
रसावत ना तरसावत है ६४ ॥ कबित ॥ लागे भरि ज़ोर
मोर कुहु कन कुंजनमें पपिहा पिया को नाम लैलै कै
पुकारैरी । कहैं नृप रामपरताप कारी कोलियाहू कूक
देती हूके अरु झिल्ली झनकारैरी । दादुर रटनि सुनि
हियरा फटन लाग्यो जुगुनू चमकि सुधि सकल बि-
सारैरी । हाय प्राणप्यारे बिनु घेरि घन आये चहुं
बिरह बिथामें मार मार मारडारैरी ६५ उमड़ि घुमड़ि
घन बरषन लागे चहूं दशाहूं दिशा में लागी दमकन
दामिनी । पौनको झकोर अङ्ग अङ्गको मरोरदेत सा-
वनकी कारी अति भारी लगैं यामिनी । रामपरताप
ऐसी समै जाको प्यारो ढिग वाको अति आनँद वो
धन्य धन्य भामिनी । मेरे प्राणप्यारे तो बिदेश में
बसतहायपरी सूनीसेज तलफति ह्यांमें कामिनी ६६ ॥
सवैया ॥ प्यारे औ प्यारी अटा पर बैठिकै देखत दोऊ
घटाकी छटारी । बारहिं बार गराजत बादर दामिनियां
करती ज्यों पटारी । बोलैं प्रिया हँसि पीतम सों यह
कारी घटा उनईहै अटारी । रामप्रताप संयोगी सुखी

पै बियोगिनिको भई बूंद कटारी ६७ घेरी घटाघह-राय रही दरकावतुहै बिन प्रीतम छाती। कामिनियां हियरा तरसावत दामिनियांचहुंते दरम्राती। रामप्र-ताप झकोरत पौन भई दुखदाइनि सावन राती। तापै बियोग बढ़ावतहै वह पीकहाँ बोलि पपीहरा घाती ६८ की वहिदेश बसै जहँ प्रीतम घेरि घटान कबौं घहरैहैं। की वहि देशन दामिनि दीपति बूंदन मेह नहीं छहरैं हैं। की वहि देशन रामप्रतापजू पौन झकोर चहूं ल-हरैं हैं। की वहि देशमें पापी पपीहा पिया न कहै जो पिया बहरैहैं ६९ ॥ कबित्त ॥ पीउ पीउ रटत पपीहा ऋतु पावसमें दादुर पुकार सो न बांचीकुल चादरन। कोकिल की बोलन मयूर मेरु नृत्यनसों झीली झन-कार सुनि भये जिव कादरन। होतो यह काल आली आल जो दिवाकर जू हाव भाव करतो कलोल अति सादरन। जाइ वह देशको बसतहै हमार साईं रोज २ बिरह बढ़ावैं बैरी बादरन ७० आयो ऋतु पावस सुरेर मेरु बोले मोर धुरवा धुंधार बुन्द बारिके झरै लगी। भनत दिवाकर सुरेश चाप उगे व्योम दादुर दराजसी अवाज करैं लगी। झाइ झाइ बात घहरात घनघोर शोर चातक किशोर चहुं ओर बगरै लगी। झिल्ली झनकार बकपांती हहकार सुनि नेकुना सोहात आली अङ्ग थहरै लगी ७१ पवन वजीर बीर दादुर सिपाही सब पावस मोसाहब पयोद राखे तम्ब तानि। भनत दिवाकर हिरद शोर घोर घन चपला निशान साज

धनु इन्द्र किरपानि। बरछी सवार बकपांति हहकार पिक चारणा पुकार बोले बीररस जूह बानि। बूझि के बिहाल बाल आयो रतिनाथ सैन कादर कियेहैं ब्रजनाथ बिन सूने जानि ७२ झमकि झमकि झूलि रागकी सिखवति रीति छहरि छहरि बुन्द गिरत अ-कासते। भनत दिवाकर करत मोर शोर बन बिहरे बहूटी बीर मेदिनी हुलासते। चातक चवाई चाई सु-रति बढ़ावै चाव चूनरि सुरङ्ग रङ्ग बासी है सुबासते। सावन सिरायो मनभावन न आयो आली कादर क-रत कारे बादर प्रबासते ७३ पालेंगे शचान पिक कोकिल हिवानहेतु बेनीको लुराइ गाड़दादुर लुकावें-गे। भनत दिवाकर सुरज शीश फूल ज्योति आहर सुखाय जिवभूमि प्रफुलावेंगे। बिरह दवारि ज्वाल पेड़ पातजारि डारें बार बगराइके अधार लजवावें-गे। रूंधन उसाल लुक पावन प्रकाश करि प्राविट प्रबल तो को ग्रीषम बनावेंगे ७४ कैधौं वह देशशेश दादुर चबाइ डारो कैधौं शैल शिखर शिखीन बैठि बोलैना। भनत दिवाकर की इन्द्रके न देश वह धारा में न धार जल गान वह टोलैना। झिल्लीगण मूकभई शबद सुनावै नाहिं बिपिन बिहङ्ग सङ्ग करत कलोलै ना। ऐसे समय दुन्द मोहिं बुन्दन उठाय हाय पावस निरानो श्याम आवत अबोलैना ७५ सरिता कलोल करे बनिता हिंडोल धरे चपला चमक चहुं ओर नभ दोड़ौना। लता लपटत तरु संगन चलत मरु मुरवा

रहत हरु नेकु सङ्ग तोड़ौना । भनत दिवाकर समुद्र ग्राह मड़ो कच्छ अच्छत प्रतच्छ प्रीति राखत है घोड़ौना । सावन भयावन अँधेरीरैनि भादौं कान्ह रहैगी अकेली भौन राधे सङ्ग छोड़ौना ७६ भादौं की अँधेरी धुरवाकी लटकेरी पाकशासन करेरी क्षणाक्षरा छोड़े बानरी । बोलत भयान भोगी बासना तजत योगीपति से बिहीन ना सोहात खान पान री । भनत दिवाकर करार दरियाव छोड़ी नावके नवाह बादशाह छोड़े शानरी । पावस प्रबल मेरे पिय को छोड़ाय दीन्हें दोशन बिदेशी करें कैसेके पयानरी ७७ बूढ़के बढ़त काम पावस सुखदधाम मेघअभिराम श्यामवक व्योम उसके । भनत दिवाकर बिहंगचोचा खोतालाइ करत बहार सुलहार लेत खुसके । देखि हरिआई भूमिगाइन हुलास होत रागको प्रकासवोविकास काम कुस के । कुच महरात घहरात घन क्षनक्षन धनधन आली यह कौन चाली रूसके ७८ ॥ सवैया ॥ जाइके द्वारका बैठिरहे जु लहे अबला ब्रजकी दुखभारी । आवत मेघ नयेउनये जुगुनूदरसे सरसे निशाकारी । कोकिलकूक करे हियहूक उलूक सो बोलत पीक पुकारी । आंशु झरें अँखियासेंतिया छतिया करके बके हाय बिहारी ७९ ॥ कबित्त ॥ श्याम सम बादर तड़ित पीत चादर से आदर से बातलगे मीठी घनघोरसे । छाती बनमाल से लसेहैं धनु देवराज मोतिन की पांति बक्र बंशी टेर मोर से । भनत दिवाकर सु आनन निशाकरसे हीरन

से जुगुनू धमारन के शोरसे। एरे पापी पावसअमावस की राति अस कस अनुहारि पियतोरे मन चोरसे ८०
सवैया ॥ घहरारी घने घनघोर घटा करिशोर उठै बहुमोर अटा। घनश्याममैंमिले तियताहीसमै चलीदामिनीसी फहरै दुपटा। वाकेनैन घनेघने घालें कटाक्ष भनैं भुवनेश सुकौन छटा। जनुबिश्व फते करिबेकेहिते फरकावै मनोभव भूप पटा ८१ ॥ कबित ॥ घहरिघहरि घनघोर चहुंओर छाये छहरि छहरि छबि शोभा सरसारैंरी। पवन झकोर जोर दादुर मयूर शोर चोप भरे चारोंओर झिल्ली झनकारैंरी। येरीमेरी बीरवनैं धारत न धीर अबप्रातकी पपीहा पीव पीवके पुकारैंरी। यन्त्र कोनधारै अरुमन्त्रको उचारै जाते तजिके प्रवास मनमोहन पधारैंरी ८२ ॥ सवैया ॥ बन बागन के प्रतिकुञ्जनमें घनी लोनीलवंग लता लहरैं। बसिकेनभ मराडलमें भुवनेश भले क्षण जोन्हहियो थहरैं। बरसैं घन आंशुन व्याजन नीर तऊपै अधीर भये घहरैं। पपिहाऊ पिया रटलायो करैं मन मानुषको नहिं क्यों हहरैं ८३ चमकोसी फिरैं चपला चहुंघाद्युति दन्तन को जबहीं सरसैं। सुनिके भुवनेश जुबैनसुधासम कोकिलबोलनिको तरसैं। यहमेरेही अंगनके परसादते पावस की सुखमा दरसैं। लखिके अलकैं घन आंशुन व्याज बड़ेबड़े बूंदन सों बरसैं ८४॥ कबित ॥ गरजें चहूंघा घनघोर मोर शोरकरैं लरजैं लतान वृन्द शोभासरसाईहै। दामिनी दमाकैं जुरि जूगुनू चमाकैं कहूं कै-

लिया दमाकैं भरीकूकैं सुखदाईहै। मन अनुरागैप्रीति रीति उरजागैं लखि इन्दु भटूरागैं बनबागे छहराईहै। अरज़ बिहारीपै हमारीभुवनेशयेती मिलनके योगवेश पावस ऋतुआई है ८५ पवन झकोरैं झकझोरैं झोरैं बुन्द बोरैघने घनघोरैं बारै दौरै चहुंओरैरी। बिज्जु छटाकोरैं बिनयोरैं जी रसालकोरैं आवत असाढ़भारी ठौरैं ठौरैं खोरैरी। जोरैप्रेम भोरैं चित धीरज बिथोरैं नाहिं मानत निहोरैं कान दादुरये फोरैरी। तोरैलाज छोरैं कुलकानि बरजोरैंबीर मोरनकी शोरैं मोरैमनहिं मरोरैरी ८६ ॥ सवैया ॥ घूमिघने घुमरैं घनघोरचहूं चढ़ि नाचतमोर अटारी। त्यों द्विजदेव नई उनई दरप्राति कदम्बनिकी छविन्यारी। चूनरिसी क्षितिमानो बिछोईमि सोहति इन्द्र बधूकी पत्यारी। काहि न भावति ऐसी समय ठकुराइनि या हरियारी तिहारी ८७ कबित्त ॥ चूनरी सुरंगसजि सोही अंग अंगनि उमंगनि अनंग अंगनालौ उमहतिहै। सौंध बैठि झांकतीझरोखनिते कारीघटा चौहरे अटापै बिज्जुछटासी जगति है। द्विजदेव सुनि सुनि शबद पपीहराके पुनि पुनि आनँद पियूषमें पगतिहै। चावन चुभीसी मन भावन के अंकतिन्हैं सावनकी बूंदें ये सुहावनी लगतिहै ८८ सावनके दिवस सुहावने सलोनेश्याम जीतिरति समर बिराजे श्यामा श्यामसंग। द्विजदेवकोसों तनु उबटि चहूंघा रहो चुंबनको चहल चुचात चूनरीको रंग। पीतपट ताने हरयाने लखैं लपटाने उमहि उमहि घन

श्याम दामिनीको ढंग। रतिरन भोजे पैन मैनमदछोजे अरु रसबस होतऊन तनक पसीजे अंग८९ कारो नभ कारी निशि कारिये डरारी घटा भूकन बहत पौन आनँद को कन्दरी। द्विजदेव सांवरी सलोनी सजी श्यामजूपै कीने अभिसार लखि पावस अनन्दरी। नागरी गुणागरी सुकैसे डरैरैनि डरजाके संग सोहैं ये सहायक अमन्दरी। बाहन मनोरथ उमाहैं संगवारी सखी मैनमद सुभट मशाल मुखचन्दरी ९० घहरिघहरि घन सघन चहूंधा घेरि छहरि छहरि बिष बुन्द बरसावैना। द्विजदेवकीसों अब चूक मतिदाबि अरे पातकी पपीहातू पियाकी धुनि गावैना। फेरि ऐसा औसर न ऐहै तेरेहाथ येरे मटकि मटकि मोर शोर तू मचावैना। हैंतोबिन प्राणदेह चाहत जोई अब कतहि मेरिसि तू अकाश बीचधावैना ९१ घुमिकैं चहूंधा धायआवैं जलधरधार तड़ित पताके बांके नभमें पसरि गे। द्विजदेव कालिन्दी समीपनकेनीपनके पातपातयोगिनीजमातनते भरिगे। चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निजनिज दांव ठांव ठांवन सँभरिगे। बिन यदुराय अबकोजै कहा मायहाय पावस महीप के चहूंघा घेरे परिगे ९२ उमड़ि घुमड़ि घनछांडत अखण्डधार अतिहीप्रचण्डपौनभूकन बहतुहै। द्विजदेवसंघासी कोलाहल चहूंघा नभ शैलते जलाहलको योग उमहतु है। बुधिबल याको सोई प्रबल निशाको। मेघदेखि ब्रजसूनो बैर आपनो गहतुहै। येहो गिरिधारी राखो शरण ति-

हारी अब फेरि यहिबारी ब्रज बड़न चहतुहै९३ जबते
हमारे प्राण प्यारेहैं पधारे उत धीरनहिं धारेजात पीर
हियमें जगैं। शीतल समीरभयो तीर कालिन्दीकेनीर
बीर बल बीर बिनु नीर दृगते ढगैं। केशरी समानजब
बिरह परैहै भान योगज्ञानये गयन्द यूथ तबहीं भगैं।
बोली कोकिलानकी करैहैं शूल हूलहमैं ऊधोयेकद-
म्बनके फूल गोलीसे लगैं ९४ दूबरी भईहै देह कूबरी
सनेह सुने ऊबरी नशोकसिन्धुपाय ज्ञान वोहितैं। रहीं
अकुलाय हाय करैं शिर को नवाय कहैं यदुराय रहे
केतेदिनको बितै। गाढ़ये असाढ़देखि बढ़ति बियोग
व्यथा दामिनी दमक मोर शोरहैं जितै तितै। आये
घनश्याम काहू बामने सुनाई टेरि चौंकि चौंकि उठी
चन्दमुखी चहुंधा चितै ९५ सावन सोहावन ह्यां लागत
भयावन सों आवन अवधि अब शोचैं गजगामिनी।
ऐहैं कबहूं धौं बलबीरह्यां कि नाहिं ऊधो कैसे धीर
धरैं ये अधीर ब्रज कामिनी। जहां तहां योगन की
ज्योति जगैं ज्वाल जैसी यमकी जमाति सी जनाति
जाति यामिनी। जारैहैं पपीहरा पुकारैं पीउपीउटेरि
घेरिमारैं बादर दरेरिमारैं दामिनी ९६ लीने लेतज्ञान
कोऊ छीने लेत आनि बानि लूटेलेत कोऊ हठिलाज
के समाजको। द्विजदेवकीसों या अँध्यारी अन्धाधुंधि
मेंकिलेत कोऊ कान्हसुख सम्पतिके साजको। येरी
मेरी तोहिं जऊ मानि मानदोष तऊ समय विचारि
कीजै ऐसे ऐसे काजको। तोहिं इतमानके अनादरन

घेरो उत बादरन घेरोजाय जाय ब्रजराजको ६७ बरसत मेहनेह सरसत अंगअंग झरसतदेह जैसे जरतजवासोहै। कहै पदमाकर कलिन्दी कुन्द बनपर मधुपन कीन्हो आय महत मवासो है। ऊधो यह ऊधम जिताय दीजो मोहनको ब्रजसों सुबासो भयो अगिन अवासोहै। पातकी पपीहा जलपानको नप्यासो कहा ब्यथित बियोगिनिके प्राणनको प्यासोहै ६८ सोहत सुभग बैल बाहन बिमल बायु बिशद बकालीशेशहार लपटायोहै। सादर सों लाय बर बादर बिभूति अंग दादुर उमंग धुनि डमरू बजायोहै। कारीघटा गजखाल धारा जटाहै बिशाल दामिनी छटा त्रिशूल सुन्दर सुहायोहै। काटिहै कलेशमोद देहैरी भटू बिशेश धरिकै महेशवेश सावन लखायो है ६९ कोकिनके नाचगान कुहूंकूक कोकिलकी रटनि पपीहराकी नामधुनि ठानीहै। बूंदनके पात अलि लोचन श्रवत जात जात तृणजात पुलकावलि निशानीहै। मालहैं बिशालबक पांतिनकी दीनद्याल बारिबाह नये वृन्दवन्दनाबखानीहै। झलाझलझल चपलाकी द्युतिध्यानभई पावस न होय भक्तिकला प्रकटानीहै ३०० घनकी घनक घन घटा घनकत आली दामिनि दमकदेत दीपक प्रकास है। बूंदन के फूल जाल धनुलै बिशाल माल आये झुकि मेघसो प्रणामको हुलासहै। मोरनके शोरचहुंओर बिनय दीनद्याल पवन झकोर चोर ऊरैं आस पासहै। पूजन करत प्रीतिरीति प्रकटाय यह पावस

न होय परमेश्वर को दासहे १ श्याम छवि धरे फिरैं धुरवा धरणि छ्वैरी इन्द्र धनु पीतपट चटक दिखायो हे। दामिनि दमक द्युतिदेत देत वोर सोई कुण्डल अमोल लोल गति चमकायोहै। विशद बलाकनकी पांति बनमाल अलि मन्द मन्द मेघ बांसुरीलो स्वर गायोहै। आवनअवधि रही प्यारे मनभावनकी सावन सुहावन सों साजसजि आयोहै २ पावसमें जागि अनुरागिरी सरोज नैनरैन दिनदेत उपदेशको मनोजमुनि। नन्दके किशोर बिन कैसेरहे जीव छिन पीउ पीउहाति पपिहाकी चहूंओर धुनि। अंग थहरानलगे लता लहरान लखि सखिनहिं धीर पीतपट फहरानगुनि। घटाघहरान छिनछटा छहरानलगी हियो हहरानलगो झरि झहरान सुनि ३ आलीप्राण गाहक बकाली ये बलाहक में दाहकसी जगैंपोर इन्द्रगोप गनते। धीरधरैं वीर किमि पेखि सुनासीर चाप उठत समीरलैंकलाप तपतनते। ठौरठौर मोरनकी कोर चहुं ओरचितै हिये वरजोर ह्वै मरोर छिन छनते। दामिनी दमक देखि उठो बरि कुञ्जबास लखि घनश्यामझरि लगीरोइगनते ४ पावसन प्यारो चढ़ो सैनसाजि मैनभारी कोकिलानकी बनौलधाल धुजा बकमाल। बंदीजन मोर गन बंदजोर बानघन दादुर निशान देत दोहदोहनदीताल। प्यारे के निरादर ते कादर करनिहारे कारे कारे धूम धारे बादर हिरद जाल। दामिनि दमक पर बालकी चमक शाल करति विहालहमें बाल बिना नन्दलाल ५

झूमत झुकत झूमि झूमिघूमि घूमि चले भूमिसों झि-
रत मनो बलके उमङ्गये। बारबार गरज सुनावैं बरजे
न जाहिँ नहीं हैं उदारधार मदके तरङ्गये। दन्त बक-
पांतिते डरावैं बिन कन्तभारे अंकुश समीरहू न मानैं
कारे रङ्गये। करिये सहाय आय या छिनमें श्यामघन
होहिँ न सघन घन मदन मतङ्गये ६ सांझहू सकारे
झनकारे होत नदी नारे पावस के मांझ झांझ झि-
ल्लिन तजत ये। दामिनि मशाल को दिखावैं ताल
दादुर दै मोर चहुंओर नाच नाटको सजतये। धुरवा
मृदङ्गनकी धीरधुधुकार ठान रातेनैन मातकलगानको
भजतये। शोकको जनम ब्रजओकमें भयोहै ऊधो सां-
वरे बिरहते बधावरे बजतये ७ सावन सुहावन बि-
शेषि नभ धनु लेखि यादहोति झटपट पीत अभिराम
की। तकिमृगपांती बिलपाती अकुलाती मतिआवति
सुरति वह मौलसिरी दाम की। मोर चहुंओर देखि
मुकुट सुरतिहोति चपलाचमक देखि कुण्डल ललाम
की। ऊधो ब्रजबाम कैसेधीरधरैं सूनेधाम लखि घन-
श्याम सुधिआवैं घनश्यामकी ८ सांचीकहै रावरेसों
झांवरे लगतमाल आवैं जेहिकाल सुधि सांवरे सुजान
की। फूलभार भरी डार जैसे थमजार ऊधो कालिंदी
कछार सजै धार ज्यों कृपानकी। चपला चमक लगैं
लूकहूं अचूकहिये कोकिल कुहूक बरजोर कारबान
की। कूक मोरवानकी करेजा टूकटूक करैं लागतिहै
हूक सुनि धुनिधुरवानकी ९ पावसमें नीरदै न छांड़ैंछिन

दामिनिहूं कामिनी रसिक मनमोहन को क्यों तजैं । अचला पुरानो पुलकावलीको आनो उर धायरजवती सरि सिन्धु सङ्गको तजैं । नीरको नपुंसक कहतकवि धीर सबै होयके अधीर तेऊ नारी नारी को भजैं । कुसुमित लतालखो लपटी तमालनसों लालनसों कहो ऊधो क्यों न अजहूं लजैं १० कल न परै हिये कन्हैया की सुधैयालखे चलनसमैया में ललनकह्यो आवनो । औधि आसश्वास रही प्यास अधरामृतको आयो यह सावनो न आयो मनभावनो । पीरे वा दुकूल की सुरति आये भूलउठै कूल कालिन्दीकी हूलखागत डरावनो । पावस रसमदेखि दहत असम बाण ऊधो क्यों खसम कह्यो भसम चढ़ावनो ११ गये कहि आवन न आये यहि सावन में ऊधो मनभावन भुलाय रहेहैं तहीं । ह्वैरहीं बिहाल बाल ब्रजको गोपाल बिनारैनि दिनानैनते अपारधार ह्वैबही । बैठि जनपुंज ठाम यमुना निकुंजधाम छांड़ि श्यामपाहि ह्यां सुहात नाहिं है कहीं । गरजैहैं घनघोर लरजै हैं बनमोर नन्द के किशोर सुनी अरजैं अजौं नहीं १२ ऐहैं कबहूं धौं हरि कहो तुम सूधो ऊधो ब्रजकी बधूटी जूटी बूभति हैं बेरिबेरि । देहको परस मृदु सरससनेह वह होयगो दरस घनश्याम को कि नाहिंफेरि । आयो यहसावन न आये मनभावनकों लगोहै डरावन मनोज जनुफौज घेरि । दूमैं द्रुमडार छोर भूमैं पिक बरजोर घूमैं घन घोर मोर जूमैं चहुंओर टेरि १३ जादिनते प्राण रख-

वारेने पधारे ऊधो तबते हमारे उर भारे खेद दैंसबै। कोकिल कुहूक हूक लगै बिज्जुकला लूक टूक टूक करैं हियो मेघ गरजैं जबै॥ घेरे दुख मैनमति धीरज सकैं न धरिआवत न चैन दिन रैंनि मन में अबै। पैहैं सुख नैन ममलखे सुखमाके ऐन आये सुख दैन यह बैन सुनिहैां कबै १४ होयरही हरी हरी ब्रजकी सकल भूमि फूलनके भारभूमि रहीं द्रुमडारी हैं। लहरैं कलिन्दनन्दनीकी नीकी लसे नभ उमड़ि घुमड़ि रहीं घटा घुरवारी हैं। प्यारी मनमोहन जू झूलत हिंडोरे जहां सुरभि समीर धीर चले सुखकारी हैं॥ प्रेम बश भीजत फिरत फेरि बरषामें बनमें बिहारकरैं राधिका बिहारीहैं १५ योबन प्रवेश में बिदेश मदसूदनजी निपट अँध्यारी कारी सावनकी यामिनी। यकटक रटत पपीहा पिक नीलकंठ हियो चमकत दमकत ज्यों दामिनी। सूनी सेज मन्दिरमें सुंदरी बिसूरे बैठि प्रीतम सुजान बिन कैसे जिये भामिनी। नैनभरि ढरे मुखहरे हरेकरैं हाय उकरि उकरि परै कामभरी कामिनी१६॥ सवैया॥ घनघोर घटा चहुं ओर चली चिनगी जुगनू चमकावनो है। मुरवानके कूक अचूकहिये सहिहूक महा पछितावनोहै॥ मन माहिं सदा सुददम्पतिके बिरही जन ताप तपावनोहै। अलि सावनमें मनभावनते रहि दूरि महा पछितावनो है १७ चाह चढ़ी चितमें हितकी उत कौनहुके रसमें अनुरागे। लेत नहीं सुधि देत महादुख ये धुरवा मिलि आय अभागे॥ कौलैं

रहौं धरि धीर कृपानिधि बोल उराहनके कहलागो। बेलीलखी गरहृक्षन के पिय दक्षन ह्वै परदेश में पागो १८॥ कबित्त ॥ आयो ऋतुपावस प्रताप घनघोरभारीसघन हरीरी बनसराडन बढ़ायेरी । कोकिल कपोत शुक चातक चकोर मोर ठौर ठौर कुंजनमें पक्षी सब छाये री।यमुना के कूल औ कदम्बनकी डारनपै चारोंओर घोर शोर मोरन मचायेरी । येरीमेरी बीर अबकैसेकै मैं धीरधरौं। आये घनश्याम घनश्याम नहिंआयेरी१९ श्वेत श्वेत बकके निशान फहरान लागे ईंचि ईंचि चपला कृपान चमकायेरी । घहर भुशुण्डीकीअवाज सी करनलागे बुन्दनके झरनन झीने झरिलायेरी । भनत प्रताप रतिनायक नरेशजूने धीरगढ़ तोरिबे को पावस पठायेरी । येरी मेरीबीर अब कैसेकै मैं धीर धरौंआये घनश्याम घनश्याम नहिं आयेरी२०॥सवैया॥ आसन्न में चपला चष चूंधित चौंकि अचौंकि भुजान भरैंगे। साहसकै रसकै मुसकै सिसकै बशहोतन ताप हरैंगे। पीपरदेश करैं हियपीर अधीर भये हम हाय जरैंगे। पावसमें पियप्यारी प्रमोदित कोऊ बिलासी बिलासकरैंगे २१ सोइगई पछिरातमें आजु तहीं मनमोहन आइ गयोरी। तौलौं घनेरी घटा लखिकै इन मोरन शोर मचाइदयोरी । ऐसो बियोग दयो बिधना सखि सापनेहू न सँयोग भयोरी। कासों कहा कहिये नँदराम भयोउर सौगुनो शोच नयोरी२२॥ कबित्त॥ श्याम घनघटाछाय आय आय अटापर दामिनिछटा दिखाय

कटासी करावैं लाग। शोरकै चकोर मोर मोर मन मोरैलगे दादुर गोहार करि मार गोहरावैं लाग। कोयल कुहूक कूक टूक टूक कीन्ह्यो हिय जुगुनू दियासी बारि अंग अंगतावैं लाग। बन्दिबन भावन पपीहा यहि सावनमें पियापिया टेरिटेरि जिया को जरावैं लाग २३ ॥

शरद ऋतुके कबित्त व सवैया ॥

कबित्त ॥ अम्बर अमल होत चन्दकी बढ़त ज्योत खंजनकी गोतमाने। परी आइनाकते। भनतदिवाकर तरंग गंग स्वच्छभयो उग्योहै अगस्त जल सुखे जनु साकते। जहँतहँ पथिक चलन लागे चारोंओर शरद नरेश कियो तिय पिय छाकते। दिनतो बितत संग सखिन हितसत रातिनाकटत बिनुश्यामचन्दराकते १ दीपदान देवन दिवारीको चढ़ाते सब जुआ खेलि दम्पति हियेमें हरखाती है। वेश्या गण रसिक रिझावैं कौ शृंगार देहसुख मुसुकाति हरेराग बरषाती है। भनत दिवाकर अटापै घाट बाट गेह रोशनी तमाम चहुंकोन दरशातीहै। प्यारो ब्रजराज बिनपापीद्विजराज सखी रातिये दिवारीकी अराति समआतीहै २ मन्द मुसुकानि चन्द ज्योतिमें उदोति होति कुंदमेंदिखावैं द्युति दशन रसालकी। खंजन लखावैं कान्ह नैन मन रंजनसे पानिलौं सुहावैं कलाकंजन बिशालकी। भौंरनकी गुंज पुंज मंजुल मंजीरनसी हंसनि चलावैं गतिश्यामकै सुचालकी। आयोरी शरद काल दरद

बढ़ावनको जरद करैहै हमैं शोभाधरि लालकी ३ तारागण भयरा सघन अंग अंगन में बसन मयूखनसों रही लोनी लसिकै। दन्तकुमुदावली चमक चारुचोरै चित्त जोरै मुख चन्दको सुमन्द मन्द हँसिकै। मालती सुगन्ध सनी शालती हियेमें शाल रहे नंदलाल कहूं याके ख्याल फँसिकै। शरद विभावरी न होय सुनि बावरी तू दावरी लियेहै यह सौति श्याम बसिकै ४ चित्तन की छावनी बिराजैं दिनघ्यादे पुनि नावक निशाहू भोर थानेदार पालाहै। ओसहै सुबेहूदार जल है इन्सपेक्टर कपतान शीत बातको कसालाहै। जनरल आदि सब बादर औ बूंदी ठाने शीतताके अस्त्र घोर अश्वहू सुचाला है। धनकेरे पंचदश मकरपचीस अंश तेईचोफ शालग्राम शीत को रसाला है ५ गुण के निधान दोऊ रूपके निधान दोऊ परम सुजान दोऊ मिलि बतरावहीं। प्रीतिरीति देखे दोऊ रहैं अनमेखे दोऊ मुदित अलेखे दोऊ रस बरसावहीं। राधा मनमोहन अनंग की तरंगनि सों शिशिर की रजनीमें सुख सरसावहीं। आंगनि परसैं पुलकितगात धरैं प्रेममें बिवशपर दोऊ लपटावहीं ६ ॥ सवैया ॥ बारुनी ओरको बायुबहै यह शीतकी ईतिहै बीसबिशा में। राति बड़ी युगसी न सिरातिरह्यो हिमपूरिदिशा विदिशामें। गोकुल डारिहैं मैन मरोरि कहौव कहा कहे मान किशासैं। कौनकी छांह छिपौगी तिया छतिया तजि नाहकी माहनिशा में ७ ॥ कबित ॥ दुसह

दुशाला होत जर्नबिन बालाहोत शोचश्रति आलाहोत
मैन मन जागेते। द्विज बलदेव तूल मूलकौं नसेव सब
पावकको भेव जानि लीन्हो जग आगेते। प्रचुर पदा-
रथ प्रसिद्ध पुहमीपै प्रिय परम प्रसन्न मनतासों प्रेम
पागेते। बीतिजात बैसन मनोजमन जीति जात शीत
जात उन्नत उरोज उर लागेते ८ शीतल समीर आय
उरन दुशाल होत जगत बिहाल होत बचतन भागेते।
हाथपायँ कम्पेजायँ बसन न धरेरहैं रैनि कम्पजाय ना
रजाई तनत्यागेते। राय कबि दम्पति बिनोद चहूंकोद
करैं शिशिरमें होत घर बाहर अभागेते। अगिनिके
आगेते न जागेते न बागेते सुशीत जात उन्नत उरोज उर
लागेते ९ आडेना रहत रोम ठाढ़ेही सदारहत पच्छू
को पवन फेरि पालासों कटतहै। कम्पत करेज सेज
सोइये सुखत अरु गब्बर गरीबनकी गरुता घटत है।
ठाकुर कहत फेरि पानीते परस होत होततन पीरनेम
नाहीं निपटत है। ओढ़िये दुशाला तरे तोसक बिशा-
ला बिना लागे अंगबाला शीतकालाना कटत है १०
रतन जटितत्यों घटित घरचारोंओर दरन दिवारन
किवारन मुदायेहैं। परदा पसमके असमके पड़ेहैं गोल
गेंदवा गलीचन गिलम गुदवायेहैं। मंजुकबि आतश
अगीठो धूप धूम धूम धूम झूम झूम शुचि सौरभ छु-
हायेहैं। केलिकल क्रीड़ा ब्रीड़ा हसनबसनद्युतिदम्पति
दिपति दिब्य शीत सिसिराये हैं ११ कञ्चन के पलँग
बिछाये शीश महलमें चहल छुपेदी सनी सौरभ रचा-

लामें । ओढ़ेऊन अम्बर सकलनख शिख तऊ नेकहूं न मानै मन रहत कशालामें कबिबंशरूप साजे दीपशाला माला स्वच्छ अधिक उतंग त्यों अनंग चित शालामें । मर्दति सशालाहैं बिशालाजे दुशाला आला पालासम लागैं बाला बिन शीतकालामें १२ नारी बिन होतनर नारीबिन होतनर राति सियराति उरलायेपयोधरमें । बेगी कबि शीतल समीर को सनाका सुनिसोवैं सब सांझते कपाट दै शहरमें । पक्षीपक्ष जोरेरहैं फूल फल थोरेरहैं पालाके प्रकाश आसपास धरा धरमें । बसन लपेटे रहैं तऊ जानु फेटेरहैं शीत के समेटेलोग लेटेरहैं घरमें १३ चित्रछबिधामैं रूपराशि बसुधा में अनुराग बलतामें सो सुधीमें हेरिखायोहै । देतमनकामैं बलदेव कहीं कामैं बालकामैंकी करासकरि कामैंकोलजायो है । सेवत सुबामें तेतमामैंहैं समामैं जानि हरख हमामैं शोरमामैंना जनायोहै । शिशिर अरामें रस रसरसरामें कसिजामें गजजामें हितजामें चितलायो है १४ असन में आसनमैं असल अवासनमैं सांसनमैं कछुक हुतासन मैं आइगो । फूलन में तूलनमैं मंजु मखतूलन मैं दोहरे दुकूलनमें कूलन अघाइगो । सेजनमें तीखे सुरतेजन उताजन मैं मदन मजेजन करेजन कँपाइगो । नीरन मैं त्योंहीं जगमोहतसमीरनमैंजहांजहांदेखौतहां शिशिर समाइगो १५ सोनन के चौके चुने चमकैं नगीनन के झीने पल्लमाने केसी गहब गहीलेहैं । तूलनके तागेबागे मंजु मखतूलन के रेशम दुकूलन के परदे रँगीले हैं ।

सोचे नये खासे जगमोहन गलीचेयोंसो सेजके नगीच
ही चिराग चटकीलेहैं। लपटे सुआसन में छपटे दुशा-
लनमें सोये शीत कालनमें छपके छबीले हैं १६ परे
कोऊ पछाह पिछौना करतेई रह्यो प्यारी कहूं धुहुमी
पै पालापरि जावैना। सीरन कपारसी परेखो इन नैनन
सों सारी दुनियांकी सियराई सरसावैना। देखो जग
मोहनजू बावरी बियोगिनिको काहू अब कलितकरै-
जो कपि आवैना। हाय नवबाला बिन निपटि निरा-
ला परदेशमें पराला शीतकाला कहूं आवैना १७ बेर
बेर ढांके बडेडर डरभांके तऊ और कड़कड़दांतेबाज
जुरि जुरिजात। नेकहोत न्यारेतोपैं थरथर कांपप्यारे
ओढ़ि छोड़ि शालभालहू ते लुरि लुरिजात। शोभन
भनत भारा भागाआग आगेजात लखि छारभार पुनि
पुनि मुरि मुरिजात। शिशिरके शीतमें अनीत शीत
मात भीत सेजकौ पुनीत दोऊ म दुरि दुरिजात १८॥
सवैया॥ पूसको मास सुबीति गयो हिय शोभभरीबिर-
हागिन पैठो। दोशकहो कोहिको कहिये अब तोसन
होतहै जाउँमें कैठो। यादि ह्वो बोल मसोसत है जिय
शोभा परीरहै तास अँगैठो। नेकतजे अफसोस कियो
शिहि हाय सुतीनसे कोयापै बैठो १९॥ कबित्त॥ पावस
निकास तातें पायो अवकास भयो जोन्हको प्रकास
शोभा शिशिरमनीय को। बिमल अकाश भयेवारिज
बिकाश सेनापति फूले काश हित हंसनके हीयको।
छितशरद मानो रँगेहैं हरद शालि सोहत जरद को

मिलावै हरिपीयको । मत्तहैं द्विरद मिस्यो खंजनदरद ऋतु आईहै शरद सुखदाई सब जीयको २० कातिक की राति थोरी थोरी सियराति सेनापतिको सोहाति सुखी जीवनके गनहैं । फूलेहैं कुमुद फूली मालतीसघन बन फूलिरहे तारे मानो मोती अनगनहैं ।उदित बिमल चन्द चांदनी छिटिकिरही रामकोसो यश अध उरध गगनहै । तिमिर हरन भयोसेत है बरनसब मानहुंजगत क्षीर सागर मगनहै २१ बिबिध बरन सुर चापते न देखियत मानो मणि भूषण उतार धरे भेशहैं । उन्नत पयोधरबरसि रस गिरिरहे नीके न लगत फीकेशोभा के नलेशहैं। सेनापति आयेते शरद ऋतु फूलिरहे आस पास कासखेत खेत चहुंदेशहैं। योबन हरन कुंभयोनि के उदैते भई बरषा बिरध ताके श्वेत मानो केशहैं२२ राजीजिय करति रसीलिनकी राजीतैसी राजी मुकुलित मालती की दरशातिया। कुञ्ज कुञ्ज मन्दिरन अलि पुञ्ज गुञ्जरत मंजु मकरन्द मन्दगातसी बिभातिया । कहत किशोर कोशबद्ध कमनीय महा रमनीय रमन बिनाहू बनजातिया । शरद समस्त शोभाशशि मयव्योमकाश बसमयविश्वरंग रसमय रातिया २३ आसपास पुहुमि प्रकास के अगार सोहैं बनन अगार दीठि ह्वै रही निवरतें । पारावार पारद अपार दशों दिशि बूड़ी चण्ड ब्रह्मण्ड उतरात बिधिवरते । शरद जुन्हाई जनुधाई धार सहस सुधाई शोभा सिंधुनभ शुभ्र गिरिवरते । उमड्योपरत ज्योतिमण्डल अखण्डसुधा

मण्डल मही में बिधु मण्डल विवरते २४ आई ऋतु-शरद गगन बिमलाई छाई खंजन की राजी कुञ्ज कुं-जन बसैलगी। हरित हरित पथ पथिक सिधारे कथ अकथ मुरारी ओप जग बिलसै लगी। सुमन शरासन के सुमन शरानसे सुछूटिके सुमन शर आलीही गसै लगी। तालन कमलफूले कमल बितूलै अलि अलि पर पीतमा परागकी लसैलगी २५ चाँदनी महलबैठी चाँदनीके कौतुकको चाँदनीसी फूली राधे चाँदनी महालरैं। चन्दकी कलासी देवतासी देवदासी सङ्ग फूलसे दुकूलगरे फूलनकी मालरैं। छूटत फुहारे तारे झलकैं अमलजल चमकैं चँदोवा मणि माणिक बि-शालरैं। बीच जरतारन की हीरन के हारनकी जग-मगी ज्योतिनकी मोतिन की झालरैं २६ मोती मंजु महल बितानतने मोतीमयी मोतिन की झालरैं मनो-जहिं गनै नहीं। सेवक भनत वैसे फरस फनूस आज सेज सुखमाकी छबि उरमों छनै नहीं। चाँदनी चटक इत चमक चुनीन तैसी अङ्ग चारु तासों दोऊ मोरत मनै नहीं। शरदको साज ब्रजराज राधिकाको आज चाहत बनैपै त्यों सराहत बनै नहीं २७ क्षिति पर देखो महा सौरभ सरस शुभ सौरभ सरस पर सुरस श-रदकी। रसपर कहै श्याम सुन्दर झलकछबि छबिपर मारुत जो जलद शरदकी। मारुतपै राजत गगन सुग-गन पर चाँदनी बिराजत त्यों शारद शरदकी। चां-दनी पै चन्दकी मुसाहिबी दुचंदफबी चन्दकी मुसाहिबी

पै साहिबी शरदकी २८ गगन गयन्दपर चढ़यौकरि
डङ्का डङ्का बङ्का पिकनाद आशे होत मन भायो है।
भनत कबीन्द्र तारे सुभट अमीर जोर पैदर चकोरमोर
शोर सरसायो है। तोरतम अग्ग खग्ग लैकर उदग्ग
बर मदन हरौल मानगढ़पर धायोहै। चमू चन्द्रिकान
के पसारे अलबेश नख तेश आज नवतम नरेश बनि-
आयो है २९ कासन के कुसुम बिकासन लगे हैं अङ्ग
कञ्ज कञ्ज आसन पै चारुता चढ़ैलगी। सेवक भनत
छबितारन कतारन ह्यों तारन पियाकी पुरहारन
मढ़ैलगी॥ अवनिमें अम्बुमें अकाशनिमें आछी भांति
ठौरठौर दीपनकी दीपति कढ़ैलगी। सेलीको सकेलि
के चमेलीके चलत चाह बेलीसम बनिता नवेली की
बढ़ैलगी ३० नवोखण्ड मण्डित अखण्डल उदोत
भयो राका चन्द्र मण्डल दिशान दशदरशात। बिमल
बिशाल भये शीतल सरित सर सकल कलित ते बि-
लोकियत अवदात। मोतीराम मंजुल मृदुल मालती-
न मिलि मलयजमलय समीर सीरे सरसात। दरद
करतये भँवर भीर कुञ्जकुञ्ज बेदरद आलीरी सता-
वत शरदरात ३१ हरत किशोर जो चकोरन को
तापकिल कुमुद कलाप मुकलीकर सुछन्द भो। मा-
निनीनहूं के हिय दरप दलितकर कन्दरप कन्दलित
करि जगबंदभो। मुदित कमल अवलीकर तिमिरक-
वलीकर दिशान धवलीकर अमन्दभो। आनँद अमित
करलोक प्रमुदितकर कोक अमुदितकर समुदित चन्द

भो ३२ बररायो कबिन कलाधर को कलङ्क तैसो को सकै बरणि तिनहूं की मतिछीनीहै। सेनापति बरणी अपूरबयुगुति ताहि कोबिद बिचारो कौनभाँति बुधि दीनीहै। मेरे जान जोतिक सों शोभा होत जानपरी तेतिकै कलानिरजनीकी छबिछीनीहै। बढ़ती के राखे रैनिहू तैं दिनहूबैहै याते आगरी मयंकते कलानिकारि लीनीहै ३३ पूरबहरित बनिता को मुखपत्रतामें रचना रुचिरबर मृगमदरङ्गकी। कैधौंनभसरवर फूल्योहै कमल तामें मेचक प्रभाहै आली अवली उमंगकी। औरौ कबि कोबिद न उपमा अनेक कही बदन बखानै एक इहि बिधि अंगकी। बिरही निरखियाहि नाखत निसास याते दागिल दिखात मानो आरसी अनंगकी ३४ सुन्दर सुधार्यो सौध सुधासों सुधार सन्यो सौरभ सरस सुरभित आसपाससो। बिमल बिछौने बिछेरजत जरीके चारु जगमग होत भोलानाथ के निवाससो। राकापति छायो तैसो मध्यसें सुमध्यबाल बैठीपरयङ्क पै बिराजत सुहाससो। अम्बर में चन्दकी अवनि पर चन्दचहूं चाहत चकोर शोर पार्योहै प्रकाससो ३५ अतिही अमंद बंधु चंद्रिका सुधाकरको पुण्डरीकपथिक प्रिया को प्रतिकूल है। कहत किशोर निशि नारि केहिये की मणि दरशावै कुंवर किशोरी दिनदूलहै। दरद हरनबर परबको इन्दुस्वच्छ शरद सुइन्दिरा को मुख सुखमूलहै। तारकान कलित मभार चारु द्युति फूल्यो अंतरिक्ष कलप तरोवरसो फूलहै ३६ मोदनीके

देखिये कुमोदिनी कोहीके दीह दीपति दीपति दीपद्युति उघटानकी ॥ लोकलोकलोकनके थोकन बिनोदबाढ़ो शोभा सरसाई स्वच्छ सरित तटानकी । रंगभरी राजत नवीन रसराकारम्य शीतल सुगन्ध गन्धरजनी जटान की । निंदित चकोरें छबिछाकि सुखलूटेलेत छूटैचन्द्र मराडलते छहर छटानकी ३७ कढ़त निशाकर दिवा-करसो दीठिपर्यो अन्धकार सोतो एकपलमें पलायो है । भोरभयो जानिके बिहंगनमें शोरमचयो अवनीअ-काशमें प्रकाश सरसायोहै । परीचल चालबाल चमू चतुरङ्गिनीमें नागर तपत तेजब्रजपर आयो है । चाँद-नी न होय यह मानिनी के जीतिबेको मैन महारथी ब्रह्मअस्त्रहि चलायो है ३८ घामसम चाँदनी बेघेर्यो ब्रजमराडल है ताती घराडकरसी मयूषन मचाय ले । आज अबलानिमारि औरहू कलंकलैके मनकेमनोरथ निनीकेके रचायले । धीर बलबीरके बियोगी नैननीर भरे प्रेमरस प्यासे प्रेमतिनको जचायले । सरेमन्द चंद सुनि आवै ब्रजचन्द जौलैं तौलैंतन गोपिनकोबिरह तचायले ३९ कास को बिकासन सो कासन करैगो नाहिं याते हियो त्रासनसों मेरो अतिभ्वैरह्यो । धान पान पाके हेरिहेरि धीरहाके धरै बाढ़े बिरहाके हाय नैननीर च्वैरह्यो । कहैहनुमान फूलेकञ्जनपै भौंरनको वृन्दसो बिलोकि बैसमानो यमज्वैरह्यो । जाकारिकहै नयों क्षपाकारिके ज्वालनसों शरद निशाकर दिवाकर सो ह्वैरह्यो ४० याहीते निपट निरधारि तोहिं नीर

सके छाँड़यो सब सुरन सुधारसको चाखि चाखि। देव-
मणिबेही काज बैर बिरहीजन सों बाँध्यो ऐसीबातन
कलङ्की भयो साखि साखि। शरदकी ऋतुमें उचाट
चित ब्रजराज राधेको बिरह ब्याप्यो उठतयों भाखि
भाखि। कियो कहा चाहतहै रैनचारी चितचोर एरे
चन्द चाँदनी कीचटकहि राखि राखि ४१ ग्रीषमकी
घामहै नघाम घनश्याम याते छ्वैगई सुबान श्वेतह्वै
गई जरदकी। बीचन दरीचनके आभाहै मरीचन की
कामने निकारी कोर तीछन करदकी। फैलफैलगैलन
नवीन बिष फैल भरी दीपत दुखीन द्युति पारद बरद
की। गरद करीहैं दिन दरद भरीहैं सखी शरद परी
हैं लखि चाँदनी शरदकी ४२ बैरही बिशद क्षीरनद
ते शरद शुभ्र शोभितसुखद फैली फेनके फरदकी। उन-
मदमदमें सुगंधकी बिहदसैना धाई चहुंहदते छपदरुज-
रदकी। तैसोही बिरह बदमारत दैगदबद चूमतकरेजो
कोर कामके करदकी। चीरकीनेरदरी दरदै करीहैं
बेपरद बेदरद दैयाचाँदनी शरदकी ४३ फूले आसपास
कास बिमल बिकास बास रहीना निशानी कहूं मही
में गरदकी। राजत कमलदल ऊपर मधुपमैन छापसी
दिखाई छबि बिरह फरद की। श्रीपति रसिकलाल
आली बनमाली बिन कछूना उपाय मेरे जियके दरद
की। हरद समान तनभयोहै जरद अब करद सीता-
गतिहै चाँदनी शरदकी ४४ चन्दनिशि ललना बदन
लखि आईकैधों पारदकी खानि फैलिआई आसमान

है। कैधौं सुखके प्रबोध सुखित सकलहर लोकन के कलहा सभासे भासमान है । मेरे जान मदन महीप सब जीति क्षिति ऊरध चढाइके तयारी को समानहै । कैधौं तारागन मुकताहल के भूसकन चाँदनी न होय चारुताई को बितानहै ४५ बादलाके बीजना बनाय बर बादलाके बानिक सहेली ज्यों सुरेशके सदनकी । मोतिनके हार औहमेल गुलुबन्द बेंदी पहिरि खराऊ खरी कुंजर रदनकी । हीराहीको चूराबाजूबंद औ त-रौना बेना महासुखदानी रानी मोहन मदनकी। चाँदनी में चाँदनी पै चाँदनी बिछौना पर चाँदनी सीफैली चारु चांदनी बदनकी ४६ पूरण शरदशशि उदितप्र-काशमान कैसी छबि छाई देखो बिमल जुन्हाई है। अवनिअकाश गिरि कानन औजलथल ब्यापक भई सो जियलागत सोहाईहै । मुकता कपूरचूर पारदरजत आदि उपमाये उज्ज्वल पै नागर न भाई है । वृन्दाबन चन्दचारु सगुन बिलोकिबेको निरगुन ज्योति मानो कुञ्जनमें आईहै ४७ डोलै नभ बीथिन में बोलै धरि मौनब्रत भये सित सूतिलाये रहे तित छाजिके । जीवन द्विजनकोदै जीवन मुकुट होय बनेहैं बिमलबाम चपला को तजिके । दीजैनहिं दोष एक ऐसेऔलि ऊधवको श्याम भये बाम अब करो जो गराजिकै । नीरद शरद के दरदहरि देशदेश करैंउपदेश येऊ यतीवेष सजिके ४८ चन्द्रमाप्रकाशनमें चन्द्रमुखी हाशनमें अवनि अ-काशनमें काशन में छाईहै । नन्दरास तालन में इन्द्री

बनमालन में चंचरीक जालन में अधिक अमाई है। मैत्रकाकी डारिनमें मालती कियारिनमें फूलीफुलवारिनमें सौगुणी सोहाईहै। कामकैसी खेतिन में बालुका समेतिनमें सूरसुता रेतिन में शरद समाईहै ४९ ह्वैरही तयारी महारानी रासमण्डलकी मल्लिका व मालती सो अमित अगारहैं। कहैं नन्दरामगई सरीसेत सारी साजि गोपकी कुमारी हिये हीरन के हारहैं। षोड़श कलासों आजु उदित कलाधरहै चांदनी के भारनसों छोड़े अभिसार हैं। सेत चांदनी में सेत चांदनी चँदोवा तनेमानो क्षीरसिन्धु परे पाराके पहार हैं ५० षोड़श हज़ार बाल षोड़श शृंगार साजि षोड़श बरषबैस मुदित बिहारहै। बाहुन सों बाहु जोरि मोरिमोरि अंगनसों कीन्हों महामण्डल अखण्डल अपारहै। कहै नन्दराम तैसे तारऔ सितारझिल्लि चूरी खनकार स्वर पंचम उचारहै। भूतल दिशान बिदिशान आसमानहूलों छम छम छाई घुंघुरूकी झनकारहै ५१॥

हेमंत ऋतुके कबित्त व सवैया॥

कवित॥ ओक ओक लोक सबकरत कलोलनिशि कोकन को शोकभो कलानिधि को काफांसो। भनत दिवाकरलगावत अतरअंग बारतहुताशन डरपके बराफांसो। राजा औ अमीर पशमीनाके बहारलेत मोजरा बरंगना करावत इजाफांसो। आयोयेहेमंत कन्तलहत अनन्तसुख सन्त जड़ सैनलेत जगत जुराफांसो १ पल पल दिनदिन यामिनि घटनलागी भामिनी जगनलागी

यामिनी एकन्तमें। भनतदिवाकर संयोगिनी सुखीनी कीनी दुखिनी बियोगिनी लगीनी हंस हंतमें। धरधर धरधर बाजत कपाटफट सटपट सेजपै सजेज छबिवन्त में। सखी यह पाखमें जो आयो ना हमारोकन्त होंगे प्राण अन्त नहिं पाय कैं हेमन्त में २ अगर की धूप मृगमदकोसुगन्धवर बसनबिशाल जाल अङ्ग ढांकियतु हैं। कहै पदमाकर सुपौन को न गौन जहां ऐसे भौन उमँगि उमँगि छाकियतुहैं। भोगश्रौ संयोग हित सुरत हिमन्तही में एते सबसुखद सुहाये बाकियतुहैं। तान की तरङ्ग तरुणापन तरणि तेज तेल तूल तरणा तमूल ताकियतुहैं ३ छाईहै हिमन्त बात तन्त की बतायदेत अन्तको बराय जिय अन्तको न जाइये। द्विजबलदेव कहै कसकहि दूरिकरि कामकी कलोल कान्ह कामद मचाइये। अतर तमोल तेल तूलन के तुङ्ग साजि तातीसी सोहाती सेज तापै इत आइये। करत हैं आन तजि मानको समान नेक मानिये प्रमान निशि भान उर लाइये ४ छाई शीतलाई मुरझाई कला कुञ्जनकी मानो मनरञ्जनकी पाइकै जुदाई है। कापै कहिजाई दिनहूँकी लघुताई जनुरही छलताई लखि प्रीति सकुचाईहै। रैनि अधिकाई भयो विरह सहाई तासु शीत चहुंघाई बिनु मीत भीति धाई है। पीर सरसाई फूले सरसों सरस भाई हेमऋतु आई ना कन्हाई सुधिपाई है ५ तुलसी लसी सुअङ्ग अतिसे उमङ्ग देति जासु मैन बास योगीजन बिलसन्त हैं। शीतल सवाँर उर कला

दरशाय करि जातन विलोकि शोककोक बिलपन्तहैं। जासु की बिभावरी विशाल लखो दीनयाल मित्ररूप सब हीके सुखद बसन्तहैं। किधौं हैं हिमन्त के सुतन्त शित सन्त सभा किधौं सुखमाल सन्तकमला के कन्त हैं ६ सूर ऐसे शूरको गरूरखरो दूरकियो पावक खिलौनाकर दियो है सबनको। बातनकी मारहीते गात की भुलात सुधि कांपत जगत जाकोभय आनमनको। गिरिधर दासरात लागै कालरातकोसी नाहिंसों लगत भास राखत चरनको। आयोहै हिमन्तभूमि कन्ततेजवन्त दीह दन्तन पिसावतो दिगन्तके नरनको ७ कंजना सुखाये ये सुखाये रंज मनही के शीतना बढाई नोत प्रकटी समन्तहै। रातना अधिक करी रतिअधिकाई भाई दिनना घटायो कर्म वासना तुरन्त है। गिरिधर दास पौन शीतल असहहैन प्रेम के प्रवाहजग चलन टरन्तहै। राधिका के कन्त को भगत मतिमन्दहै कि ब्रज शीतवन्तऋतु प्रकट हिमन्तहै ८ अतिही अराम देन औनको अराम अभिराम आठौओर ओरयो ऐश अबलनमें। आसन अनूप आपईशहै अनीश जापै अछिक अवलोकिहै उदासी अम्बज़न में। गिरिधर दासएको उपमान आवतहै ईंगुरसी आछी अरुणाई अधरन में। ससधर इंदुमुखी ओजसों अमल ऐसेलसे अननमे अजब अगहनमें ९ चारों ओरभोर बैठेदाब चारों ओरन लौं ज्योंहीं मनमथ राखो हिमन हुहाई में। जावक अरगजाके तिलक बिराजिरहे भागभरे भामनकी जगमग

ताई में। अलक चमर घनश्याम बाजे नूपुरादि बटत हंसन अवलोकन बधाईमें। थिर चर ऐसो राज देखो देखो सखी आज दुहुनर जाईपाई एकही रजाईमें १० बरसै तुषार बहै शीतल समीरनीरकम्पमानउरक्योंहू धीरन धरतहै। रातिन सिरात सरसाति व्यथाबिरह की मदन अरातिजोर योबन करतहै। सेनापति श्याम हमधनहैं तिहारीहमैं मिलोबिनमिलेशीतपारनपरतहै। औरकीकहाहै सबिताहूशीतऋतुजानि शीतकोसतायो धनराशिमैं परतहै ११ शीतको प्रबल सेनापति कोपि चढ्योदल निबल अनलगयो सूर सियरायके। हिमके समीर तेई बरषैं बिषमतीर रहोहै गरम भौनकोनहीमें जायके। धूमनैनबहै लोगहोतहैं अचैनतऊ हियसों लगायरहैं नेकु सुलगायके। मानों भीत जानि महाशीत ते पसारि पाणि छतियाकी छाहँ राख्यो पावक छिपायके १२ पूसके महोना काम बेदन सही न जाय भोगही के द्यौसनहीं बिरह अधीनके। भोरही केशीत सोंन पावक छुटतत्योंहीं रातिआई जानिहैं दुखितगन दीनके। दिनकी छोटाई सेनापति बरणी नजाइ रंचक जताई मन आवै परबीन के। दामिनी ज्यों भानु ऐसे जातुहै चमकदेखो फूलै नहीं पावत सरोज सरसीनके १३ आयो सखि पूसौ भूलि कन्तसों न रूसौ केलिही सों मन मूसौ जीउ ज्यों सुख लहतुहै। दिनकी घटाई रजनीकी अघटाई शीतताईहू को सेनापति बरणि कह तुहै। याहीते निदान प्रात बेरि उदै होत नाहिं द्रौपदी

के चीर कैसे रातिको महतुहै। मेरे ज्ञान सूरज पताल तपै तालैं साँझ शीत को सतायो कहलाय कैं रहतुहै १४ सुरैतजि भाजी बात कातिक में जब सुनी हिमकी हिमाचलते चमू उतरतिहै। आये अगहनकी नेगाहन दहनहू को तितहू ते चलीकहूं धीर न धरति है। हिममें परीहै हूलदौरि गहि तजीतूल अब निज मूल सेना पति सुमिरतिहै। पूसमें तिया के उच कुच कनकाचल में गढ़वै गरम भई शीत सों लरति है १५ पीय पीय रटत रहत आठहूं पहर रसनाभई रहतज्यों पपीहा पावसी। घरीघरीदहै मैनचित्त कोन कहूं चैन रह्योन परत अैन बूड़बैन नावसी। तुलसी कहत पिय प्यारे के समीप बिना भूषणकी कहा भौन भोजन न भावसी। पीवबिन पूसमास पैयत न चैन आली बुन्द ऐसो दिन होत रैनि दरियावसी १६ भावन लगी हैं अंशु पावक प्रभाकर की छावन लगीहै गति शीत की दिगन्तमें। रात अधिकानी दिनहानी त्यों प्रत्यक्ष भई सृष्टि सियरानीहै गरम सलतन्तमें। कहैतोयहरि सजि सूहे रंग अंगपट चाहत उमंग कंत कामिनिएकं-तमें। सेवैं आगवन्त मदमादकछकन्त सुख प्यासा को अनन्त छविवन्त या हिमंतमें १७खांसी कोठरीन में सवांरी सेज सैंधिसनी आसपास अगर कपूर बगरे रहें। दरन सुपरदा गलीचन सों झंपी भूमि बरें दीप कंचन के अतर धरेरहैं। ऐसे समै कन्त संग युवतीहिमन्तऋतु पौढ़ि पलका पै दोऊ आनँद भरेरहैं। शीत

ग्रास दपटेसे कपटे दुकूल दुःख लपटे दुशालन सों छपटे परे रहैं १८ छोट दिन ह्वैगो दुख और छुटिवे को भयो मोर सुखलूटि में निशाको बड़ी जोरैना। तैंसेतेल तूलनि तमोलनिके रंग भरे पामरी दुकूलनि ओढ़ाय मुखमोरैना। सेवक रसालन मसालनके माचे मोद आगिहूकी मालन बिसालनको दौरैना। खाय काम तन्त के अनन्त सरसन्त मोको पायपाय हरख हिमन्तकन्त छोरैना १९ धाई है धरापै सियराई चहुं ओरनते पलटि गईहै पूरी प्रकृति अनन्त की। पानी पौन पुहुमी पराग अङ्गरागन की अंगन अंगार दिशि बिदिशि दिगन्त की। कम्पि कम्पि आवत करेजो जगमोहन जी कामिनी छोड़ाये हिये छोड़त न कन्त की। हरषि हजारें कलका उतरु जाके छाके बाढ़त निशाके अंगढाकत हेमन्तकी २० चारो ओर चरचा चलीहै चपरासिन की दौरधरेरे द्वारद्वार दुलहिन के। लागे लोगलाले पीले बसन रँगीले लेन देन त्यों-किवार कम्पि कोठेपै रहन के। त्योंहीं जगमोहन त-लाश अबला को होन तरुणी तमल तूल तोषन दहन के। आछे मृग मदके अमोद उदगारे त्यों बहार दार मंजुल महीना अगहन के २१ तलप तनाओना अतूल मखतूलनसों तोषकदुलाईतूलतननके तागोना। लागल चहुंघा तापतीयरा तपनतेजज्वालाभरे ज्वालन जगावै जूरि जागोना। तौलो जगमोहन हजारों हरवासे हार काहू हिमवंतहोमें काहू भाँति भागोना। सारीकरि अ-

लगसकोचि सुकुमारी जौलौ उन्नत उरोज वारि प्यारी उरलागैंना॥२२॥ झांपनमों झांपैलगींतापन तनूनपद कांपन करेजालागे अदना औ आलाके। आंगन अगोलन में आतप अतिये ती कछु छूटे ना पछेवा पछैह्यांयो न पालाके। दैवकी दोहाई महा दम्पति दिनोमें झरे दावन दवाई देरी दीरघ दुशालाके। देदैउर उरज उतंग जग मोहनजू रंगरस राते माते मादिक मशालाके॥२३॥ आवत बधूके चहुंघा रहे दुकहूं आय गयो उहां हरि हिमिवंत हमराही में। ज्यों ज्यों जग मोहनजू नाहक निहोरी करी बसन बिथोरी हवैन रसना बनोहीमें। त्यों त्यों मतवारो पौन बसिकै करेजो भरे छोरसिसि कीनमें समेटि अधराही में। दीपक बुझाइ देरी दीरघ दुशालन के दबकि दबाइ रहीं दबकि दबाही में॥२४॥ अंग सुखराय औ उसासन थमाय नेक हीयकोहिमंत वायबेधै चहुंघायजूटि। ताहु दरशाय दशातेबिन मलीन अन सब सुख चायन को लीन्हों काम देव लूटि। खान पानको नशाय डोलै तो बिरहपाय मूंदि पलकों को रहै लोगन ते दूरि छूटि। भूलिभूलि के कुपन्थ जाय सुनि प्यारी ताके कांटो गड़ि जाय पै न जाय तेरो ध्यान टूटि॥२५॥ बैठत उठत जात आवत सकारे सांझ कामके करारे बाण हिये डोलियतु है। देखैं बन बाग भले लागत भयावन से खान २ माहिं मानो बिष घोरियतुहै। धाय कै हिमन्त बाय बेधत दुखद काप छायकै करेजो सदा माहिं छोलियतु है।

लखे कौंन जाय ताहि बिरह सताय तायो तो बिन सहाय हायहाय बोलियतु है २६ बास पिय पास जाको अतिही हुलास ताको भोगन रसालरासरससर सायोहै । चक्र चौंधि देखिदेखि चकित चकोर चाहै शशिके समानसर शीतल सोहायोहै। बहतसमीरसोरी दहत हमारोअंग रहत न धीरयों अनङ्ग उमगायोहै । छलसों धर्यो नामअगाहनगहन समविरही गहन प्राण अगहनआयोहै २७॥ सवैया ॥ हेरुहिसंतहुलासिन हालहि माकरहेलिन को हरषाइकै। हारनहारन हीरनहारसे हीरोहरौं हिम बिंदु बिछाइकै॥ श्रीरघुराजनऊखम-राख्योहि मारिउराइसि खीदि सिजाइकै । जायपरा-य लुकाय रही तबहेलिन के हियरे में हेराइकै २८ अभिराम हमामके धामनमें चहै केतो अराम लपेटि पटै। बिरचे बिधिकेते दुशाले बिशाले धरेतन में नहिं पालेकटै। रघुराज कहै शिखी सुरजहूँ न निवारिसकै हिय हारि हटै । क्षितिमें क्षनदामें छबीलीबिनाछतिया छपटै हिमको दपटै २९ ॥ कबित ॥ परत तुषार भार उठत अपार भार हारसों पहार पूस आँगन सुहातिहै । बीछे कैसे छौना भरे मानहुं बिछौना माँझ दिशाहूबि-दिशा लागे घेरे घर घाति है। बीठल सुहित अतिगति मति भक्ति ज्ञात चातक करात जब बोलै आधीराति है । बिरह नेरही राति पिय बिनरही राति आठैंनिय राति तिय जाति पिय रातिहै ३० ब्रह्म यंत्र वारे भारे लपकैं सुगंध तैसै आलदीप माल लाल जालन जरेरहे।

परमप्रबीणाबीणा लैलैसुखकार सरदारचीन२ रंगराग न भरेरहे। चूमि चंदबदन चपाय पाइँ पाइँमेलि उरज उतंग अंग अंगन अरेरहे। करदे करन हारे सरदे समीरन के जरदे दुशालनके परदे परेरहे ३१ प्यारी पिया पौढे परयंक पर सोहत हैं मोहन परसपर रस बतियां निकरि। आपसमें बेधेमननेह शरासनचढ़े तीक्षन कटाक्षन सों भौंहैं धनुतानिकरि। राधामनमोहनजू अंगनि के संगनिसों पुलकित होय रहे लिपटि भुजानिकरि। सुखको न अन्त लह्योरजनी हिमंतऋतु कियो गुनवंत कन्त कामकी कलानि करि ३२ तरुनि तमोल रचि अंग रंग राजतहै उमंग अनंग संग साजे निज कंतको। द्विज बलदेवकहै हरषहिये अपार प्रमुदित वाद्यकार सुरताल तंतको। शीत सरसात तूल सेवत त्यों जातनेह उदितहै बातसुख शोभित सिमंतको। मोद अनुराग मन रङ्ग छबि बागम लखात बल भागसभो आगम हिमन्तको३३ एकओर बानपंचबानको गहाइदीनो एकओर रणअतिकठिन लखावतो। दोषाकर बीचदोषआकर बसाइ शीत भीत करै जेते प्रीति बाहर निबाहतो। बंशीधर कहै घरडगर नगर बीर लैकरि समीर रोम रोम निबसावतो। छूटतो नमान मन्त्र तन्त्र अरु यन्त्र कीन्हे जोनहिं हिमंत दूती कंतबनिआवतो३४ औनिते अंकासते अवासनते उदकते इंदुके उदैते आसुदेते उमड़ो परै। श्याम कबि मालन ते मनते मनीते मनमोहन के मोहते मनोजतेमड़ोपरै॥ झांकती झरोखनते झंझाके

झकोरन ते झाड़नतेझारनते झूमि झूमड़ो परै । पान ते प्रसूनतेपरागते पहारनतेहारनते हेमतेहिमंत हुमड़ो परै ३५ ॥ सवैया ॥ देखभटू दिनरैन दशायहमैनसदा शर तानत तंतरी। शीत सो भीत भयो हियरा जियरागति कौन लखै बिनकंतरी । कीजैकहा बलदेवरहै तनप्राण प्रबोणालहैं गतिसंतरी।अंतरी जायकहीं किहिसों गति कीन्हीकछू जसआये हिमन्तरी ३६ नील निकुंज बनो रसपुंज चहूंदिशि हेमबितानहैताने। आछेपरे परदाम खतल के तूलको चारु बिछायो बिछाने। केलिकरैं गिरिधारन जू सँगलै तियकोमल आतशखानो । पाव कहीकी शिखान के संग अनंगहि पावक पूजत मानो ३७ सेजसजाई रजाई समेत जहाँ तहँ आई प्रियाजोस धन्तकी । गाढ़धराहै तुरन्त अंचौ तबकीनी शुरुकछु बात इकन्तकी । त्योंहरि तोमज सो हँसकै रसकै बस कैसकैसके छबिवन्तकी । हूलै हिये झुकिझूलै सुसुरति भलै नहीं हमैंकेलि हिमन्तकी ३८ ॥ कवित्त ॥ आयोहै हिमन्त जोर जाड़ेके प्रसंगनसों रेशमके झंगनमैं अंगन दुराये देत । कहैं नन्दराम त्यों हमामहूं न काम सरैं धाम धाम आला पौन पालाको उमाये देत । तूल पेट पीठिन अंगीठिनमें डीठिलगी तरुणी बिहीन तन कम्प सरसाये देत । दोगुनो कहा तौ चित चौगुनो चुरात हेरिनौगुनो न सौगुनो समीर शीतलाये देत ३९ आसव निरालाभल भौन कि निकाला देत प्यालापर प्याला तौहूं शीत सर पेटे लेत । कहैं नन्दराम जरैं दीपन की

मालालगे पेचिया बिशाला धूमधाला अरपेटे लेत । दोहरे दुशाला ऊनशाला छौनशाला पट्टशाला कीट शाला छीटशाला गरपेटेलेत । बन्दीकिये ताला तौपे तोलके मशाला उरलागे बेशवाला तौनपाला भरपेटे लेत ४० ॥

शिशिरऋतु के कबित्त व सवैया ॥

कबित्त । शिरे व्योम बरफ़ भरफ़के सनाका चले मखमली गादीचांदी पेंचुआ लगेरहे । भनत दिवाकर दुशालावो बिशाला आलाहरत कशाला रसख्याला तेपगेरहे । छातीसे लगाय छातीताती कुचथातीमिसि मैन मदमाती कर मातीमें जगेरहे । शिशिर के शीत-केत भीतसमशीतचीत जीतलेत पालाजो सुबालाकेसँगे रहे १ सीरीभयो जल सुसमीर थलसीरी भयोसीरीआ-समान बानपान सीरी परिगे । भनत दिवाकर बसन वोदसन सीरी बदन सदन बनसीरी सबकरिगे । सुन्दर दुकूल सीरीतूल फूलमल सीरीपूल धलराह वाहसीरी सम ठरिगे । शिशिर के शीतयहकौन्होहै अनीतइत थीतहै उरोज एकसीर संगलरिगे २ माणिक महलमें प्रमाणिक बिछाये सेजहीरनके हार तेज सेजपै धरे भ-ले । द्विज बलदेव त्योंहीं कंचन लतासी बाल पूरमन-मोद कै कपूर पङ्कमें मले । अमित अरामैं भोगदेतब्रह्म जामैं अरुशीत के तमामैंते समामैं जायके जले । शि-शिर की शीकरन सोई है बशीकरन हीकरन देव पियातो करत हैं गले ३ पटुसों छपावैं परछिद्रन को

आठोंयाम अति अभिराम जग पूरैंजन कामरी। जाके संग पायकै उमंग मांहरातेसब माते गुणगावैं शुभराग रङ्गवासरी। लखो यासुमन रहेहार अनुरागि रटै द्विज शाखावर बाग जासु धामधामरी। शीतल सुभायचित्त याके मित्रहूको ध्याय सिसिरिभै सज्जनन सज्जन मैं श्यामरी ४ सोहैं सरसोहैं सरसोहैं करि डारैं नैन लगैं सरसोहैं बिरहीको दिनरातिहै। अम्बर सुहावै औप्रभावै बरहीकी बर सीकर परत निशिसबको सिरातिहै। गावत हिंडोलैं मरनागरी गरीय गिरा कहूं कहूं कोकिलको काकली सुनातिहै। चन्दन दिखात कहूं दीनद्याल बन्दनमैं निन्दातिहै पावसकै शिशिरसोहातिहै ५ बिसूना कँपावत है कांपति घनीसी आय सीसीना करावती करत अतिदीनाहै। रदना बुलावतहैं रदनिज पीसे सोई चन्दना स्रवत मुखचन्दको पसीना है। गिरिधर दास पीरो खेतना शरीर यह कञ्ज सुरझाये ना निगाह भूमि लीना है। लेतसीरो सांसकर श्यामसों प्रथम रति शिशिर न एरी यह नागरी नवीनाहै ६ बाहर गयेते घर आवनलगेहैं लोग घरके बसैयन पयान कियो साफ़ासो। ज्ञानिन को ज्ञान अरु ध्यानिनको ध्यान मान मानिनको मान फाल्यो मृग मदनाफ़ासो। ख्वालकबिकहै प्याला बालाये दुहूनही में सबहीने जान्यो ठीक आनंद इजाफ़ासो। जामदार जीवनको जामको जगैया बड़ो आया अब जाडोजग करन जराफ़ासो ७ गाले अति अमल भराले तोशकों

में फेर ऊपर गलीचे जाल डाले बिछवाले अब। सेज पर सेजबन्द खूब खींचवाले खाले पान रसवाले औ गजक सजवाले सब। ग्वालकवि प्यारी को लगाले लिपटाले अङ्ग ओढ़िकै दुशाले में मजाले सिसिकाले जब। मंजुल मसालेमिले सुराके रसाले पीले प्यालेपर प्याले मिटै शीतके कसालेतब ८ आखे रङ्गरङ्गकेतनाले दरवाजन में परदे मुंदालेवे झरोखे ज्योंन आवै पौन। चारोंओर गलमगुदाले बिछवाले गाले छाले धूपअगर अँगीठी दहकाले भौन। मंजुकवि खाले जरा गजक चढ़ाले मद बीड़ियां चबालेभरी बिबिध मसालेजौन। भुजन फँसाले तिय उर लिपटाले औरै दुवाके दुशाले येकसाले तुमिटाले क्यौंन ९ बिबिध बनातै कीमखाब की कनातैं तामें दीरघ दुचोवैहैं सिचोवै हक हद्दीमें। चांदनी है चोबनपै परदे दरीचनमें दोहरे दुलीचे हैं गलीचे गोल गद्दीमें। ग्वालकवि भांति भांति भोजन हैं भामिनीहैं दीपहैं दुशालाहैं मसालेमैन मद्दीमें।चाप-कै चुहद्दी साजसेजपै बिहद्दो वै सकसीतरद्दी तबडूब्यो जाय नद्दीमें १० सुघर सजाई कोठरीनमें बिछाई सेज छतपिछवाई छाई गलक कहा कहों। मृगमद कुंकुम सिंचाई बीरी कोचभाई नशाकी पिलाई इनहूंतेशीत-नादहों। कहीं धधकाई कहीं मीठी अंगीठीकी आंच कहीं तो उढ़ाई दुशालाते कसाला लहों। कहैनाथ होईहै जाड़ाको भजाईजबै तेरीया रजाई में रजाई ते दबकि रहों ११ सुभग पलंगपै बिराजैं नाथ साथ सन

र्विविध शिंगार साजि जेती पुरबालाहैं । ओढ़िके दु-
शाला उर कंचुकी बिशाला ओढ़ि मोतिन को माला
होरहारहू बिशालाहैं । कंचन अँगीठी सों सुमोठीमीठी
धूमउठैं मनुकाम श्यामहेत रच्यो धूमजालाहैं । शोभन
भनत येते उदित मसाला जामें तामें बिच केलि करैं
ओढ़िके दुशाला हैं १२ शीशा के महल बीच कहल
हिमाचलको पहल दुलाईबर्फ चहल कसालामें । चंदन
सों लागत कुरंग सार अंगन में अनल अँगीठी जिमि-
बारि हौदशाला में । लागत गलीचा ऊन शीतल सि-
वार तूल दीपक नक्षत्र रघुनाथ रसथालामें । बालाउर
बीचजातमालासी जुड़ातजात पालासम लागतदुशाला
शीतकालामें १३ चिड़िया चुहुचुहानी रजनी बिहानो
जानी प्रकटी प्रभात बानी गोपिन के गीतमैं । कालि
दास औचकसी सेजते उतरि प्यारी अनललगाईचली
चितै नवनीतमैं । गात अंगरात अलसात अलबेलीभांत
भावतो तजो न जात शिशिरके शीतमैं । फेर परयंक
पर ओठभर ओढ़िपट पीतमैं लपटि लपटायरहीपीत
मैं १४ ॥ सवैया ॥ शीतसमै परदेशको पीय पयानसुनो
वह रोवन लागी । याऋतुमें हरिक्योंहू रहैं घर देवता
पूजि मनावन लागी ॥ और उपाव तक्यो न कछू तब
साजिके बीनबजावनलागी । प्यारी प्रबीणाभरेसुर मेघ
मलार अलापिके गावन लागी १५ ॥ कबित्त ॥ चन्दछबि
पागिआगि औरैचले भानुभागि शीत जागि जागिजस
ऐसे गरसत है । रदनसों बोलै रदबदन बिकासैकौन नदन

की गौन रौन सूधो सरसतहै। लागी जऊभांपैं मची भरकी भरापैं तऊ सेवकजू कांपैं न दुराव दरसतहै। दृढ बरसाला फोरि सालहू दुशाला फोरि सकल मशाला फोरि पाला बरसत है १६ शीशाके महलबीच कहल हिमाचलकी पहल तुलाई बर्फ चहल कसाला में। चन्दनसा लागत कुरंग सार अंगनमें अगिन अंगीठी जिमि बारीहौज सालामें। लागत गलीचा ऊन शीतल सिवारतूल दीपक नक्षत्रसे गनेश रतिथालामें। बाला उरबीच शीत मालासी जुड़ात जात पालासम लागत दुशालाशीतकाला में १७ भानुशीतभानुकी समान लघुमानभयो बारी बरशानसा कृशानहूकी साला में। दीपगन बारनभयोहै पौन बारनके सेवकसितारन सुतारनकी मालामें। माच्योफूल फूल ह्वै अतूल तूलहू को तूल तैसा सबतूल भो गलीचन के जालामें। मद तमशाला कीनबाला बिन बालाहोति पालासमलागत दुशाला शीतकाला में १८ पौन प्रविशौन परे परदे दियेहैं पट आतशी अवास आसपासके भरेरहैं। दिपैं दीप भुंडन दिवालन दिवालगीर फरसी फनूस चहूंरोशनधरेरहैं। अगरकी धूप सेज अम्बर अतरहूप सेवक मशाले मौज मनके करे रहैं। डपटे मनोज तेऊ भपटे शिशिर शीत छपटे दुशालनमें लपटेपरेरहैं १९ शिशिर तुखारके बुखार से उखारत है पूसबीते होत सुने हाथ पांवठारिके। द्यौसकी छोटाईको बड़ाई बरणी न जाइ सेनापति गाई कछु शोचिके छमिरिके। शीतते सहस

करसहस चरन ह्वैके ऐसेजात भाजि तमआवतुहै घिरि के। जौलौं कोक कोकी को मिलत तौलौं होत रात कोक अधबीचहिते आवतुहै फिरिकै २० देतहै नकल एकोपल एहो रघुनाथ पौन पछिवाँहीं बहै अङ्गन छिलतसो। पानीकी कहानी सोतो जाति न बखानीकछू नेक परसत पानि पाय पघिलत सो। कैसेके हिमन्त अन्त शिशिरको ह्वै है पल परके टरत पेट पीठि सों मिलत सो। जबसों उयो है आज तबसों है देखिसखी तरनिको तेज शीत आवत गिलत सो २१ शिशिर में शशिको स्वरूप पावै सबिताहू घामहूं में चाँदनी की द्युति दमकति है। सेनापति होत शीत लता है सहस गुनी रजनीकी झाँईं बासरमें झमकतिहै। चाहत चकोर सूर ओर दृगछोर करि चकवा की छाती तजि धीर धसकति है। चन्दके भरमहोत मोदहै कुमोदिनि को शशि शङ्क पङ्कजनी फूलिना सकति है २२ आयो हिमदल हिमभूधर ते सेनापति अङ्ग अङ्ग जगथिर जङ्गम ठिरतहै। पैयेना बताई भाजि गई है तताई शीत आयो आतताई क्षिति अम्बर घिरतहै। करतहै त्यारी भय करिके उज्यारीहीको घाम बारबार बैरीबैर मुसिरतहै। उत्तरते भाजि सूर शशिको स्वरूपकरि दक्षिण के छोर छिन आधक फिरतहै २३ थिरचर सकलप्रबल भयभीत ह्वैकै जगत जुराफा सम गति दरसतहै। ठौर ठौर बरषा ज्यों बरषै बरफपुंज आलय हिमालय के चहूंघा सरसतहै। उदित प्रभाकर की मुदित मयूषैं

पुर पुहुमी पियप्रधर कैसो परसतहै। शोचित सरोजन को पोचित बदनपेखि रोचित कुमोदिनिके मोद बरसतहै २४ अब आयो माह प्यारो लागतहै नाहिंरवि करतन दाह जैसो अवरेखियतुहै। जानिये न जातबात कहत बिलात दिन छरासो न तातै तनको बिशेखियतु है। कलप सोरात सोतो सोयेना सिरातकेहूं सोइसोइ जागे पैन प्रात पेखियतु है। सेनापति मेरे जान दिनहूं ते रातभई दिन मेरे जान सपनेमें देखियतु है २५ गिल गिलो गिलमैं गलीचाहैं गुनीजनहैं चाँदनी हैं चिकैंहैं चिरागनकी मालाहैं। कहै पदमाकर त्यों गजकगिजा हैं सजी सेजहैं सुराहीहैं सुराहैं अरु प्यालाहैं। शिशिर के पालाको न ब्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित मशालाहैं। तान तुकतालाहैं बिनोद के रसालाहैं सुबालाहैं दुशालाहैं बिशाला चित्रशालाहैं २६ सोनेकी अँगीठिनमें अगिन अधूम होय होय धूमधारहू तो मृगमद आलाको। पौनको न गौन होय भरक्यो सुभौन होय मेवनके खौनहोय डिबियाँ मसालाको। ग्वाल कवि कहैहूर परोसो सुरङ्गवारी नाचतीं उमङ्ग सों तरङ्गतान तालाकी। बाला की बहार औ दुशाला की बहार आई पालाकी बहारमें बहार बड़ी प्याला की २७ बरु अति रुचिर बिचित्र चित्रशाला बीच आनँद बिशाला सों दुशाला लहै लैसहू। दीपन की बस्तु जे उदीपन की दिव्य दिव्य लीजिये मँगायकै सजाय सेज सैसहू। कहै श्यामसुन्दर सुजान सुनोशोच

तऊ फीकेहि लगैंगे फागफरस मुकेसहू। उरज कसीसी बाल ताकी रति सीसी बिना शिशिर के शीत को न सीसी मिटै कैसहू २८ झर झर झांपे बड़े दरदर ढाँपे तऊ थरथर कांपे मुख बाजत बतीसी जात। फेरपस-मीनन के चौहरे गलीचा तापै सेज मखमली बिछी सोऊ सरदीसी जात। ग्वालकबितैसे मृगमदसों धुकाये भौन ओढ़ि ओढ़ि छारभार आगिहू छपीसी जात। छाके सुरासीसी तौलौं सीसीना मिटैगी जौलौं उरउक सीसी छाती छातीसों न मीसीजात २९ जायो कन्य-काकोधायो आयोहै हिमालयते संगमें सहाईलैसुरभि भयकारीके। कहै सिवराम याकेपाये हैं सुतीनोंलोक ओक ओक आपनो प्रतापजोरजारीके। तेलतूलतपन सुऊन हून जेरकीने येई दोऊ बीररहे जगकी जिवारी के। सुन्दर सुब्रत ऊंचे आड़ेये अचल सूर जाड़ेको सु-आड़े गाढ़े ठाढ़े कुचप्यारीके ३० बेरबेर ढांकैं बड़ेडर डर झांकैंतऊ कड़कड़ दांत बाजबाज झुरिझुरि जात। नेकहोत न्यारे तोपै थरथर कांपैंप्यारे ओढ़ओढ़साल मालहूते लुरि लुरिजात। शोभन भनत भागभाग आग आगेजात लखि छारभार पुनि पुनि मुरि मुरिजात। शिशिरके शीतमें अनीत शीत मानभीत सेज में पुनीत भीत दोऊ दुरि दुरिजात ३१ खंभेदार रावटी बनाती लाल डेरनमें अगर अँगीठी करी शीत की भजाई है। कहै सिवराम पसमीनेकी बिछाइ तपै तखत के रूप सेज सरस सजाईहै। मोरछली अलकैं अनूप शीशफूल

छत्र संजितको शारकामनौबत्त बजाईहै। प्यारेकोमि-लाप प्यारी पादशाही पाईरीभिसौतिनको शालैंदई सखिन रजाईहै ३२ सुंदर सुखदपद भजुमन तजिमद संद जानि मेरोकहोशारदअनन्दको। द्विजबलदेव कहै दरदर सदनमें मदनके दूत भेजिदीन्हो पतनन्दको। दलित दुकूल द्रुमकदमकलिंदीकेहैं इन्दीवर वदन दुरावनापसन्दको। दीपति दुगुणा देश दिशि दशाहूमें देत दीरघ दराजदिल देखियत चन्दको ३३॥ सवैया॥ मल्लिका मालतीजाती जुही अरु सेवती सेनलैं जीतन आसी। माधुरी मंजुम-रीचिन बानन मारिकैं मेघन दीन्हो निकासी। चारु चकोरन चैन बढ़ाय बिकास करावत कैरव रासी। रुक्मिणीरावरी कीरति रूपसों आयोमयंक अकाश बिलासी ३४ शारदी की रजनी में प्रिया रजनीपति पास जनीनको प्यारें। सारी मरीचिन बीचिनते नव-लाके नगीचिन को दुखहारें। भाषत हैं रघुराज हमें शरदै सुख दै तऊं दोय अगारैं। जो बिरहीनन दीनन के उर वारिधि मेंबड़वानलबारैं ३५॥ कवित्त॥ बनउप-बन निरझरसर शोभासने अम्बर अवनि कलबल्ल बर-सावनी। हंसजल रंचित खचित थलबननिताशपत्ति सरित जुन्हाई सुखदायनी। अधिनाथ मालती मुकुन्द कुंद कुसुमित बास पारिजात पारिजातावलि पावनी। मन अरुभावनी रसिक रास रसरंगभावनी शरद रैनि शरदसुहावनी ३६ तालनपै तालपै तमालनपै मालनपै वृन्दावनवीथिन बहार बंशीबटपै। कहै पदमाकर अ-

खराडरास मंडलपै मंडित उमंडि महाकालिंदीकेतटपै। छितिपर छानपर छाजत छतानपर ललितलतान पर लाडिली के लटपै। आइ भले छाइ यह शरद जुन्हाइ जिहिपाइ छबि आजुहि कन्हाइ के मुकुटपै ३७॥ सवैया॥ मल्हि मल्लिका मालती जाती जुही शुचिसेवती प्राश पियासी भई। ससाधाकर की करकाती भई बरषानि किती बरषासी भई। नँदराम जू चांदनी चौकनसै चहुंओर ते भानु प्रभासी भई। अँखियान में तौ बरषासी भई बरषान किती बरषासीभई ३८ खनक चरीन कात्यों ठनक मृदंगनकी रुनुक झुनुक सुरनूपुर के जालकी। कहै पदमाकरत्यों बांसुरीकी धुनिमिलि रह्यो बँधि सरस सनाको एक तालको। देखतै बनत पैन कहत बनैरीकछु बिबिध बिलासयों हुलास इहि ख्यालको। चंदछबिरास चांदनीकोपरगास राधिका को मंदहास रास मराडल गोपालको ३९ शरद रयन अरु निर्मल प्रकास जानि कान्ह यमुनाकेतट बांसुरी बजाईहै। राग रागिनी छतीसों ताहिमें प्रवेश करि तालको बँधान सुर तीनलोक छाई है। सोहेशश्री गरोश बिधि लोकपाल सब षोडश सहस गोपी सुनि उठिधाईहै। पायके कन्हाई जीने रहस मचाय मित यामिनी बढ़ाई षटमास को बिताई है ४० अकल अरीलमाते मंजुलमलिन्दजल अमलअमन्द चन्दपूरगा कदनहै। अधर अनोखे अरुणारबिंधु जाधकसे चांदनी से हासत्यों सितारेसे रदन है। खंजनसे मासे मन रंजन

चकोर से अञ्जत बनै न नैन सुखमा सदन है। शरद मरालीसी मृनालीसी मिलीसी आली कैसो जगमोहन सोहावन बदनहै ४१ दमकि गईरी देह दौरिकै दुरावै काहि जारती जुरासी ज्वाल जालिम जुन्हैयाकी। शीतल सरोजनकी पांखुरी बिछाईसेज लागती अंगारसी अनोखी अँगनैयाकी। तीर कैसी तीषणा समीर सरिताकेबीर बीतिहै न योंहींनिशा शरद समैयाकी। फांसुरी गरेकी बाजी बांसुरी बिसासी कैसी बिषकी भरीसी जगमोहन कन्हैया की ४२ रासको बिलास मृदुहासकी सुरति जबऐहै तब मोहनसों क्यों न मन उचाटिहै। चांदनी शरदकी बढ़ाइहै दरददेह सुधिकी करद लगे क्यों न उर फाटिहै। बैठि बनबेली बीच मेली भुजलतताहि श्यामकराठहेली कहि सेली किमि ठाटिहै। धारि जब मालाको बिसारि नन्दलालऊधौ बाला मृगछाला ओढ़ि कैसे दिनकाटिहै ४३॥

इतिश्रीषटऋतुकाव्यसंग्रहसम्पूर्णम्॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
सितम्बर सन् १८८६ ई०॥

———*———